शहीद सुखदेव
नौघरा से फाँसी तक

शहीद सुखदेव

नौघरा से फाँसी तक

यह पुस्तक राहुल फ़ाउण्डेशन द्वारा प्रकाशित की गई है व प्रगतिशील साहित्य के वितरक जनचेतना द्वारा कम से कम दामों में जनता तक पहुँचाई जा रही है। अगर आप पीडीएफ की बजाय प्रिण्ट कॉपी से पढ़ना चाहते हैं तो जनचेतना से खरीद सकते हैं।

ऑनलाइन लिंक : http://janchetnabooks.org/product/shaheed-sukhdev-naughra-se-fansi-tak/

जनचेतना द्वारा वितरित किया जा रहा अन्य प्रगतिशील, मानवतावादी साहित्य दिये गये अमेजन लिंक से खरीद सकते हैं।

अमेजन लिंक : https://goo.gl/bxmZR5

जनचेतना सम्पर्क : D-68, Niralanagar, Lucknow-226020
0522-4108495; 09721481546
janchetna.books@gmail.com
Website - http://janchetnabooks.org

इस पीडीएफ फाइल के अंत में जनचेतना द्वारा वितरित किये जा रहे प्रगतिशील, मानवतावादी व क्रान्तिकारी साहित्य की सूची भी दी गयी है।

हर दिन प्रगतिशील, मानवतावादी साहित्य पाने के लिए

- प्रगतिशील कविताएं, कहानियां, उपन्यास, गीत-संगीत
- देश के महान क्रान्तिकारियों भगतसिंह, राहुल सांकृत्यायन, गणेश शंकर विद्यार्थी आदि का साहित्य
- देश-दुनिया की हर महत्वपूर्ण घटना पर मजदूर वर्गीय दृष्टिकोण से लेख
- हर रविवार किसी महत्वपूर्ण पुस्तक की पीडीएफ

मजदूर बिगुल व्हाटसएप्प चैनल से जुड़ने के लिए इस लिंक का इस्तेमाल करें

www.mazdoorbigul.net/whatsapp

जुड़ने में समस्या आने पर अपना नाम और जिला लिखकर इस नम्बर पर भेज दें – 8828320322

फेसबुक पेज : fb.com/unitingworkingclass

टेलीग्राम चैनल : www.t.me/mazdoorbigul

शहीद सुखदेव
नौघरा से फाँसी तक

शहीद सुखदेव
नौघरा से फाँसी तक

सम्पादक
डॉ. हरदीप सिंह

राहुल फाउण्डेशन
लखनऊ

ISBN: 978-81-87728-81-8

मूल्य : रु. 40.00

पहला संस्करण : जनवरी 2006
दूसरा पुनर्मुद्रण : जनवरी 2017

प्रकाशक : राहुल फाउण्डेशन
69 ए-1, बाबा का पुरवा, पेपरमिल रोड, निशातगंज, लखनऊ-226 006
आवरण : रामबाबू

टाइपसेटिंग : कम्प्यूटर प्रभाग, राहुल फाउण्डेशन

मुद्रक : लक्ष्मी ऑफसेट प्रेस, इन्दिरानगर, लखनऊ

अनुक्रम

1. शहीद सुखदेव का परिवार 9
2. 'मेरे भाई शहीद सुखदेव' से 10
3. सुखदेव की यादें/शिववर्मा 39
4. शहीद सुखदेव के क्रान्तिकारी जीवन का संक्षिप्त परिचय 54
5. सुखदेव के खत
   (i) तायाजी के नाम पत्र 60
   (ii) सुखदेव का अधूरा पत्र 62
   (iii) आवाज दबाना दुखदायी है! 66
   (iv) क्रान्तिकारी दोस्तों के नाम पत्र 68
   (i) गांधीजी के नाम खुली चिट्ठी 70
   (vi) पंजाब के गर्वनर के नाम पत्र 73

भूमिका

यह तो माना जा सकता है कि दूर-दराज पहाड़ों में, जहाँ पर इन्सानी कदम कम ही पहुँचे हों, किन्हीं अनजान लोगों द्वारा निर्मित अजन्ता-एलोरा की गुफाएँ, इतिहास के पन्नों से गुम हो सकती हैं, और उन्हें फिर से ढूँढ़े जाने पर भारतवासी गर्व महसूस करें और भारतीय सरकारें उनको सँभालने की जिम्मेदारी अपने सिर पर लेकर खुशी महसूस करें। पर बहुत परेशान करने वाली बात यह है कि भारत की आजादी के लिए कुर्बान हुए, भारतीय नायक भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव के ऐतिहासिक स्थान ही लोगों से आधी सदी तक छुपे रहे - वह भी घनी अबादियों में, और ढूँढ़े जाने पर भी सत्ताधारी लोग साजिश भरी चुप्पी साध लें। ऐसी ही दास्तां है, सुखदेव की जन्मस्थली मुहल्ला नौघरा, लुधियाना की।

यह ऐतिहासिक स्थान 1998 तक भारतवासियों की नजर से छुपा रहा। पंजाब के लुधियाना शहर के बीच, सुखदेव के छोटे भाई मथरादास थापर अपने भाई के बारे में बताने के लिए इस मुहल्ले में जीवन भर आते रहे, लोगों को बताते रहे, देश की सरकार चलाने वालों को भी बताते रहे, पर उनकी सारी कोशिशों का कोई असर न हुआ। सुखदेव के बाकी परिजन, उनके ताया लाला चिन्तराम के परिवार वाले भी लोगों को बताते रहते। फिर पता चलने पर जब पंजाब के क्रान्तिकारी संगठनों से जुड़े कुछ लोग उस जन्मस्थली वाले घर को ढूँढ़ने निकले, तो मुहल्ले वालों से रास्ता पूछने पर उन्हें यही जवाब मिला-कौन सा सुखदेव? आगे रहता होगा। क्या काम करता है? आदि। उनकी जन्मस्थली पर पहुँचकर, सब खस्ता हालत देखकर, आजाद भारत की चमचमाती तरक्की पर मानो प्रश्नचिह्न लग गया, कि जिन लोगों की बलिदान की नींव पर यह सब टिका है उन्हीं के ऐतिहासिक स्थानों का ऐसा हाल है!

उसके बाद देशभक्त इन्कलाबी सोच को समर्पित लोग मिलकर हर साल सुखदेव का जन्मदिवस मनाने लगे। शहीद सुखदेव यादगारी कमेटी लुधियाना का गठन किया गया जिसका उद्देश्य जन्म-स्थली को सँभालना और शहीद सुखदेव के जीवन के बारे में लोगों के बीच प्रचार करना था। यादगारी कमेटी की ओर से 22 मार्च 2004 तक बिना किसी सरकारी सहायता के उस स्थान को सुखदेव के स्मारक में बदलकर देशवासियों को समर्पित कर दिया गया। इस काम में इण्डियन वर्कर्स एसोसिएशन,

लन्दन (ग्रेट ब्रिटेन) के साथी सुरिन्दर का और अन्य साथियों का पूरा योगदान रहा। कमेटी की तरफ से मथरादास थापर द्वारा लिखी किताब पंजाबी में निकाली गयी। उसी जीवनी का यह हिन्दी अनुवाद आपके हाथों में है जिसे पंजाब के बाहर सारे देशवासियों तक पहुँचाने के लिए राहुल फाउण्डेशन ने प्रकाशित किया है।

बात यहीं तक ही खत्म नहीं होती। सुखदेव के संग्रामी जीवन व जन्मस्थान के बारे में जानने की जब बात होती है तो आजाद भारत में भी कौन सी ताकतें हैं जो उनका नामोनिशान छुपा कर रखना चाहती हैं? अगर अंग्रेज हुकूमत भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फाँसी के बाद उनकी लाशों को जलाकर देशवासियों से छुपाना चाहती थी, तो आजाद भारत में भी कौन सी शक्तियाँ हैं जो इन महान शहीदों की याद से भयाक्रान्त हैं? दरअसल अंग्रेजी हुक्मरानों से आजादी के बाद जो पूँजीवादी ताकतें देश की राज्यसत्ता पर काबिज हुईं, वह इन शहीदों की हर याद को मिटा देना चाहती हैं, क्योंकि उनके विचार इस देश के मेहनतकश आवाम को 1947 के बाद आयी नयी गुलामी, शोषण और अन्याय से मुक्ति की राह दिखाते हैं। इसलिए आज यह जरूरी है कि उन महान शहीदों की यादगारों को सँभालने के साथ-साथ, उनके विचारों का भी व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाये। और ऐसा ही एक छोटा सा प्रयास है यह किताब।

1 मई, 2006

- डॉ. हरदीप सिंह
संयोजक, शहीद सुखदेव यादगारी कमेटी
लुधियाना (पंजाब)

सुखदेव के भाई मथरादास थापर

सुखदेव लगभग तीन वर्ष के थे, जब 1941 में उनकी माँ रली देवी ने मथरादास को जन्म दिया। मथरादास थापर की लाहौर में पढ़ाई के समय, सुखदेव ने उन्हें अपने कमरे में ही रखा, जो शहीद भगतसिंह, चन्द्रशेखर आजाद और भगवतीचरण वोहरा जैसे इन्कलाबी कार्यकर्त्ताओं का अड्डा था। इन्कलाबियों की गतिविधियों को पास से देखने का अवसर इन्हें प्राप्त हुआ।

पढ़ाई के बाद, पंजाब सरकार के सैनेटरी विभाग में इन्हें इन्जीनियर की नौकरी मिली। घर की जिम्मेवारियों को सँभालते हुए भी वह सुखदेव की क्रान्तिकारी गतिविधियों में साथी रहे, और आर्थिक पक्ष से हमेशा उनकी सहायता के लिए तैयार रहे। 15 अप्रैल 1929 में सुखदेव के गिरफ्तार होते ही, पुलिस मथरादास और उनके परिवार के पीछे हाथ धोकर पड़ गयी। इन्हें अपनी नौकरी से हाथ धोना पड़ा और सम्मिलित परिवार की आय का स्रोत, लायलपुर की आटा मिल के व्यवसाय को अंग्रेज हुकूमत ने बर्बाद कर, इन्हें बेदखल कर दिया। 2 मार्च 1930 में हुए बम धमाकों के सिलसिले में इन्हें भी जेल जाना पडा।

लाहौर जेल में भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु आदि की कैद के समय, इन्हें कई बार उनसे मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उन तीनों की फाँसी के बाद भी पुलिस मथरादास और उनके परिवार को परेशान करती रही। फिर वह सहारनपुर और हापुड़ में इन्जीनियर की प्राइवेट नौकरी करते रहे। जिन भी कारखानों में उन्होंने काम किया, पुलिस वहाँ भी परेशान करने पहुँच जाती। 1947 के बाद उनके संघर्ष का नया सिलसिला शुरू हुआ। यह था, क्रान्तिकारियों की धरोहर के ऐतिहासिक महत्त्व को समझते हुए, लोगों के सामने उनका महत्त्व स्पष्ट करना। यह काम उन्होंने लेखन और प्रकाशन कार्य द्वारा किया। सरकार और लोगों की क्रान्तिकारियों के प्रति बेरुखी उन्हें हमेशा खटकती थी। 'नौघरा' लुधियाना में, शहीद सुखदेव के जन्मस्थान को ऐतिहासिक महत्त्व दिलाने के लिए संघर्ष करते हुए वह 1999 में संसार को अलविदा कह गये।

सुखदेव का बचपन

सुखदेव का बचपन बहुत सामान्य ढंग से गुजरा। वह औसत दर्जे के बच्चे की तरह ही थे। घर से बाहर खेल-कूद के लिए नहीं जाते थे। पास-पड़ोस के बच्चे ही उनके पास चले आते। घर में काफी बच्चे थे, जिनके बीच वह छोटी-मोटी शरारतों में जुटे रहते। पढ़ने में उनकी रुचि अधिक थी। स्कूल के अलावा घर में भी पढ़ते। सैर-सपाटे का उन्हें बहुत शौक था, परन्तु वह अकेले ही घूमते। यार-दोस्तों की संगत में वह नहीं रहे।

माताजी रलीदेवी घर के सभी बच्चों को बैठाकर राष्ट्रप्रेम और देशभक्ति की कहानियाँ सुनाया करती थीं। उन्होंने अनेक महापुरुषों की जीवन-गाथाएँ भी सुनायीं। सुखदेव बड़े मनोयोग से यह सब सुना करते थे। इससे उन्हें बड़ी प्रेरणा मिलती। बचपन से ही वह सोचने लगे कि बड़ा होकर वीर, साहसी और देशभक्त बनूँगा।

लाला चिन्तराम थापर की बड़ी लड़की गौरादेवी का जन्म सन 1900 ई. में हुआ था। वह सुखदेव से सात वर्ष बड़ी थीं। गौरादेवी को सुखदेव की माता ने ही पाला-पोसा था। इसी कारण वह सुखदेव को अपना चचेरा भाई न मानकर सगे भाई से भी अधिक समझती थीं। सुखदेव को उन्होंने गोदी में खिलाया था और बहुत प्यार दिया था। घर में कोई सुखदेव को डाँट-फटकार देता, तो उन्हें बड़ा दुख होता। वह रो पड़तीं और घण्टों सिसकती रहतीं। वह चाहती थीं कि सुखदेव को कोई कुछ न कहे। यदि शरारत भी करें, तो उन्हें सजा न दी जाये। भले ही स्वयं गौरादेवी को बुरा-भला कह लिया जाये। वह सारा-सारा दिन सुखदेव को गोदी में लटकाये फिरती थीं।

गौरादेवी के अनुसार, "छुटपन में सुखदेव बहुत जिद्दी और चिड़चिड़े थे। रोते भी बहुत थे। इसलिए उन्हें पोस्त का डोडा दिया जाता। आम तौर से उन दिनों इस किस्म के बच्चों को उनकी माताएँ अफीम देकर अपने काम-काज में लग जाया करती थीं। इससे बच्चे परेशान नहीं करते थे और औरतों को गृहस्थी देखने का पूरा मौका मिल जाता था।"

हमारे घर में एक मुसलमान दाई का बहुत आना-जाना था। सभी बच्चों का जन्म उसी ने कराया था। बच्चों को नहलाना, मालिश करना और जच्चाओं की सेवा करना ही उसका काम था। एक थी रहीमन तेलन। माताजी उसे बहुत चाहती थीं। बहुत-सा घरेलू काम-काज उसी से करा लिया करती थीं। ये दोनों औरतें पड़ोस में ही रहा करती थीं।

सुखदेव के मन में भी तथाकथित छोटे लोगों के प्रति कोई घृणा या दुर्भावना नहीं थी। वह उनका कोई भी काम करने के लिए सदैव तत्पर रहते थे। रहीमन तेलन से उन्हें कुछ अधिक ही सहानुभूति थी। माताजी सुखदेव को स्कूल जाते समय खाने के लिए रोटी-मट्ठा देकर खिड़की से आवाज लगातीं, "अरी, रहीमन! दही-मट्ठा तैयार है। आकर ले जा।"

सुखदेव इस पर कहते, "रहीमन चाची ऊपर चढ़कर आयेंगी। उन्हें क्यों तकलीफ देती हो? मुझे लोटा दे दो। मैं पकड़ा आऊँगा।"

सुखदेव गुस्सा बहुत करते थे। अपनी बात पर अड़ जाते तो कभी पीछे न हटते। ऐसे ही एक बार किसी बात पर नाराज होकर घर से निकल गये। गली की नुक्कड़ पर एक भड़भूजन बैठी थी। उसी के पास जा बैठे और उसी के काम में हाथ बँटाते रहे। भड़भूजन ने उन्हें दाने खिलाये। पानी पिलाया। दिन-भर काम करके भड़भूजन अपने घर चली गयी। सुखदेव वहीं दुबककर बैठे रहे। धुएँ और धूल ने कपड़े, बाल और चेहरे की रंगत बिगाड़ दी। भाड़ की गर्मी के बावजूद वह जाड़े में ठिठुरते रहे। अँधेरा हो गया; पर घर नहीं लौटे। तब उनकी ढूँढ़ मची और उन्हें खोजकर लाया गया।

बचपन की शरारत का एक किस्सा जयदेव भी बताते हैं। अपने दायें पाँव की कटी उँगली देखकर उन्हें प्रायः सुखदेव की याद ताजा हो उठती है। उन दिनों लायलपुर की आर्यसमाज वाली गली में हमारा नया मकान बन रहा था। जयदेव और सुखदेव उसे देखने जा रहे थे। रास्ते में हँसी-ठट्ठा चल ही रहा था। दोनों चिन्योट बाजार से गुजर रहे थे कि सुखदेव ने एक घोड़े को खड़ा देखा। उन्हें तुरन्त एक शरारत सूझी। जैसे ही करीब पहुँचे, जयदेव को घोड़े की तरफ धकेल दिया। घोड़ा घबराकर उछला और जयदेव का पैर कुचल दिया। उनकी उँगली कट गयी। उस घटना के बाद सुखदेव डर के मारे सारी रात कम्पनी बाग के एक पेड़ पर चढ़कर छिपे रहे।

सुखदेव के बचपन की ऐसी अनेक छोटी-बड़ी घटनाएँ हैं। उनमें से कुछ ऐसी हैं, जो उनके व्यक्तित्व के विकास में हिस्सेदार रहीं। उन्हीं का मैं यहाँ वर्णन कर रहा हूँ।

झाँसी की रानी की तस्वीर

दीवाली पर हम सभी बच्चों को पैसा मिला करते। हम आतिशबाजी और मिठाइयाँ वगैरह खरीदते। बाजार से तरह-तरह की तस्वीरें भी ले आते। सभी देवी-देवताओं और

महापुरुषों की तस्वीरें लेते; परन्तु सुखदेव को सिर्फ झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई की ही तस्वीर पसन्द थी। उसके लिए वह सारा बाजार छान डालते। नहीं मिलती तो कोई दूसरी लेते ही नहीं। खाली हाथ लौट आते। रोज-रोज बाजार में जाकर पूछते और जिस दिन भी मिल जाती, खरीद लेते। तस्वीर पाकर उनकी छाती तन जाती। चेहरा एक अनजाने दर्प से चमकने लगता। झाँसी की रानी उनके लिए देशभक्ति, साहस और शक्ति की प्रतीक थीं।

माँ को तस्वीर दिखाकर वह उत्साह से कहते, "माँ, देख यह लक्ष्मीबाई है। झाँसी की रानी। इसने अंग्रेजों से लोहा लिया था। कितनी बहादुर है यह! पीठ पर बच्चा बँधा है। एक हाथ में घोड़े की लगाम और दूसरे में तलवार!"

माँ काम में उलझी होतीं, तो प्यार से उन्हें झिड़ककर कह देतीं, "चल ओए! काम करने दे।"

सुखदेव का चेहरा कुछ सख्त हो जाता। आँखों में सुर्खी आ जाती और दृढ़ता से कहते, "मैं भी ऐसा ही बनूँगा माँ!"

साहसी सुखदेव

माँजी एक घटना और सुनाया करती थीं। कारखाना बाजार से बाहर गवर्नमेण्ट प्राइमरी स्कूल के पास एक कुआँ था। वहीं पर बच्चों के लिए खेल का एक मैदान था। रोज सुबह-शाम उसमें बच्चे खेला करते थे। सुखदेव को खेलों में रुचि नहीं थी। इसलिए चुपचाप एक ओर बैठकर देखते रहते। एक रोज खेलते-खेलते एक बच्चा कुएँ में जा गिरा। बच्चों ने कुआँ घेर लिया। सबमें डर और घबराहट थी। सुखदेव एकदम उछल पड़े और दौड़ते हुए घर पहुँचे। फूली हुई साँस के साथ बोले, "माँ-माँ, एक रस्सा दे।"

माँ ने चौंककर पूछा, "क्या करोगे?"

"कुएँ में एक बच्चा गिर गया है। उसे निकालूँगा।" सुखदेव ने बेचैनी से कहा।

"तुम तो अभी बहुत छोटे हो। कैसे निकालोगे?" माँ ने झिड़कते हुए उन्हें समझाया।

पर सुखदेव नहीं माने। तब माँ ने पं. शिवरामदास के साथ रस्सा देकर भेजा। सुखदेव की सूझ-बूझ से बच्चे की जान बच गयी। घर-बाहर सब जगह उनकी प्रशंसा हुई। स्कूल के हेडमास्टर भी उनके साहस से प्रभावित हुए और समय-समय पर बच्चों को उनका उदाहरण देने लगे।

हरिजन शिक्षा

सुखदेव सनातन धर्म स्कूल के विद्यार्थी थे, तभी उन्हें पता चला कि गवर्नमेण्ट और

धार्मिक स्कूलों में हरिजन बच्चों को प्रवेश नहीं दिया जाता था। सुखदेव को भेद-भाव की इस नीति पर बड़ा अचरज हुआ। उनकी दृष्टि में ऊँच-नीच का कोई स्थान नहीं था। घर में लालाजी के पास आर्यसमाजी आया करते थे। उनके बीच भी इस समस्या पर विचार होता, पर कोई समाधान नहीं मिल पाता। सुखदेव ने वक्त का इन्तजार नहीं किया और न ही किसी से सहायता ली। स्लेट, बत्ती, वर्णमाला और पहाड़ा लेकर लायलपुर के पास ही हरचरणसिंहपुरा गाँव पहुँच गये और हरिजन मोहल्लों में शिक्षा का कार्य शुरू कर दिया। उनका जेब-खर्च हरिजन शिक्षा की भेंट चढ़ने लगा। बाद में गाँव के जमींदार सरदार हरचरणसिंह ने उनकी लगन देखकर बड़ी सहायता की। यह सब काफी समय चलता रहा।

कश्मीर की घाटी में

सुखदेव लालाजी के साथ कश्मीर गये हुए थे। बड़ा सुहाना मौसम था और दोनों बाजार में घूम रहे थे। तभी एक रिक्शा तेजी से उधर आया। उसमें एक गोरी मेम और उनके साहब थे। गोद में एक छोटा-सा बच्चा भी था। रिक्शा खींचने वाला हाँफ रहा था, और पसीना-पसीना हो रहा था, फिर भी वह काफी सावधानी से खींच रहा था। अचानक पता नहीं कैसे, एक झटका लगा। गोरी मेम की गोद से उछलकर बच्चा दूर जा गिरा। रिक्शा वाले के चेहरे पर भय की सफेदी पुत गयी। वह हाथ जोड़कर गिड़गिड़ाने लगा। लेकिन गोरे साहब आपे से बाहर हो चुके थे। उनके हाथ में एक छोटा-सा रूल था, जिसे वह रिक्शेवाले पर बेतहाशा बरसाने लगे। सुखदेव से उसका चीखना-बिलबिलाना नहीं देखा गया। आवेश में उन्होंने लालाजी का हाथ जोर से भींच दिया और क्रोध से थरथराने लगे। लालाजी समझ गये कि यदि सुखदेव को काबू में नहीं रखा, तो वह गोरे साहब से उलझ पड़ेंगे। अतः उन्होंने उनका हाथ कसकर पकड़ लिया। लौटते समय सारे रास्ते वह लालाजी से पूछते रहे कि "उन्होंने अंग्रेज को रोका क्यों नहीं?" घर आकर उन्होंने ताई विद्यावती को बताया और तैश में आकर बोले, "मैं लालाजी के बराबर होता, तो उस अंग्रेज के बच्चे को कच्चा चबा डालता।"

सलामी से इनकार

15 अप्रैल, 1919 को सारे पंजाब में मार्शल लॉ लागू कर दिया गया था। लालाजी नजरबन्द हो गये थे। अमृतसर के जालियाँवाला बाग में निहत्थी जनता को जनरल डायर ने गोलियाँ चलाकर भून डाला था। इससे जनता में गम और गुस्सा फैल गया। सारे पंजाब में हिंसक घटनाएँ होने लगीं, जिससे डरकर अंग्रेज सरकार ने मार्शल लॉ लागू किया था। उन दिनों सारे शहर में मिलिट्री की हुकूमत थी। सड़कों, गली-कूचों में

हथियारबन्द अंग्रेज फौजी जवान घूमते थे। सभी दफ्तरों और स्कूलों में मिलिट्री के आफिसर तैनात कर दिये गये थे। सनातन धर्म स्कूल में भी एक अंग्रेज फौजी अफसर तैनात हुआ। उसने हुक्म दिया कि एक निश्चित समय पर परेड होगी और अफसर सलामी लेगा। पहले ही दिन की परेड में हंगामा मच गया। सुखदेव वहाँ मौजूद थे, पर उन्होंने अफसर को सलामी नहीं दी। इस पर वह बौखला गया और अपना रूल सुखदेव पर बरसा दिया, परन्तु वह तने हुए खड़े रहे। मार के आगे भी नहीं झुके। अफसर ने हेडमास्टर एवं अन्य मास्टरों को बुरी तरह फटकारा और चेतावनी दी कि आइन्दा ऐसा न होने पाये। घर आकर सुखदेव ने माँ को बताया और सिंह की तरह गरजते हुए बोले, "मैं अंग्रेज को हरगिज सलामी नहीं दूँगा! चाहे मुझे स्कूल ही क्यों न छोड़ना पड़े!" और हुआ भी यही। जब तक यह काला कानून रहा, सुखदेव स्कूल नहीं गये।

मानव-सेवा

हमारे घर के पास ही लाला पंजाबराय रहते थे। उनका एकमात्र पुत्र धनपतराय था, जिसने प्रथम श्रेणी में एम. ए. पास किया था, किन्तु दुर्भाग्यवश उसे चेचक निकली और आँखों की रोशनी जाती रही। लाला पंजाबराय चिन्तित हो उठे। उनकी समझ में नहीं आता था कि उनके पुत्र का लम्बा जीवन कैसे कटेगा! पुत्र की निराशाजनक बातें सुनकर उनका कलेजा फटने लगता। एक दिन सुखदेव लालाजी के साथ बाजार से आ रहे थे, तभी लाला पंजाबराय ने अपनी विपदा सुनायी। सुखदेव भी सुन रहे थे। अन्त में वह बोले, "मैं भाईजी को अकेलापन महसूस नहीं होने दूँगा।"

और सचमुच अगले दिन से स्कूल के बाद वह धनपतराय के पास जाने लगे। वहीं बैठकर पाठ याद करते, जो समझ में नहीं आता उनसे पूछते। जो काम वह बताते उसे दौड़कर कर देते। शाम को उनका हाथ पकड़कर कम्पनी बाग या नहर के किनारे टहलाने के लिए ले जाते। रास्ते में उन्हें शौर्य और साहस की कहानियाँ सुनने को मिलतीं। धीरे-धीरे सुखदेव उनके बालमित्र बनते गये। दोनों एक-दूसरे के बिना थोड़ी देर भी अलग न रह पाते। कुछ ही महीनों में मोहल्ले के दूसरे बच्चे भी पढ़ने आने लगे। लाला पंजाबराय का घर एक पाठशाला बन गया। धनपतराय की निराशा और अकेलापन दूर हो गया। वह बहुत प्रसन्न और मगन रहने लगे। उन दिनों प्राचीन कवियों की कविताओं की एक पुस्तक कोर्स में लगी हुई थी, जो धनपतराय को कण्ठस्थ थी। वह जब भी कविताओं का अर्थ बताने बैठते, सभी बच्चे मंत्रमुग्ध होकर सुनते। सचमुच सुखदेव ने एक सूरदास को नयी रोशनी दी थी और यही कारण था कि जब सुखदेव को फाँसी हुई तो सबसे अधिक धनपतराय ही रोये थे।

महामारी में सेवा

सन 1918 ई. में लायलपुर में भी महामारी फैल गयी। लोग शहर छोड़-छोड़कर भागने लगे। लालाजी अपने परिवार को बचाने के लिए हरिद्वार ले गये। वहाँ भी महामारी फैली तो पहाड़ी शहर धर्मशाला पहुँच गये। धर्मशाला चूँकि ऊँचे स्थान पर था, इसलिए वहाँ महामारी का प्रकोप नहीं था। वहाँ लाला जी के साले ला. चरनदास पुरी वकील ने एक मकान लेकर दिया, जिसमें सभी लोग रहने लगे। चाचा वलीराम नहीं गये। वह सेवा समिति में काम करने के लिए रुक गये। महामारी से किसी की मृत्यु होती तो चाचा वलीराम की सेवा समिति ही दाह-संस्कार कराती। उधर सनातन धर्म और आर्यसमाज स्कूल के 20-25 बच्चों ने भी एक सेवा समिति बनायी। उसका काम दवाइयाँ इकट्ठा करके लाना और घर-घर पहुँचाना था। सुखदेव ने भी लालाजी के साथ जाने से इनकार कर दिया और वह इस बाल समिति में काम करने लगे। माताजी को सुखदेव की वजह से रुकना पड़ा। सुखदेव या चाचा सेवा करके जब भी लौटते, माँ उन्हें ड्योढ़ी पर ही रोक देती। फिनायल का पानी टब में भरा रहता। वहीं पर दोनों स्नान करते और धुले हुए कपड़े पहनते। सुखदेव को कोई चिन्ता नहीं थी कि महामारी एक भयानक रोग है, जो हजार बचाव के बावजूद उन्हें कभी भी जकड़ नहीं सकता है। उनके मन में सेवा की प्रबल भावना थी और वह उनमें अन्त तक बनी रही।

- मथरादास थापर

सुखदेव का व्यक्तित्व

बचपन में सुखदेव जैसे सीधे-सादे, खामोश-तबियत थे, युवावस्था में वैसे नहीं रहे। वह बोलने-बतियाने में काफी आगे हो गये। वाद-विवाद में हिस्सा लेते, तो बड़े दबंग साबित होते। हँसी-दिल्लगी या शरारत करते, तो लगता जैसे वह बहुत खिलन्दड़े स्वभाव के हों। समस्याओं और विचारों पर लालाजी के साथ तर्क-वितर्क करते हुए सुनता, तो प्रतीत होता कि बड़े तीक्ष्णबुद्धि हैं।

गौरादेवी उनके बारे में बताती हैं :

"सुखदेव हमारे घर लाहौर आता तो द्वार से ही दिल्लगी करने लगता। मेरे साथ छेड़-छाड़ में उसे बड़ा मजा आता। दरवाजे पर ही कोई व्यंग्य कस देता। मैं उसे डाँटती-फटकारती, तो मुस्कराता हुआ कहता, "पहले अन्दर तो आने दो।'

"'सुखदेव! तू शादी कर ले।' उसके जीजाजी कहते।

"'भौजी को मेरे पास रखना। यहाँ बहुत जगह है।' मैं भी टुकड़ा जोड़ देती।

"वह ठठाकर हँस पड़ता, फिर गम्भीर होकर कहता, 'मुझे शादी नहीं करनी है।'

"सुखदेव मुझे गुलामों के जीवन पर पुस्तकें लाकर देता और उन्हें पढ़ने का आग्रह करता रहता।

"पता नहीं क्यों, उसे रुपये-पैसे की बहुत जरूरत रहती। जब लायलपुर आता, सबसे रुपये-पैसे माँग-बटोरकर ले जाता। जल्दी ही फिर आकर माँगने लगता। उसे माँगने में कभी शर्म महसूस न होती। वह ढेर सारे कपड़े भी ले जाता। दूसरे चक्कर में आता, तो फिर कपड़ों की फरमाइश। माँजी तंग होकर पूछतीं, तो लापरवाही से कह देता, 'मेरे दोस्तों ने पहन लिया।'

"कॉलेज के जमाने में वह हमेशा रात को लाहौर से आता और कारखाने में सोने का बहाना करके रात में ही गायब हो जाता। पिताजी (सुखदेव के तायाजी) कहते, 'यह लड़का दूसरे रास्ते गया। अब अपना नहीं रहा।'

"एक बार मेरे छोटे भाई प्रकाश के मुण्डन पर बड़ा मजा आया। मैंने सुखदेव को पकड़ लिया और बोली, 'आज तुम्हारा भी मुण्डन हो जाना चाहिये। क्या लम्बे-लम्बे बाल लिये फिरते हो। दाढ़ी भी बढ़ा रखी है।'

"सुखदेव हँसते हुए बोला, 'तुम्हारा भी तो मुण्डन हो जाना चाहिये। कितने लम्बे बाल हैं तुम्हारे!' और हँसते-हँसते चला गया।"

सुखदेव की सभी हरकतें अजीब थीं। घरवालों को रहस्य का-सा आभास होता; पर उन्हें रोकने का साहस किसी में नहीं था। कुछ-कुछ लालाजी ही समझ पा रहे थे कि सुखदेव क्रान्तिकारियों के फेर में पड़ गये हैं और उनकी अच्छी खासी टोली बनती जा रही है।

जयदेव सुखदेव के साथ पढ़ते थे और होस्टल में रहते थे। झण्डासिंह उर्फ जसवन्तसिंह भी उन्हीं के साथी थे। भगतसिंह अपनी साइकिल वहीं रखते थे और जयदेव उसे खूब चलाया करते थे। ये बातें लाहौर के शिक्षा-काल के समय की हैं।

लायलपुर में स्कूली जीवन की एक घटना का वर्णन करते हुए जयदेव ने बताया :

"सुखदेव तो बस क्लास में ही पढ़ता था। बाद में न पढ़ता। फिर भी उसे सब याद रहता; लेकिन मैं बाद में भी खूब पढ़ता, खूब मेहनत करता, पर जल्दी ही भूल जाता। मैं पढ़ने में कमजोर था। तायाजी को मेरी यह कमजोरी सदा अखरती। वह कहते रहते कि इससे तो पढ़ाई छोड़कर दुकान का काम देखो, और एक बार ऐसा ही हुआ। उन्होंने मेरी फीस नहीं भेजी। मैं बहुत निराश हुआ। कई दिन तक स्कूल नहीं गया, तब सुखदेव को पता लगा। उसने मुझसे पूछा। सुनकर वह दुखी हुआ और चुपचाप चला गया।

"एक दिन आकर वह खूब हँसा और बोला, 'गल्ले में से पैसे निकालकर मैं तुम्हारी फीस जमा कर आया हूँ। पढ़ो यार! खूब पढ़ो!' मैं फिर पढ़ने लगा और पास भी हो गया। सुखदेव मेरा इतना खयाल रखता था! शिक्षाकाल में लायलपुर से लाहौर तक वह मेरी सभी कठिनाइयों को दूर करता रहा।"

गौरादेवी बताती हैं कि सुखदेव घर में सबको एक समान समझते थे। माँजी जब भी कहतीं, "मेरा बेटा बड़ा होकर मुझे बहुत सुख देगा।" तब वह दृढ़ता से कहते, "मैं तो सबके लिए एक-सा हूँ। मेरे लिए माँ, चाची, ताई सब बराबर हैं। आप अकेले मुझसे किसी किस्म की उम्मीद मत रखना।"

गौरादेवी और जयदेव के अलावा मैंने भी भाई साहब की युवा अवस्था को करीब से देखा था। दो वर्ष तो मुझे लगातार लाहौर में उनके साथ रहने का अवसर भी मिला। वह साधारण शरीर वाले थे। छोटे-छोटे घुँघराले बाल। गोरे चेहरे पर बड़ी-बड़ी आँखें। आँखों में तैरता हुआ खोयापन। हँसते थे, तो हँसते चले जाते। गम्भीर होते, तो लगता किसी गहरी सोच में डूबे हों। कमरे पर उनके दोस्त आते। हलकी-फुलकी बातों पर हँसते-हँसाते। कोई नहीं हँसता तो खुद ही हँसते रहते। हँसते-हँसते एकदम चुप हो जाते। जैसे किसी ने हँसी की मशीन का स्विच ऑफ कर दिया हो। मैं अक्सर उन्हें

किसी गहरी सोच में डूबे हुए देखता। वह लगातार घण्टों सोचते रहते। शुरू-शुरू में तो मैं बहुत परेशान रहता। सोचता, पता नहीं भाई साहब को कौन-सा कष्ट खाये जा रहा है। धीरे-धीरे मुझे समझ में आ गया कि उनका स्वभाव ही ऐसा है।

सामाजिक कुप्रथाओं, आडम्बरों, अन्धविश्वासों और सड़ी-गली राजनीतिक विचारधाराओं से वह नफरत करते थे। साथियों से बहस करते हुए उन्हें सुनता, तो मेरी रगों में खून का दौरा तेज हो जाता। मेरा जी करता कि जाकर भाई साहब की पीठ ठोक दूँ, पर मैं शिष्टाचारवश उनके बीच जाता नहीं था। मैं छोटा जो था।

यार-दोस्त और कॉलेज के सहपाठियों की एक-दूसरे के घर आने-जाने, हँसी-दिल्लगी और बहस-मुबाहिसा करने की एक लम्बी परम्परा रही है। शाह आलमी दरवाजे के अन्दर हमारे मकान पर भी यह सिलसिला चल रहा था। जोर-शोर से बातें या हँसी-मजाक होता, तो मेरा उस ओर ध्यान ही नहीं जाता ; पर जैसे ही उनमें कुछ खुसर-पुसर होती, तो जिज्ञासा बढ़ती। एक-दो बार उधर कान लगाने की कोशिश भी की। सुखदेव को इसका पता चला तो उन्होंने बहुत फटकारा, "पढ़ने की उम्र है तुम्हारी। खूब पढ़ा करो। फालतू बातों पर ध्यान मत दिया करो।"

मेरे साथ उनका व्यवहार बड़ा मृदुल और सहयोगपूर्ण था। वह सदैव मेरा खयाल रखते। कभी-कभी मेरे साथ छेड़-छाड़ भी कर लेते, पर मैं कभी उनके सामने खुला नहीं। वह मजाक करते, तो भी मैं गम्भीर रहता। उनके व्यक्तित्व की एक ऐसी छाप मुझ पर पड़ी कि मैं हँसी के समय भी उन्हें गुरुभावना से देखता, कम बोलता, उनकी बातों को चुपचाप सुन लेता, कोई काम बतायें तो दौड़कर करता, उनकी और उनके दोस्तों की बहुत इज्जत करता-यही मेरा व्यवहार था।

अपने दोस्तों का वह बहुत खयाल रखते थे। उनकी छोटी-छोटी तकलीफों से चिन्तित हो उठते और भरसक उनकी सहायता का प्रयास करते। कई दिन तक कभी कोई साथी न आता, तो उसके बारे में पूछताछ करते। स्वयं जाकर उसकी खैर-खबर लेते। मैंने प्रायः देखा कि दोस्त उनके कपड़े पहन जाते और लौटाते नहीं। वह साधारण कपड़ों में ही अपना काम चला लेते। उन्हें भड़कीली पोशाकें पहनने का कभी शौक नहीं रहा। वह कमीज के साथ कभी धोती, कभी पाजामा पहना करते थे। टोपी उन्होंने कभी नहीं पहनी, कड़ाके की सर्दियों में भी नहीं।

दोस्तों के साथ मालिश करने-कराने का रोज का ही क्रम था। डण्ड-बैठक और लम्बी दौड़ उन्हें प्रिय थी। वह कुश्ती में भी हिस्सा लेते थे। एक बार तो लाहौर में कुश्ती लड़ते हुए उनका कंधा भी उतर गया था। लायलपुर में वह मुगदर भी घुमाया करते थे। झण्डासिंह के साथ सैर करने निकलते थे। उन्हें खुशबुओं के प्रति बेहद लगाव था। बेला, चमेली और गुलाब तो जैसे उनके प्राण थे। ये फूल जहाँ भी मिल जाते, साथ ले आते और अपने लेटने-सोने के स्थान पर रख देते। उन्हें लायलपुर के कुबड़े हलवाई

की पिस्ते की लाज (बर्फी) बहुत पसन्द थी। जो भी उधर से आता, ले आता। भुट्टा और गन्ना तो जैसे उनके लिए अनमोल चीजें थीं। यह सब वह बड़े गँवारू ढंग से खाते थे। इसपर उनके दोस्ते हँसते तो कहते, "भुट्टा या गन्ना खाने का असली तरीका यही है और ऐसे ही खाने में मजा आता है।" उनकी जेब में बादाम की गिरियाँ भी पड़ी रहतीं। उन्हें अपने शरीर, पोशाक, रहन-सहन के तरीके और खान-पान पर किसी का दखल अच्छा नहीं लगता था।

सुखदेव बहुत जिद्दी स्वभाव के थे। कष्ट सहने की उनमें बड़ी क्षमता थी। नजला, जुकाम या बुखार को तो वे कुछ गिनते ही नहीं थे। चोट-चाट लग जाती, तो हँसते ही रहते।

शिव वर्मा, जो कि सुखदेव के बहुत नजदीकी क्रान्तिकारी साथी रहे हैं, अपनी पुस्तक 'संस्मृतियाँ' में लिखते हैं :

"वह अपने इरादों का पक्का था और एक बार किसी काम को करने का निश्चय करने के बाद किसी में भी हिम्मत न थी कि उसे उस काम को करने से रोक सके। अपने फैसलों के आगे दूसरों के फैसलों को मानना तो उसने सीखा ही न था।"

शिव वर्मा आगे लिखते हैं :

"उसकी स्मरण-शक्ति काफी तेज थी। आम तौर पर दर्शन या सिद्धान्त की जिन पुस्तकों को दूसरे साथी हफ्तों समाप्त नहीं कर पाते, सुखदेव उन्हें दो दिन में ही पढ़ लेता। नोट्स उसने कभी नहीं बनाये, फिर भी सरसरी निगाह से पढ़ी पुस्तकों के विस्तृत उदाहरण महीनों बाद भी उससे पूछे जा सकते थे। ...समाजवाद पर सबसे अधिक अगर किसी साथी ने पढ़ा या मनन किया था, तो वह सुखदेव था।"

सुखदेव के युवा व्यक्तित्व और कर्मशील चरित्र के दो अन्य उदाहरण भी यहाँ प्रस्तुत कर देना उचित होगा :

जब सुखदेव जवान हुए तो माँजी को विवाह की फिक्र हुई। माँजी कहतीं, "सुखदेव, मैं तुम्हारी शादी करूँगी और तुम घोड़ी पर चढ़ोगे।" तो सुखदेव सदैव यही उत्तर देते कि "मैं घोड़ी पर चढ़ने के बदले फाँसी पर चढ़ूँगा।"[1]

सुखदेव को कर्म में गहरा विश्वास था। काम की धुन के आगे उन्हें कुछ प्रिय नहीं लगता था। वह जब किसी काम में जुट जाते थे, तो पूर्ण करके ही पीछे हटते थे। अच्छे काम को करने के बाद उन्होंने कभी भी प्रशंसा की आकांक्षा नहीं रखी। इस विषय में उनका सिद्धान्त था, "Mine the work and thine the praise." अर्थात मैं केवल कार्य करना चाहता हूँ, प्रशंसा नहीं।[1]

शिव वर्मा 'संस्मृतियाँ' में यह भी लिखते हैं, "ऐसा था सुखदेव-फूल से भी कोमल

---

1. भविष्य, 16 अप्रैल, 1931, पृ. 35

और पत्थर से भी कठोर। डर जिसके पास कभी नहीं फटका और शत्रु के साथ समझौते की बात जिसने एक क्षण के लिए भी नहीं सोची।"

- मथरादास थापर

1. वही, पृ. 36

सुखदेव नेशनल कॉलेज में

सुखदेव ने सन 1922 में सनातनधर्म स्कूल से हाईस्कूल की परीक्षा उत्तीर्ण कर ली। लायलपुर में उस समय कोई कॉलेज नहीं था। अतः उन्हें लाहौर भेजने का निश्चय किया गया। लाहौर में डी.ए.वी. और नेशनल कॉलेज के अतिरिक्त और भी दूसरे कॉलेज थे। सुखदेव नेशनल कॉलेज में प्रवेश लेने के इच्छुक थे, जबकि लालाजी उन्हें डी.ए.वी. कॉलेज में भेजना चाहते थे। वह आर्यसमाजी और राष्ट्रवादी थे। डी.ए.वी. कॉलेज आर्यसमाजियों ने स्थापित किया था, अतः उसे ही प्राथमिकता देना स्वाभाविक था। सुखदेव को नेशनल कॉलेज में प्रवेश के लिए कड़ा संघर्ष करना पड़ा। उन दिनों लालाजी अम्बाला जेल में थे। सुखदेव माँजी को लेकर वहाँ पहुँचे और अपनी जिद पर अड़ गये। आखिर लालाजी को झुकना ही पड़ा और सुखदेव व तयेरे भाई जयदेव का नेशनल कॉलेज में पदार्पण हुआ।

लाला लाजपतराय नेशनल कॉलेज के प्रमुख संस्थापकों में से थे। असहयोग आन्दोलन के समय जिन परिवारों के लोगों ने स्कूल-कॉलेज का बहिष्कार कर दिया था, वे ही इसमें प्रविष्ट हुए। इस कारण सम्पूर्ण वातावरण राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण था। कॉलेज का एकमात्र उद्देश्य था-भावी पीढ़ी को राष्ट्रीय नेतृत्व के लिए तैयार करना। इसके लिए जो पाठ्यक्रम रखा गया था, वह छात्रों के मन-मस्तिष्क को राष्ट्र की स्वतंत्रता के प्रति समर्पण की भावना से भर देता था। समय-समय पर वहाँ राष्ट्रीय नेताओं के व्याख्यानों की व्यवस्था थी, जिससे छात्रों में अद्‌भुत उत्साह का संचार होता था। क्रान्ति-पथ के यात्री सुखदेव ने इसीलिए वह रास्ता चुना था। कॉलेज के प्रख्यात विद्वान प्रोफेसरों के संसर्ग में रहने की भी उनकी उत्कट अभिलाषा थी। प्रिंसिपल आचार्य जुगलकिशोर थे, जिन्होंने छात्रों को इस तरह परवान चढ़ाया कि वे आगे चलकर राष्ट्र की महान सेवा में जुट जायें। भाई परमानन्दजी ने एक राजनीतिक विद्रोह के सिलसिले में कालेपानी की सजा काटी थी। अपने बीच विद्रोही स्वभाव के प्रोफेसर को पाकर जोशीले छात्रों में एक नया उन्माद-सा छा गया। भगतसिंह तथा सुखदेव प्रायः भाई परमानन्दजी के घर जाकर उनके रोचक संस्मरण सुना करते थे। वे भाईजी के क्रान्तिभरे जीवन तथा उनकी विद्वत्ता से बहुत प्रभावित थे। सर्वप्रमुख लाला लाजपतराय की ओर

से भाई परमानन्द कॉलेज की व्यवस्था भी देखते थे। अध्यापन के बीच-बीच में भी भाईजी अपने अण्डमान के बन्दी-जीवन की कथा सुनाते। वीर सावरकर को किस प्रकार कोल्हू में जानवरों की तरह जोतकर तेल पिरवाया जाता था यह सुनाते। छात्र सुनकर स्तब्ध रह जाते और अंग्रेज शासकों के खिलाफ उनके मन में नफरत के बीच उगने लगते।

नेशनल कॉलेज के छात्रों को एक मिले जयचन्द्र विद्यालंकार। वह गुरुकुल कांगड़ी के स्नातक थे। भारतीय इतिहास पर उन्हें विशेष अधिकार प्राप्त था। वास्तव में वही थे, जो कॉलेज-परिसर में राजनीतिक सरगर्मी को जिन्दा रखते थे। प्रोफेसर जयचन्द्र विद्यालंकार से जिन युवकों को आजादी के संघर्ष में कूदने की प्रेरणा मिली उनमें सुखदेव और सरदार भगतसिंह प्रमुख थे। कांग्रेस के नीतिगत प्रश्नों, जैसे असहयोग और अहिंसा के खिलाफ इन छात्रों के भीतर जो आग भड़की हुई थी, उसे जयचन्द्र विद्यालंकार ने फैलाने में और भी अधिक मदद की। पंजाब में वह अकेले ऐसे व्यक्ति थे, जिनके पास बंगाल के क्रान्तिकारी प्रायः आया करते थे। सर्वप्रथम सुखदेव उन्हीं के माध्यम से क्रान्तिकारियों के सम्पर्क में आये।

लाला लाजपतराय ने लाहौर में द्वारकादास पुस्तकालय की नींव भी डाली थी। राजाराम शास्त्री इसके पुस्तकालयाध्यक्ष थे। यह पुस्तकालय राष्ट्रीय विचारधारा से युक्त उत्साही युवकों के जमघटे का एक स्थल बन गया था। युवक पुस्तकें लेने आते और घण्टों राजनीतिक बहसों में उलझे रहते। सुखदेव भी इसमें हिसा लेते। युवा-गतिविधियों का केन्द्र बन जाने के कारण ही इस पुस्तकालय पर सी.आई.डी. की निगरानी रहने लगी। यही वातावरण था, जो सुखदेव को बड़ी तेजी से क्रान्ति की ओर ले गया।

माँ और लालाजी सुनाया करते थे कि एक दिन सुखदेव कैनवस का एक भारी-भरकम बैग लेकर लायलपुर आये और जल्दी में उसे वापस ले जाना भूल गये। माँ ने उसे सँभालकर रखने के लिए उठाया, तो उसके वजन से चौंकीं। खोलकर देखा-उसमें एक पिस्तौल, कुछ कारतूस और मोटी-मोटी किताबें थीं। माँ घबरा गयीं। तुरन्त लालाजी को इसकी जानकारी दी। लालाजी ने उन्हें चेतावनी दी कि इसका किसी से जिक्र न करें, क्योंकि लालाजी को किसी हद तक यह आभास मिल चुका था कि सुखदेव एक ऐसे रास्ते पर निकल पड़े हैं, जहाँ से लौटाना सम्भव नहीं। माँ को भी वह इसी कारण चुप रखना चाहते थे।

उन दिनों मैं भाई साहब के साथ लाहौर में शाह आलमी दरवाजे के अन्दर मकान में रहता था। एक दिन सुखदेव के साथी बड़ी देर से उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। देखता क्या हूँ कि वह कराहते हुए चले आ रहे हैं। ऊपर आकर उन्होंने आवाज लगायी, "मथरा! तेल की शीशी देना।" मैंने तुरन्त लाकर दी, तो वह भगतसिंह से बोले, "बहुत मार पड़ी है। जरा मालिश कर दो।" इतना कहकर ठहाका मारकर हँस पड़े।

बाद में उन्होंने साथियों को जो किस्सा सुनाया वह इस प्रकार का था-लायलपुर से लाहौर आते समय सुखदेव चलती ट्रेन को पकड़ने की गरज से जिस डिब्बे में चढ़े, संयोग से वह कैदियों का निकला। उसमें पुलिस गारद भी थी। पुलिस वालों ने समझा कि यह नौजवान कैदियों का साथी है और इन्हें छुड़ाने के लिए चढ़ा है। इसलिए उन्हें पकड़कर अन्दर खींच लिया। उनसे पूछताछ शुरू हुई। अचानक सुखदेव को एक शरारत सूझी और उन्होंने अपने जबड़े भींच लिये। उनसे तरह-तरह के प्रश्न किये गये, पर वह खामोश रहे। तंग आकर पुलिस वालों ने उन्हें पीटना शुरू कर दिया, फिर भी वह चुपचाप अन्त तक पिटते ही रहे। कुछ बोले ही नहीं। परेशान होकर उन्हें सांगला हिल स्टेशन पर उतार दिया गया। जब वह प्लेटफार्म पर थे, तो एक बूढ़े पुलिसमैन ने खिड़की से झाँककर पूछा, "इतनी मार पड़ी है। अब तो अपना नाम बता दे भलेमानस।" सुखदेव ने इसपर जोर से चिल्लाकर कहा, "मार खाणा।"[1] और हँसते हुए चल दिये। उनकी इस सनक पर सभी साथी हँसते रहे और पूछते रहे कि आखिर उन्हें यह क्या सूझी? रहस्यमय प्रकृति के स्वामी सुखदेव ने अन्त में गम्भीरता से कहा, "मैं यह देखना चाहता था कि मुझमें कष्ट सहने की कितनी क्षमता है।"

सन 1925 में सुखदेव बी.ए. फाइनल के छात्र थे। नवीं पास करने के बाद मुझे उन्होंने लाहौर बुलाकर रेलवे रोड के डायमण्ड जुबली टेकनीकल इंस्टीट्यूट में दाखिल करवा दिया था। मेरे आने पर ही उन्होंने होस्टल छोड़कर मकान लिया था।

मकान में सीढ़ियाँ चढ़ते ही एक कमरा था। उससे सटा हुआ दूसरा कमरा मेरे लिए था। साथ में किचिन और बाथरूम भी थे। सीढ़ियों के पास वाले कमरे में सुखदेव और उनके मित्रों का अड्डा जमता। रात-बेरात कभी भी उनके साथी चले आते। कभी-कभी वहीं पड़े रहते। कोई-कोई तो दो-दो, तीन-तीन दिन तक वहाँ रुक जाता। ये लोग बेफिक्रे और मस्त थे। हँसी-मजाक और शरारतें चलती रहतीं, लेकिन जब उन्हें आपस में सिर जोड़े लम्बी बहसों में उलझा देखता, तो लगता जैसे कि सारी दुनिया का दर्द उन्हीं के जिगर में है और जब उनके बीच गुप्त मंत्रणाएँ चलतीं, तो मैं समझता कि वे किसी समस्या का समाधान खोज रहे हैं। खुसर-फुसर और धीमी बातचीत के दौरान किसी काम से मैं उनके कमरे में पहुँच जाता, तो वे लोग चुप हो जाते।

कमरे पर उनके अनेक साथी आया करते थे। इनमें भगतसिंह प्रमुख थे, जिन्हें मैं लायलपुर से ही जानता था। वह बाबा अर्जुनसिंह के साथ बचपन में हमारी फर्म पर आया करते थे। यशपाल को भी मैं बाद में पहचानने लगा। यह भी इसलिए कि सुखदेव के अन्य साथियों की अपेक्षा उनके बारे में जानने की मेरे भीतर जिज्ञासा अचानक ही उठी थी। होता यह था कि जब साथियों की टोली परस्पर वार्ता-मग्न होती

---

1. मार खाने वाला

और अचानक यशपाल चले आते, तो वे लोग तुरन्त सतर्क हो जाते और बातचीत का रुख मोड़कर गप्पें हाँकने लगते या यशपाल का मजाक उड़ाने लगते। जब यशपाल चले जाते तो फिर अपने पुराने टॉपिक पर लौट आते। बाद में पता चला कि लाहौर के परीमहल में छोटे-छोटे हिन्दू बच्चों का एक संगठन था, जिसमें यशपाल ड्रिल मास्टर थे। यहाँ बच्चों को हिन्दू संस्कृति की रक्षा का पाठ पढ़ाया जाता था। यशपाल प्रायः अपनी आर्थिक तंगी का रोना रोया करते और मित्रों के मजाक करने पर एक ही उत्तर देते कि आजीविका चलाने के लिए और क्या करूँ? मुझे आश्चर्य होता कि ये लोग अपने उस मित्र के प्रति सहानुभूति रखने की जगह उसकी खिल्ली क्यों उड़ाते हैं। क्यों उसका तिरस्कार करते हैं। मन में उठता कि भाई साहब से पूछूँ, पर हिम्मत न होती और मन मसोसकर रह जाता।

मैं रामकिशन को भी जानता था। वह सुखदेव के कॉलेज के साथी थे और उन्होंने बी.ए. किया था। मोहनलाल रोड के कार्नर पर उनका एक होटल था। मैं, भाई साहब और भगतसिंह इसी होटल में खाना खाने जाया करते थे। रास्ते में प्रायः भगतसिंह मुझसे कह उठते कि उनके पिता सरदार किशनसिंह को हरगिज यह नहीं बताऊँ कि वह कहाँ रहे, किसके साथ रहे, क्या-क्या करते रहे। मैं स्वीकृति में गर्दन हिला दिया करता। मेरी समझ में नहीं आता था कि वह ऐसा क्यों कहते हैं। दिमाग पर बहुत जोर डालने पर यही अनुमान लगाकर रह जाता कि उनकी अपने पिता से खटपट रहती होगी। मुझे क्या पता था कि भगतसिंह सुखदेव के साथ क्रान्ति की गतिविधियों में संलग्न हैं और इसलिए अपने पिता की खोजी नजरों से बचना चाहते हैं।

सुखदेव की आलमारी ढेरों किताबों से भरी रहती थी। द्वारकादास लायब्रेरी, पंजाब लायब्रेरी और कॉलेज लायब्रेरी की अनेक पुस्तकें कमरे में पड़ी रहतीं। कोर्स की किताबों को तो वह बहुत ही कम छूते थे। मैंने उन्हें प्रायः विश्वक्रान्ति, राजनीति, समाजशास्त्र, भारतीय और विश्व इतिहास की पुस्तकों से ही चिपटे देखा। फ्रांस, इटली और रूस की राज्यक्रान्तियों पर तथा विभिन्न देशों के स्वतंत्रता-संघर्षों में रुचि का पता उनके अध्ययन और वार्तालाप से चलता था। सुखदेव और भगतसिंह कभी-कभी कॉलेज से सीधे कमरे पर चले आते और देर तक कूका-विद्रोह, गदरपार्टी, करतारसिंह सराभा, सूफी अम्बाप्रसाद तथा बब्बर अकालियों के साहसपूर्ण कारनामों के वर्णन-प्रतिवर्णन में उलझे रहते। मार्क्स, एंगेल्स, गोर्की, उमर खैयाम, आस्कर वाइल्ड, बर्नार्ड शा, चार्ल्स डिकेन्स, विक्टर ह्यूगो, टालस्टाय और दोस्तोयवस्की जैसे महान चिन्तकों और लेखकों पर वह घण्टों सिर जोड़े चर्चा करते रहते।

सुखदेव की आलमारी की पुस्तकों में से मुझे इक्का-दुक्का का ही नाम याद रह गया है। इनमें रोपशिन की 'रशियन डेमोक्रेसी', मैक्सिविनी की 'प्रिंसिपिल ऑफ फ्रीडम', 'मार्क्स की 'सिविल वार इन फ्रांस', बुखारिन की 'हिस्टॉरिकल मैटीरियलिज्म' तथा वीर

सावरकर की '1857 का स्वातंत्र्य समर' प्रमुख है।

सुखदेव और भगतसिंह अराजकतावाद पर बहस किया करते थे। मुझे धुँधला-सा खयाल आता है कि उन दिनों भगतसिंह ने द्वारकादास लायब्रेरी से कोई पुस्तक 'अनार्किज्म एण्ड एसेज' लेकर पढ़ी थी, और उसे पढ़कर बहुत प्रभावित हुए थे। यह मुझे इसलिए याद आता है कि इस पुस्तक के विषय पर भगतसिंह और सुखदेव कई महीने तक उलझे रहे थे।

दोनों साथियों की इस मानसिक भूख के बारे में प्रसिद्ध क्रान्तिकारी शिव वर्मा लिखते हैं :

"भगतसिंह और सुखदेव को छोड़कर और किसी ने न तो समाजवाद पर अधिक पढ़ा ही था और न मनन ही किया था। भगतसिंह और सुखदेव का ज्ञान भी हमारी तुलना में अधिक ही था।"

एक अन्य स्थान पर शिव वर्मा लिखते हैं :

"भगतसिंह के बाद समाजवाद पर सबसे अधिक अगर किसी साथी ने पढ़ा और मनन किया था, तो वह सुखदेव था।"

सुखदेव जब शीशमहल बोर्डिंग में रहते थे, तब उनकी मेज पर लालाजी का एक चित्र फ्रेम में जड़ा हुआ हमेशा रखा रहता था। इस चित्र में लालाजी कैदी की वर्दी में थे। उनके हाथों में हथकड़ियाँ और पाँव में बेड़ियाँ थीं। सुखदेव के चचेरे भाई जयदेव उनके साथ ही रहते थे और उन्हीं से यह पता चला कि बहुधा सुखदेव उस चित्र को अभिभूत होकर एकटक देखते रह जाते। उस चित्र से उन्हें लगता कि समूचा देश कैदी की तरह है, और वह बेहद विचलित हो उठते।

इस तरह गुजर रहा था सुखदेव का विद्यार्थी-जीवन। उन दिनों सोचा भी नहीं जा सकता था कि एक ऐसी आग उनके भीतर सुलगी हुई थी, जो उन्हें अथाह सागर के उस छोर तक ले गयी थी, जहाँ असंख्य भँवर हैं और मौत के सिवा कुछ भी नहीं।

- मथरादास थापर

समाजवाद के पक्षधर सुखदेव

सुखदेव के विचार में दासता से मुक्ति के लिए लड़ाई सतत चलने वाले संघर्ष की पहली कड़ी थी। उनकी दृष्टि में जबरदस्त युद्ध तो शोषण के विरुद्ध होना था। आर्थिक और सामाजिक गैरबराबरी से टक्कर लेना उनका मूल उद्देश्य था। पहले वह साम्राज्यवाद की रीढ़ तोड़ना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने केन्द्रीय समिति की दिल्ली मीटिंग में भगतसिंह के साथ मिलकर समाजवाद को दल का लक्ष्य घोषित करवाया और सर्वप्रथम दल के नाम के साथ 'सोशलिस्ट' शब्द जोड़ा गया।

उनका विचार यह भी था कि इस किस्म की लड़ाई जनता के सहयोग और सहानुभूति के अभाव में पंगु होगी। इस लड़ाई में जनपक्ष को शामिल करने के उद्देश्य से उनके निकट पहुँचने की समस्या थी। इसका हल यही था कि पार्टी की तरफ से ऐसे 'ऐक्शन्स' हाथ में लिये जायें, जो जनता की दुखती रगों पर मरहम रख सकें। अतः साण्डर्स-वध करके राष्ट्रीय अपमान का बदला लेना और असेम्बली बम-काण्ड ऐसे ही कार्य हुए, जिनसे जनता जागृत हुई और उसने क्रान्तिकारियों के कार्य को सराहा।

सुखदेव और भगतसिंह आदि से पूर्व क्रान्तिकारियों का लक्ष्य केवल आजादी था। भविष्य के शासन की कोई रूपरेखा उनके मस्तिष्क में नहीं थी। अंग्रेज शासकों को हटाकर स्वदेशी शासन को बहाल करना ही तो मुख्य मुद्दा नहीं था। आर्थिक और सामाजिक गैरबराबरी जैसी पूँजीवादी व्यवस्था के रहते आजादी का वास्तविक उपभोग कैसे हो सकता था! सुखदेव ने समाजवाद पर बहुत अध्ययन किया था। ग्रंथ पढ़कर उनकी बारीकियों पर मनन करना और बाद में लम्बी-लम्बी बहसों ने उन्हें समाजवाद के मर्म को समझने में गहरी सहायता दी और वह इस नतीजे पर पहुँचे कि समाजवादी समाज की संरचना ही वह मंजिल है, जो इस देश को सच्ची आजादी का पुष्प-हार प्रदान करेगी।

क्रान्तिकारियों के प्रमुख उद्देश्य के प्रति उनमें गहरी आस्था थी। उन्हें विश्वास था कि वे एक दिन अवश्य सफल होंगे और समाजवाद का झण्डा उनके हाथ में होगा।

फाँसी से पहले महात्मा गांधी के नाम लिखे पत्र में वह इसी किस्म की बात कहते हैं :

"भावी राजनीतिक युद्ध में सर्वोपरि स्थान क्रान्तिकारी पक्ष को मिलने वाला है। लोकसमूह उनके आसपास इकट्ठा हो रहे हैं, और वह दिन बहुत दूर नहीं है, जब वे जनसमूह को अपने झण्डे तले समाजसत्तात्मक प्रजातंत्र के उम्दा और भव्य आदर्श की ओर ले जाते होंगे।"[1]

इसी पत्र में एक स्थान पर लिखते हैं :

"हिन्दुस्तानी सोशलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी के नाम से ही साफ पता चलता है कि क्रान्तिकारियों का आदर्श समाज-सत्तावादी प्रजातंत्र की स्थापना करना है।"[2]

इस उद्देश्य की पूर्ति में निरन्तर चलने वाले युद्ध का चरित्र भी उनके मस्तिष्क में साफ था। ध्येय और आदर्श सिद्ध न होने तक वह लड़ाई जारी रखने के पक्ष में थे, पर समय-समय पर उसके स्वरूप को बदलते रहने की अनिवार्यता को भी वह स्वीकारते थे। परिस्थितियों की माँग पर युद्धनीति में परिवर्तन कूटनीति का ही एक अंग है। उनके अनुसार :

"क्रान्तिकारी युद्ध जुदा-जुदा मौकों पर जुदा-जुदा रूप धारण करता है। कभी वह प्रकट होता है, कभी गुप्त। कभी केवल आन्दोलन रूप होता है और कभी जीवन-मरण का भयानक संग्राम बन जाता है।"[3]

शहीद सुखदेव की महत्त्वपूर्ण चिट्ठियाँ मुझे प्राप्त हुई हैं, जिन्हें मैं परिशिष्ट में दे रहा हूँ। उन दोनों चिट्ठियों से सुखदेव का समाजवादी पक्ष और भी उभरकर आता है।

क्रान्तिकारी आन्दोलन के प्रति सुखदेव को कोई मुगालता नहीं था। आन्दोलन की शक्ति, सीमाओं और साथियों की सम्पूर्ण स्थिति को उन्होंने परखा था। अतः राजनीतिक आजादी से लेकर सामाजिक और आर्थिक आजादी तक के रास्ते में पड़ने वाले खुरदरे उतार-चढ़ाव और अवरोधों की नजाकत को वह भली प्रकार समझते थे। वह जानते थे कि साथियों में सच्चे और आदर्श क्रान्तिकारी की परिभाषा में खरे उतरने वाले गिनती के लोग ही थे। यह एक बड़ी कमी थी, जिसे स्वीकारने के लिए जेल से बाहर के साथियों को प्रताड़ित किया और क्रान्तिकारी शिक्षा पर बहुत जोर दिया।

अभी शुरू में जनता का सहयोग और सहानुभूति प्राप्त करने की बात का जो उल्लेख हुआ है उस विषय में सुखदेव के 'बरादरमन' से सम्बोधित पत्र में वर्णन मिलता है। वह लिखते हैं :

"हमारा विचार था कि हमारे 'ऐक्शन्स' (कार्यकलाप)[1] जनता की 'डिजायर्स' (इच्छाओं) और गवर्नमेण्ट द्वारा 'ग्रीवेन्सेज' के उत्तर में होने चाहिये, ताकि हम लोग

---

1. 2, व 3. ये अंश सुखदेव के 'महात्मा गांधी के नाम पत्र' में मौजूद हैं।

जनता को अपने साथ ले सकें और जनता हमारे प्रति सहानुभूति और सहायता दिखाने के लिए तैयार हो जाये।"[2]

सुखदेव को क्रान्तिकारी आदर्श और तौर-तरीकों को जनता के बीच फैलाने की बड़ी चिन्ता थी। उनका यह भी मानना था कि इस तरह का प्रचार उसी के मुख से अधिक अच्छा और प्रभावी हो सकता है, जो जनता की खातिर 'गैलोज' (फाँसी के तख्ते) पर खड़ा हो। यही कारण था कि असेम्बली बम-काण्ड के बाद भगतसिंह के वक्तव्यों ने जनता को झकझोर कर रख दिया और पर्याप्त सहानुभूति मिली।

आजादी और समाजवाद की इस लड़ाई में संगठन के निश्चित कार्यक्रम को प्रमुखता देने की उनमें लालसा थी, ऐसा उनकी दोनों चिट्ठियों में मिलता है। ब्रिटिश सरकार के साथ सीधी टक्कर ही उनका उद्देश्य था और उसी के आधार पर वह क्रान्तिकारी आन्दोलन को मजबूत बनाना चाहते थे।

'प्यारे साथी' सम्बोधन से लिखे पत्र से यह स्पष्ट पता चलता है कि प्रजातान्त्रिक समाजवाद के सूत्र को स्थापित करने के लिए उन्होंने राजनीतिक बुद्धिमत्ता का परिचय देते हुए पंजाब में 'सेण्ट्रल रेड रिवोल्यूशनरी पार्टी' की स्थापना के विषय में भी सोचा था। वह कांग्रेस की नकेल क्रान्तिकारियों के हाथ में रखना चाहते थे। उनका विचार था कि जनता के बीच क्रान्तिकारी ही शक्ति बनें, न कि कांग्रेसी। अतः जनता के बीच आन्दोलन का गुप्त तरीका बदलना होगा। जनता से अलग-थलग रहकर सीधी टक्कर में उसका साथ कैसे मिल पाता ! कुछ गतिविधियों से क्रान्तिकारियों के प्रति जनता के मन में स्नेहपूर्ण स्थान बन चुका था। ऐसी स्थिति में जनता के साथ मिलकर काम करने की नीति मार्ग को सरल और सुगम बना सकती थी। बावजूद खुलकर काम करने के, उन्होंने कभी इस पर जोर नहीं दिया कि पार्टी और उसके आन्दोलन को गांधीवादी ढर्रे पर चलाया जाये। कांग्रेस की प्रस्ताव पास करने और अपीलें जारी करने वाली नीति उन्हें एक मखौल लगती थी। गांधीजी के आन्दोलन चलाने और उद्देश्य की पूर्ति के बिना उसे चुपचाप वापस ले लिये जाने के प्रयत्न भी उन्हें निरर्थक लगते थे। उनका विचार था कि मेहनतकश जनता का नेतृत्व करने वाली 'सेण्ट्रल रेड रिवोल्यूशनरी पार्टी' प्रखर और तेज-तर्रार ढंग से खुलकर खेले। अपने नये आन्दोलन को सतत जुझारू का रूप देना ही उनका विश्वास बनता गया था। यह समय ही माँग के अनुसार उचित भी था। जब क्रान्तिकारियों का जनता के बीच प्रभावपूर्ण स्थान बन चुका था, तब गोपनीयता को बरकरार रखने का कोई औचित्य नहीं था।

सुखदेव के ये सभी तर्क सार्थियों को नहीं जँचे, न ही साथियों ने उनके विचारों

---

1. कोष्ठकों में दिये गये हिन्दी पर्याय पाठकों की सुविधा के लिए जोड़े गये हैं।-सम्पादक
2. 'सुखदेव का अधूरा पत्र' देखिये।

को गहराई से समझने का प्रयत्न ही किया। अतः अपनी विचारधारा के वह अकेले ही पक्षधर रह गये। उन्हें बाहर-भीतर के साथियों में से किसी का भी सहयोग नहीं मिला। वह भी साथियों के साथ मतभेद का एक खास कारण था।

लेकिन यह तो मानना ही पड़ेगा कि उस समय वही एक अकेला ऐसा क्रान्तिकारी था, जिसने सबसे पहले गोली-बारूद की गुप्त लड़ाई त्यागने की सलाह दी और 'रेड रिवोल्यूशनरी पार्टी' स्थापित करने की कल्पना की। साथियों ने सुखदेव के प्रजातान्त्रिक समाजवादी पक्ष के इस महत्त्वपूर्ण पहलू को नजरअन्दाज किया। कुछ गैरजिम्मेदार किस्म के लोगों ने, जो बहुत बाद में क्रान्तिकारी आन्दोलन के साथ जुड़े, और अन्य प्रतिक्रियावादियों ने सुखदेव के नवस्थापना के इस उद्देश्य को दबाकर उन्हें एक झक्की राजनीतिक बुद्धिजीवी के रूप में प्रस्तुत करने की कोशिश की।

क्रान्तिकारी आन्दोलन के साथ यह बहुत बड़ी ट्रेजडी हुई कि सुखदेव के इन विचारों को नजरअन्दाज कर दिया गया। जेल से बाहर के साथियों ने सुखदेव के मानदण्डों पर अमल किया होता तो राजनीति का दूसरा ही रंग होता। उस समय के क्रान्तिकारियों ने जनता के समर्थन और सहयोग की भारी उपेक्षा की, जो आगे चलकर आत्मघाती सिद्ध हुआ और देश राजनीतिक आजादी के रहते हुए भी आर्थिक गुलामी के पंजों में जकड़ा रहा।

क्रान्ति-पथ की यात्रा

सुखदेव ने नेशनल कॉलेज से ही क्रान्ति-पथ की यात्रा शुरू कर दी थी। एक बार चल पड़े, तो फिर पीछे झाँकने या लौटने का सवाल ही नहीं था।

कॉलेज में एक-डेढ़ वर्ष बीत चुका था। पं. जयचन्द्र विद्यालंकार प्राचीन भारतीय इतिहास, राजनीतिक सिद्धान्त और शासन-प्रणालियाँ पढ़ाया करते थे। इतिहास और राजनीति के अध्ययन के बीच प्रायः 1919 के मार्शल लॉ तथा 1920-21 के असहयोग आन्दोलन और उसकी असफलता पर बात चल पड़ती। जिन विद्यार्थियों में आजादी के लिए संघर्ष की आग थी, वे असहयोग आन्दोलन की देशव्यापी असफलता से कुपित थे और अपने लिए दूसरा रास्ता ढूँढ़ना चाहते थे। चिन्तन-मनन के इस काल में सुखदेव, भगतसिंह और उनके अन्य साथियों ने कुछ ऐसी पुस्तकों का अध्ययन किया, जिनसे उनके इरादे पक्के होते चले गये। इनमें एक पुस्तक सान्याल की 'बन्दी जीवन' भी थी।

कॉलेज के जमाने में ही 'रौलट ऐक्ट' ने भी सुखदेव आदि का मन-मस्तिष्क बहुत झँझोड़ दिया। इन दिनों सभी साथी धीरे-धीरे स्वभाव से गर्म होते जा रहे थे। सुखदेव ने रौलट ऐक्ट, जालियाँवाला हत्याकाण्ड, जनरल डायर की नृशंसता और 1919 के मार्शल लॉ का बारीकी से अध्ययन किया। उन्होंने खोज-खोजकर पुस्तकालयों से 1919 के अखबार पढ़े। इस दौरान उन्हें यह भी याद रहा कि 1919 के मार्शल लॉ ने तो पहले ही उन पर और लाला चिन्तराम पर भारी चोट की थी। स्कूल-जीवन में अंग्रेज अफसर को सलामी देने से इनकार करने पर उन्हें मार पड़ी थी, तो प्रमुख आन्दोलनकारी होने के नाते लाला चिन्तराम को जेल जाना पड़ा था।

रौलट कमेटी की रिपोर्ट का नये सिरे से अध्ययन करके सुखदेव बहुत बौखलाये। इसका वास्तविक उद्देश्य क्रान्तिकारियों को अपराधी घोषित करना और उनका दमन करना था। रौलट कमेटी का नाम सिडीशन कमेटी था। सिडीशन का सीधा अर्थ राजद्रोह लिया गया। कमेटी की रिपोर्ट दो सौ छब्बीस पन्नों में तैयार की गयी थी। इसमें भारत के क्रान्तिकारी षड्यंत्रों का पता, उसे दबाने में आई कठिनाइयाँ तथा आगे के लिए कानून की व्यवस्था थी। कमेटी की सिफारिशों के अनुसार अकारण ही गिरफ्तार करने,

नजरबन्द करने, तलाशी लेने, जमानत माँगने के सभी अधिकार पुलिस को सौंप दिये गये थे। यह भारतीय जनता के मौलिक अधिकारों पर कुठाराघात था। ब्रिटिश शासन में एक तो पहले से ही अधिकार छिने हुए थे, उस पर रौलट कमेटी ऐक्ट की इन नयी सिफारिशों ने अधिकारों के दमन का एक नया जाल फैला दिया था।

इसके विरोध में देशव्यापी हड़ताल करने का फैसला हुआ था। यह हड़ताल 30 मार्च, 1919 को होनी थी। बाद में यह तिथि 6 अप्रैल कर दी गयी। सन 1919 का कांग्रेस अधिवेशन अमृतसर में होने वाला था। डॉ. किचलू और सत्यपाल इसके लिए प्रयत्न कर रहे थे; परन्तु उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इससे जनता भड़क उठी। अधिवेशन के लिए महात्मा गांधी 8 अप्रैल को पंजाब के लिए चले, परन्तु उन्हें पलवल स्टेशन पर ही गिरफ्तार करके वापस भेज दिया गया।

अमृतसर में जालियाँवाला बाग के चारों तरफ दीवारें हैं। बाहर आने-जाने के दो संकीर्ण-से मार्ग हैं। 13 अप्रैल बैसाखी के दिन इस बाग में कोई बीस हजार नर-नारी, बच्चे, बूढ़े एकत्र हुए। सभा बड़ी शान्ति से चल रही थी कि जनरल डायर पचास गोरे और एक सौ दूसरे सिपाहियों को लेकर बाग के मेन गेट में घुस आया और शान्त तथा निहत्थी जनता पर गोली-बारी शुरू कर दी। इसमें लगभग आठ सौ लोग मारे गये। कांग्रेस के जाँच कमीशन ने इतनी ही संख्या बतायी थी। जनरल डायर की खून की प्यास इतने पर भी नहीं बुझी। उसने अमृतसर का पानी-बिजली बन्द करवा दिया। रास्ते चलते लोगों को पकड़कर टिकटी बाँधकर बेंत लगाये। उनसे 'क्रोलिंग' करवायी और उनका सामान छीन लिया। सैकड़ों निर्दोष लोगों को जेल में ठूँस दिया गया।

जब यह सब हुआ था, सुखदेव स्कूल में पढ़ते थे। उस समय भी सुखदेव के मन में आग लगी हुई थी। वह आग धीरे-धीरे सुलगती रही और जब नेशनल कॉलेज में आकर उग्रवादी साथियों की टोली में मिले तो वह आग पूरी तरह भड़क चुकी थी। वह 1919 के इस जघन्य हत्याकाण्ड को लेकर भगतसिंह से घण्टों बहस करते। अपने ताया लाला चिन्तराम थापर के मार्शल लॉ के अन्तर्गत नजरबन्द होने की कथा साथियों को सुनाया करते। उन्हें गर्व होता कि तायाजी ने भी इस दमनचक्र का डटकर विरोध किया था।

उन दिनों सुखदेव और भगतसिंह अक्सर कॉलेज से गायब रहते। इसी दौरान एच. आर.ए. (गुप्त संगठन) का पर्चा आया। इसमें दल का कार्यक्षेत्र तैयार करने के बारे में विचार दिया गया था। यह पर्चा पंजाब में पं. जयचन्द्र विद्यालंकार के माध्यम से आया था और गुवाल मण्डी में भगवतीचरण के घर में रखा गया था। इस पर्चे को बँटवाने में भगवतीचरण ने सहायता की थी।

सन 1926 में सुखदेव, भगतसिंह और भगवतीचरण आदि ने लाहौर में 'नौजवान भारत सभा' का गठन किया था। इसका वास्तविक उद्देश्य इश्तहारों, वक्तव्यों और

सभाओं के द्वारा अपने विचारों को जन-सामान्य तक पहुँचाना और उग्र राष्ट्रीय भावना जागृत करना था। यह क्रान्तिकारी आन्दोलन का एक महत्त्वपूर्ण मंच था, जिसके अन्तर्गत नये साथियों को भर्ती करके क्रान्ति के रास्ते पर बढ़ा जा सकता था।

'नौजवान भारत सभा' के अध्यक्ष झंग निवासी रामकिशन, मंत्री भगतसिंह और प्रचारमंत्री भगवतीचरण थे। केदारनाथ सहगल, सैफुद्दीन किचलू, कामरेड पिण्डीदास, लालचन्द फलक, मन्सूर साहब, मुन्शी अहमद दीन जैसे उग्रवादी युवकों तथा नेताओं ने भी इस सभा को भारी सहयोग दिया। सुखदेव, भगवतीचरण, भगतसिंह आदि सभा के कार्यक्रम तैयार करते। अपने साथियों के साथ मिलकर ये लोग दरियाँ तक बिछाया करते थे।

सन 1914 के प्रथम लाहौर षड्यंत्र केस में 18 वर्षीय करतारसिंह सराभा को फाँसी हुई थी। 'नौजवान भारत सभा' ने उनकी शहादत का उत्सव ब्रेडले हाल में बड़ी धूमधाम से मनाया। यह सार्वजनिक सभा थी और इसका उद्देश्य नौजवानों को क्रान्ति की ओर उन्मुख करना था। साम्प्रदायिक एकता और सौहार्द बढ़ाने के लिए सभा में सभी सम्प्रदाय के लोगों की भर्ती, सामूहिक भोज और धार्मिक अन्धविश्वासों के विरोध में व्याख्यान के आयोजन भी हुआ करते थे। एहसान इलाही, मन्सूर, फजल आदि इनमें खूब बढ़-चढ़कर भाग लेते थे। सभा में धार्मिक नारेबाजी का कोई स्थान नहीं था। उसके नारे थे-'हिन्दुस्तान जिन्दाबाद' और 'वन्देमातरम्'। ये तमाम गतिविधियाँ वास्तव में गुप्त क्रान्तिकारी आन्दोलन का ही बीज रूप थीं, जो आगे जाकर विधिवत संगठन में परिवर्तित हो गयीं।

सन 1926 तक संगठन में कोई विशेष जान नहीं पड़ी थी। पं. जयचन्द्र विद्यालंकार के संकेतों पर जो कुछ होता था, वह पर्याप्त नहीं था। थोड़ा-बहुत करते हुए भी निरन्तर असन्तोष बना रहता। कुछ कर गुजरने की ललक भगतसिंह, सुखदेव और भगवतीचरण को विचिलत किये रहती। पं. जयचन्द्र विद्यालंकार यथास्थिति से आगे नहीं बढ़ना चाहते थे। भगतसिंह कुछ सम्पर्क-सूत्र जोड़ने की दृष्टि से कानपुर और दिल्ली में घूम रहे थे। सुखदेव भी लायलपुर और लाहौर के बीच भाग-दौड़ करते हुए अपने प्रयत्नों में लीन थे। और भगवतीचरण क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास लिखने में जुट गये थे। इस तरह प्रबल आकांक्षाओं के रहते हुए भी 'नौजवान भारत सभा' को जैसे जंग लग गया था। वास्तव में 'नौजवान भारत सभा' के मस्तिष्क सुखदेव ही थे। भगतसिंह और भगवतीचरण फ्रण्ट पर काम किया करते थे। यशपाल ने 'सिंहावलोकन' में पं. जयचन्द्र विद्यालंकार के विषय में जो लिखा है, उससे यही प्रतीत होता है कि वह बहुत सतर्क और अपने को बचाये रखने वाले जीवों में से थे। उधर भगतसिंह और भगवतीचरण सिपाहियों की तरह काम करने में दक्ष थे। पार्टी द्वारा जो नीतियों का निर्धारण और योजनाओं की रूप-रेखा तैयार होती थी उसे सुखदेव ही कार्यान्वित करते थे।

सुखदेव, भगतसिंह, विजयकुमार और शिव वर्मा के भरसक प्रयत्नों के बाद 8 व 9 सितम्बर, 1928 को दिल्ली के फीरोजशाह कोटला किले के खण्डहरों में उत्तर भारत के क्रान्तिकारियों की एक गुप्त बैठक हुई। इसमें राजपूताना से कुन्दनलाल, संयुक्त प्रान्त से शिव वर्मा, ब्रह्मदत्त मिश्र, जयदेव, विजयकुमार सिन्हा, और सुरेन्द्रनाथ पाण्डेय, बिहार से फणीन्द्रनाथ घोष एवं मनमोहन बेनर्जी (बाद में ये वादामाफ गवाह हुए) भी आये थे। उस मीटिंग में जयदेव की मौजूदगी को कई लेखकों ने स्वीकार किया है, परन्तु लाहौर षड्यंत्र केस की प्रोसीडिंग बुक के, जिसके अनेक स्थानों पर सुखदेव की हस्तलिखित टिप्पणियाँ मिलती हैं, पृष्ठ 83, 84 और 85 पर सुखदेव जयदेव के नाम को घेरे में लेकर हाशिये पर 'Not true' लिखते हैं। अर्थात उस मीटिंग में जयदेव मौजूद नहीं थे। पहली बैठक में दल का आधार मजबूत करने का कार्यक्रम बनाया गया। इसके लिए सुखदेव और भगतसिंह ने जोर लगाया और केन्द्रीय समिति का निर्माण हुआ। साथ ही पार्टी के नाम में 'सोशलिस्ट' शब्द भी जोड़ा गया। सम्पूर्ण संगठन का नाम 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' किये जाने का प्रस्ताव भी सुखदेव और भगतसिंह ने ही रखा था और इसका अनुमोदन विजयकुमार सिन्हा, शिव वर्मा और सुरेन्द्रनाथ पाण्डेय ने किया था। इसी बैठक में सेण्ट्रल कमेटी के सदस्यों के छद्मनाम भी रख गये थे। जैसे सुखदेव का विलेजर, भगतसिंह का रणजीत और शिव वर्मा का प्रभात आदि।

इसके बाद सुखदेव को पंजाब प्रान्त का प्रमुख संगठनकर्त्ता मनोनीत किया गया। इसी प्रकार फणीन्द्रनाथ बिहार के, कुन्दनलाल राजपूताना के और शिव वर्मा संयुक्त प्रान्त के चीफ बनाये गये। भगतसिंह और विजयकुमार सिन्हा को संगठन की ओर से प्रान्तों का परस्पर सामंजस्य बनाये रखने का कार्यभार सौंपा गया था। चन्द्रशेखर आजाद यद्यपि बैठक में अनुपस्थित थे, परन्तु उन्होंने शिव वर्मा के माध्यम से अपनी पूर्ण सहमति दे दी थी। पण्डितजी क्रान्तिकारियों में वरिष्ठ थे। शस्त्रों का उपयोग भी वह सबसे अधिक और बेहतर जानते थे। अतः उन्हें ही सर्वप्रथम हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी का कमाण्डर-इन-चीफ बनाया गया।

सुखदेव के अन्तरंग साथी शिव वर्मा के अनुसार "एक संगठनकर्त्ता के नाते भगतसिंह की अपेक्षा सुखदेव मुझे कहीं अधिक जँचा!" वस्तुतः यह नितान्त सत्य था, क्योंकि सुखदेव दल के प्रत्येक साथी का ख्याल रखते थे। उनकी छोटी-छोटी जरूरतों को पूरा करने में दिलचस्पी लेते थे। जहाँ सुखदेव के हाथ में बड़े-बड़े कार्यक्रम थे और उनको पूरा करने में वह जुटे हुए थे वहीं साथियों का मनोबल बढ़ाने और उन्हें संगठित रखने के लिए सुखदेव को बारीकी से सोचना पड़ता था। ये छोटी-छोटी बातें उनकी नजरों से कभी ओझल नहीं हुईं। शिव वर्मा की दृष्टि में "भगतसिंह दल के राजनीतिक नेता थे और सुखदेव संगठनकर्त्ता। एक-एक ईंट रखकर इमारत खड़ी करने वाले।" दल के

महत्त्वपूर्ण व्यक्ति होने के कारण ही उन्हें फाँसी की सजा हुई। साण्डर्स-वध में भले ही भगतसिंह और राजगुरु ने फ्रण्ट पर काम किया था; परन्तु पंजाब प्रान्त के प्रमुख होने के कारण इस योजना का सूत्रधार सुखदेव को ही माना गया। लाहौर षड्यंत्र केस के फैसले में पृष्ठ 238 पर जजों की टिप्पणी से यह बात स्पष्ट हो जाती है। और सच तो यह है कि लाहौर षड्यंत्र का सारा केस ही जिस तरह चला उसमें सुखदेव सर्वप्रमुख अभियुक्त थे, यह केस की अदालती भाषा से ही पता चलता है, जो इस प्रकार है, "बअदालत स्पेशल ट्रिब्यूनल, बमुकदमा लाहौर कान्स्पिरेसी केस, लाहौर सरकार बनाम सुखदेव वगैरह मुलाजिमान!" सुखदेव दल के प्रमुख संगठनकर्त्ता थे। उन्होंने भर्ती के कुछ सिद्धान्त निर्धारित कर लिये थे। इनमें एक था-स्वतः प्रेरणा। सुखदेव की दृष्टि में आजादी के लिए क्रान्ति कोई खेल नहीं था। यह काँटों से भरा एक ऊबड़-खाबड़ रास्ता था। जोर देने या दबाव डालने से इस पर चल पाना असम्भव था। वह चाहते थे कि किसी के समझाने-बुझाने से नहीं, बल्कि अन्तरात्मा की पुकार पर लोग स्वयं समर्पित होकर आये। यह बात उनकी 'प्यारे साथियो' सम्बोधन से लिखी चिट्ठी में भी आती है।

सुखदेव का दूसरा प्रमुख सिद्धान्त यह था कि दल का साथी आदेश के आगे अपने तर्कों का बखेड़ा न खड़ा करे। उनका दल आर्मी था, जिसके हरेक सिपाही को 'लॉ ऑफ दी आर्डर' के तहत चलना अनिवार्य होना चाहिये था। एक बार सुखदेव ने किसी नये साथी को एक लिफाफा थमाते हुए कहा, "यह लेकर लाहौर छावनी के स्टेशन पर जाओ और जो ट्रेन लाहौर की तरफ आती हो, उसके डाके वाले डिब्बे में डाल दो।" साथी लिफाफे पर पता देखकर हैरान रह गया, क्योंकि उस पर लाहौर के ही किसी व्यक्ति का पता था। इस पर वह तर्क करने लगा। उसके तर्क सुखदेव के लिए मूर्खतापूर्ण थे। उन्हें इस तरह की बातें पसन्द नहीं थीं। वह चाहते थे कि जो आदेश दिया जाये, उसका अक्षरशः पालन हो।

सुखदेव को सिद्धान्त पर लम्बी-लम्बी और फालतू बहसें कभी पसन्द नहीं आयीं। दल के काम से बड़ा उनके लिए कोई सिद्धान्त नहीं था। और दल का सबसे बड़ा काम था-देश को आजाद कराना तथा समाजवादी समाज की स्थापना करना।

उस समय दल को ऐसे साथियों की जरूरत थी जो कमाण्डर के आदेश पर चुपचाप सिर पर कफन बाँधकर चल पड़े और ऐक्शन के समय पीछे हटने की कमजोरी न दिखाये। सुखदेव इस मामले में बहुत सतर्क थे, क्योंकि कई बार उन्हें कड़वे अनुभव हो चुके थे। क्रान्तिकारियों में अनुशासन को वह सर्वाधिक महत्त्व देते थे।

दल की केन्द्रीय सभा के पास पैसे का नितान्त अभाव था। बैठक में आये प्रतिनिधियों के पास लौटने के लिए किराये तक के लिए पैसे नहीं थे। एक विशेष डकैती ने निराशा पैदा कर दी थी। कैलाशपति[1] के लाये हुए रुपयों से ही थोड़ा-बहुत काम चल रहा था। ये रुपये वह डाकखाने से उड़ाकर लाये थे, जहाँ पर स्वयं काम करते

थे। उधर केन्द्रीय समिति की बैठक में साइमन कमीशन पर बम फेंकने की योजना बनायी जा चुकी थी; परन्तु धनाभाव की समस्या बड़ी विकट थी। इसी उधेड़बुन में केन्द्रीय समिति की सभी विसर्जित हुई और क्रान्तिकारी अपने-अपने प्रान्तों को कूच कर गये। सुखदेव भी पंजाब लौट आये।

बोर्स्टल जेल से सुखदेव ने एक चिट्ठी लिखी थी। इसमें उन्होंने अपने साथियों को 'बिरादरमन' लिखकर सम्बोधित किया था। चिट्ठी में सुखदेव लिखते हैं :

"हमारे ऐक्शन्स तीन प्रकार के थे : (1) प्रोपेगैण्डा, (2) मनी, (3) स्पेशल। इन तीनों में से हमारा मुख्य ध्यान प्रोपेगैण्डा के ऐक्शन पर था। ...पिछले दो प्रकार के ऐक्शन्स को छोड़कर मैं प्रोपेगैण्डा के ऐक्शन को इस स्थान पर डिसकस करना चाहता हूँ। 'प्रोपेगैण्डा' शब्द से शायद इन ऐक्शन्स को ठीक-ठीक नहीं समझा जा सकता। दरअसल, मतलब यह है कि वे ऐक्शन्स हमारी जनता के भावों के अनुकूल होते थे। उदाहरण के लिए साण्डर्स-मर्डर को लो। लालाजी (लाला लाजपतराय) पर लाठियाँ पड़ने से हमने देखा कि देश में इसके कारण बहुत हलचल है। इस पर गवर्नमेण्ट के रवैये ने तेल का काम किया। लोग बहुत नाराज हो गये। जनता का ध्यान क्रान्तिकारियों की ओर खींचने के लिए हमारे लिए यह बड़ा अच्छा अवसर था। पहले हमने सोचा था कि एक आदमी पिस्तौल लेकर जाये और स्कॉट को मारकर वहीं अपने-आपको पेश कर दे। फिर बयान द्वारा यह कह दे कि राष्ट्रीय अपमान का बदला, जब तक क्रान्तिकारी जिन्दा हैं, इसी प्रकार लिया जाता रहेगा। ...हमारा विचार यह था कि यदि मर्डर के बाद पुलिस पीछा करे तो खूब मुकाबला किया जाये। जो इस मुकाबले में बच जाये और पकड़ा जाये, तो बयान दे दे।...मारकर भाग जाना हमारा उद्देश्य नहीं था। हम तो चाहते थे कि देश जान जाये कि यह पोलीटिकल मर्डर है और इस ऐक्शन को करने वाले क्रान्तिकारी हैं न कि मांदगी के साथी।...अच्छा हुआ हम पकड़े गये और देश के सम्मुख सब प्रकट हो गया। मैं तो भाई, पकड़े जाने को सौभाग्य समझता हूँ।"

सुखदेव आगे चलकर इसी पत्र में दल की नीतियों को स्पष्ट करते हुए लिखते हैं :

"हमारा विचार था कि हमारे ऐक्शन्स जनता की 'डिजायर्स' और सरकार की 'ग्रीवेन्सेज' के उत्तर में होने चाहिये, ताकि हम लोग जनता को अपने साथ ले सकें और जनता हमारे प्रति सहानुभूति और सहायता दिखाने के लिए तैयार हो जाये। इसके साथ-साथ हमारा विचार था कि क्रान्तिकारी आदर्शों और टैक्टिस को जनता में फैलाया जाये। तीसरा उद्देश्य यह था कि सरकार से प्रत्यक्ष टक्कर लेने से हमारा संगठन एक निश्चित कार्यक्रम अपने लिए बना सकेगा।"

---

1. बाद में कैलाशपति दिल्ली षडयंत्र केस में वायदामाफ गवाह बन गया था।

सुखदेव स्वतंत्र विचार और व्यक्तित्व के धनी थे। उनके मस्तिष्क में पार्टी के प्रति कर्त्तव्य और सिद्धान्तों की रूपरेखा बिल्कुल साफ थी। कार्यविधियों की व्यापकता, सफलता, असफलता आदि के बारे में उनके अपनी ही तरह के विचार थे। उपर्युक्त चिट्ठी से यह भी पता चलता है कि वह बंगाल के क्रान्तिकारियों के 'मनी ऐक्शन्स' के विरोध में थे। बंगाली क्रान्तिकारी अपना ज्यादा ध्यान छोटी-छोटी डकैतियों में लगाकर शक्ति खर्च करते रहते थे। उनके विचार में छोटी-छोटी डकैतियाँ कतई लाभदायक सिद्ध नहीं हुईं, वरन इनसे अपने ही आदमियों की सुरक्षा को खतरा पैदा हो गया था। पार्टी के लिए धन का अभाव बड़ी भारी समस्या थी; पर सुखदेव ने सदा ही छोटी-मोटी वारदातों का विरोध किया। वह अपनी अधूरी चिट्ठी में लिखते हैं, "इसलिए हम कुछ देकर भी एक जुआ खेलने को तैयार हो गये थे, ताकि अगर बच गये तो अच्छी तरह से निश्चिन्त होकर अपना काम करते जायेंगे और पैसे की समस्या को एक बार फिर रिस्क लेकर हल कर लेंगे।" इसका अर्थ यह हुआ कि उनके मस्तिष्क में धन एकत्र करने की बहुत बड़ी योजना थी, जिसे उन्होंने रिस्क बताया और बचने पर निश्चित होकर काम करने की बात कही। इसी चिट्ठी में सुखदेव आगे लिखते हैं, "साण्डर्स के मर्डर के बाद तो हमें पैसे के लिए ज्यादा चिन्ता भी नहीं करनी पड़ी। साधारण डकैतियों में जितना धन हमें न मिलता, उतना हम चुपचाप इकट्ठा कर लिया करते थे।" यहाँ सुखदेव का तात्पर्य जनता से जुड़ने से है। वास्तव में जनता की सहानुभूति प्राप्त कर लेने वाले क्रान्तिकारी दल को धन की कमी नहीं हो पाती। अनेक लोग कहा करते थे कि उग्रवादी नेतागण ही नहीं, साधारण जनता भी इन लोगों की धन से मदद करने लगी थी। वस्तुतः इसका कारण यह था कि बाद में जनता इन्हें घोर आतंकवादी न मानकर, राष्ट्रहित में कार्य कर रहे क्रान्तिकारी मानने लगी थी।

सुखदेव आदि के जेल जाने के बाद के कार्य-कलाप बहुत ही व्यर्थ और हानिकारक साबित हुए। अकारण ही जगह-जगह बम-विस्फोट किये गये, जिनसे नाममात्र को भी जनता में जागृति नहीं आयी। वायसराय की ट्रेन के नीचे बम रखने से लेकर चिनाब क्लब, लायलपुर, गुजरांवाला, अमृतसर, फिरोजपुर आदि जगहों के बम-विस्फोट उनको निरर्थक लगे थे। उन्होंने चिटगाँव वाले ऐक्शन की भी प्रशंसा नहीं की। क्रान्तिकारी आन्दोलन का इतिहास और सुखदेव की चिट्ठी पढ़कर लगता है कि पंजाब में बेकार के बम-विस्फोटों का जो ताँता बँध गया था, उसके जिम्मेदार बाहर छूटे हुए अधकचरे क्रान्तिकारी थे, जो आजाद जैसे दल के नेता की भी अवहेलना कर देते थे।

वास्तव में सुखदेव की जो दलगत नीति थी, वह बिल्कुल स्पष्ट थी। दल का प्रमुख उद्देश्य 'प्रोपेगैण्डा ऐक्शन्स' था। वह उसी ऐक्शन में हाथ डालना उचित समझते थे जिससे जनता के बीच अच्छा प्रचार हो सके और लोग जान सकें कि क्रान्तिकारियों का

असल उद्देश्य देश को आजाद कराना है, न कि व्यर्थ का आतंक फैलाना, और इस उद्देश्य की पूर्ति असेम्बली बम-काण्ड से हो चुकी थी। सारा देश जान चुका था कि सुखदेव, भगतसिंह, राजगुरु, आजाद और दत्त आदि देश को गुलामी के पंजों से मुक्त कराने के लिए सिर पर कफन बाँध चुके हैं और इन लोगों की प्रत्यक्ष टक्कर विदेशी सरकार से है, जिसके साथ सशस्त्र संघर्ष का उन्होंने बिगुल बजाया था।

अन्त में दलगत सिद्धान्त और उस पर अमल की एक तस्वीर और प्रस्तुत है। लाहौर षड्यंत्र केस की ट्रायल के समय न्यायमूर्ति आगा हैदर ने अदालत में वायदामाफ गवाह हंसराज वोहरा से प्रश्न किया कि पार्टी में शामिल होने के बाद पार्टी-सम्बन्धी कामों के विषय में क्या तुम पार्टी के सदस्यों से खुलकर बातें कर लेते थे ? इस पर हंसराज वोहरा ने बताया कि सामान्य नियम के अनुसार पार्टी के नेता अधीनस्थ सदस्यों को कोई सूचना प्रेषित नहीं करते थे, जब तक कि प्रत्यक्षतः उस सूचना से उनका कोई सम्बन्ध न हो, जबकि अधीनस्थ सदस्यों से आशा की जाती थी कि वे समस्त सूचना बिना कुछ छिपाये अपने नेताओं को देंगें। हंसराज वोहरा ने आगे बताया कि "सदस्यों से यह आशा नहीं की जाती थी कि वे अपनी सूचना नेता के अलावा किसी अन्य सदस्य को बतायें। इसलिए मैं सुखदेव या भगतसिंह से तो खुलकर बातें कर लिया करता था, परन्तु राजगुरु, जयगोपाल, किशोरीलाल जैसे आम सदस्यों से नहीं कर सकता था।"[1]

अतः स्पष्ट हो जाता है कि दल के नियमानुसार सामान्य सदस्य को प्रमुख सूचनाओं की प्राप्ति किसी प्रकार नहीं हो पाती थी; परन्तु यशपाल 'सिंहावलोकन' में कुछ इस प्रकार लिखते चले गये हैं, जैसे वह सर्वप्रमुख नेता हों। कहीं-कहीं तो वह स्वयं को चन्द्रशेखर आजाद से भी ऊँचा दिखाने का प्रयत्न करते हैं। उन दिनों जेल के बाहर जितने भी कृत्य हो रहे थे, उनमें से कुछ के साथ यशपाल का नाम भी जुड़ता था। सुखदेव ने साफ तौर पर अपनी चिट्ठी में इन कृत्यों के लिए बाहर के उन उतावले तथाकथित क्रान्तिकारियों को लताड़ बतायी थी। 'सिंहावलोकन' में वायसराय की ट्रेन उठाने के मामले में यशपाल नायक की तरह नजर आते हैं; लेकिन वास्तविक तथ्य यह है कि कुदसिया बाग, कानपुर की मीटिंग में 5 घण्टे की बहस के बाद दल ने इस ऐक्शन को स्थगित कर दिया था। सभी आजाद से सहमत हो गये थे, पर फिर भी यशपाल आदि ने उतावलेपन में यह ऐक्शन कर ही डाला। इन कृत्यों के बारे में सुखदेव ने अपने पत्र में 'ऐसे ऐक्शन्स से कुछ विशेष जागृति तो आती नहीं' जैसी बात लिखी।

सुखदेव ने अपनी अधूरी चिट्ठी में जो भर्त्सना की है, उसकी बानगी देखिये :

"अब मैं उन ऐक्शन्स के सम्बन्ध में कुछ कहना चाहता हूँ, जो हमारे बाद घटित हुए। वायसराय की ट्रेन को उड़ाने के प्रत्यत्न के अतिरिक्त बम द्वारा कई ऐक्शन्स हुए

1. लाहौर षडयंत्र केस की प्रोसिडिंग बुक, पृष्ठ 175।

हैं। इनमें एक विशेष प्रकार के ऐक्शन्स हुए हैं। अर्थात बम रास्ते में रख आये, या जो ऐक्शन्स पंजाब के चार-पाँच शहरों में एक साथ हुए हैं, मुझे समझ नहीं आया कि ये ऐक्शन्स किस विचार से किये गये हैं। जहाँ तक मैं अनुभव करता हूँ, ऐसे ऐक्शन्स से कुछ विशेष जागृति तो आती नहीं। यदि टैरॅराइज करने का विचार था, तो मैं पूछना चाहता हूँ कि आप लिखें कि इन ऐक्शन्स ने इस उद्देश्य की कहाँ तक पूर्ति की है? इस सम्बन्ध में चिटगाँव वाले ऐक्शन्स की यहाँ मैं प्रशंसा नहीं करना चाहता।"

सुखदेव की यादें

शिववर्मा

सुना था, दल में एक कोई व्यक्ति है जिसका नाम है 'विलेजर'। फिर एक दिन जब भगतसिंह की चिट्ठी लेकर 'विलेजर' बगैर नोटिस के डी.ए.वी. कॉलेज कानपुर में मेरे कमरे में आ धमका तो पता चला कि उसके बारे में मैंने अपने दिमाग में जो नक्शा बना रक्खा था वह गलत था।

मैंने सोचा था 'विलेजर' शायद गाँव का रहने वाला कोई नौजवान किसान होगा-निरक्षर या कम पढ़ा-लिखा, लेकिन जिस्मानी तौर पर तगड़ा व्यक्ति, जिसके चेहरे पर गाँव के कठिन परिश्रम ने अपने निशान बचपन से ही अंकित कर दिये होंगे। रंग भी साफ तो नहीं ही होगा। लेकिन जब सरदार का पर्चा मेरे हाथों में देकर 'विलेजर' बेतकल्लुफी से मुस्कुराया तो मुझे उसके बारे में अपनी अधिकांश धारणाएँ बदलनी पड़ीं।

साधारण डीलडौल, गोरा चिट्टा रंग, निहायत ख़ूबसूरत घुँघराले बाल, बड़ी-बड़ी तैरती हुई आँखें, खोयी-खोयी आकृति, मुलायम चेहरा-'विलेजर' और कुछ भी हो गाँव का किसान नहीं है यह मैंने पहली ही मुलाकात में भाँप लिया। वह मेरे कमरे में कई दिन रहा। इसी बीच एक दिन के लिए भगतसिंह भी आया और तब पता चला कि 'विलेजर' का असली नाम सुखदेव है।

सुखदेव छोटी-छोटी बातों पर ठहाका लगाकर हँस पड़ता था। कभी-कभी अगर दूसरा कोई उसकी हँसी में योग न भी दे तो भी वह अकेले ही हँसते-हँसते लोट-पोट हो जाता। उसने इस हँसी का पहला प्रदर्शन दिया मेरे पार्टी नाम पर। मेरा दल का नाम 'प्रभात' था। वह नाम सुनते ही हँस पड़ा और इतना हँसा कि बेदम हो गया। जब उसकी हँसी का प्रवाह कुछ कम हुआ तो मैंने पूछा, आखिर इसमें इतना हँसने की कौन बात थी?

"साले काम करेगा क्रान्तिकारियों का और नाम रखेगा कवियों जैसा। कोई कविता सुनाने की फरमाइश कर बैठा तो बगलें झाँकता फिरेगा। रामप्रसाद, श्यामनारायण,

लालताप्रसाद-यह सब नाम क्या मर गये थे?" इतना कहकर वह फिर लोट-पोट हो गया।

मैंने कहा, "यह तो पार्टी के अन्दर का नाम है, बाहर का नाम है प्राणनाथ।"

"किसी लौंडिया से साबका पड़ा तो नाम लेने के बजाय प्राणनाथ जी से चप्पलों से बातें करेगी।" आँखें नचाते हुए उसने कहा।

कब्ल इसके कि वह फिर हँसना शुरू कर दे मैंने कहा, "और तीसरा नाम है हरनारायण।"

"हाँ, यह नाम ठीक है," उसने कहा, "और देख बाहर यह हरनारायण ही चलेगा और अन्दर के लिए प्रभात माने लेता हूँ, लेकिन तुझे प्राणनाथ कहने के बजाय तो मैं अपने आपको गोली मार लेना पसन्द करूँगा।"

इसके बाद वह ऐसा खामोश हो गया मानो किसी ने उसकी हँसी पर अचानक ब्रेक लगा दिया हो। हँसते-हँसते अचानक गम्भीर हो जाना भी उसका स्वभाव था।

जोर से हँसते समय उसके हावभाव में एक बचकानी मासूमियत सी आ जाती थी और हँसते-हँसते जब वह अचानक खामोश हो जाता तो एक अजीब खोया खोयापन उस पर हावी हो जाता, मानो वह किन्हीं गहरे विचारों में डूब गया हो। लगता जैसे कोई गहरा विषाद उसे अन्दर ही अन्दर कुरेद रहा हो। बातों और समस्याओं पर दिल ही दिल में घण्टों अकेले सोचते रहना भी उसका स्वभाव था।

और सबसे खतरनाक थी उसकी मुस्कुराहट, जिसके पीछे शरारत के साथ हर चीज पर नफरत भरा व्यंग्य साफ-साफ उभर आता था। वह मुस्कुराहट समाज की कुरीतियों, रूढ़ियों, राजनीतिक मतभेदों के प्रति उसकी गहरी उपेक्षा और विद्रोह का प्रतीक थी। यहाँ तक कि बड़ी-बड़ी असफलताओं के आघात को भी वह अपनी उस उपेक्षा भरी मुस्कुराहट में डुबो देता। एक बार लाहौर बोर्स्टल जेल में भूख हड़ताल के सिलसिले में हम लोगों की पिटाई चल रही थी। डॉक्टर हमें जबर्दस्ती दूध पिलाना चाहता था लेकिन एक-एक को काबू में करने का काम था जेल अधिकारियों का। जेल का बड़ा दरोगा खान बहादुर खैरदीन बारह पन्द्रह तगड़े सिपाही और कैदी लिये एक-एक को कोठरियों से अस्पताल पहुँचाने में व्यस्त था। उसने सुखदेव की कोठरी खुलवायी। खुलते ही सुखदेव तीर की तरह निकलकर भागा। दस दिन के अनशन के बाद भी उसने ऐसी दौड़ लगायी कि अधिकारी परेशान हो गये। दस दिन का भूखा आदमी भी इतना दौड़ सकता है इसकी उन्हें आशा नहीं थी। बड़ी कठिनाई से जब वह काबू आया तो उसने मारपीट शुरू कर दी-किसी को मारा, किसी को गुदगुदाया, किसी को काट खाया। इन सब बातों से दरोगा बेहद चिढ़ गया। डॉक्टर के पास ले जाने से पहले उसने सुखदेव

की ख़ूब मरम्मत करवायी। वह मार खाता गया और दरोगा की ओर देखकर उपेक्षा के भाव से मुस्कुराता रहा। सुखदेव की शरारत भरी मुस्कुराहट से दरोगा और भी चिढ़ गया। जब कैदी और सिपाही उसे टाँग कर अस्पताल ले चले तो उसने टाँगें फटकारनी शुरू कर दीं। जो कैदी सुखदेव की टाँगें पकड़े था उसके बिल्कुल पास आकर हण्टर से धमकाते हुए दरोगा ने उसे ठीक से पकड़ने का आदेश दिया। दरोगा को अपने इतने पास देखकर सुखदेव ने जोर के झटके से एक टाँग छुड़ा ली और उसने दरोगा के सीने पर इतने जोर का धक्का दिया कि बेचारा दो कदम पीछे जा गिरा। देखने वालों का ख़्याल था कि इसके बाद सुखदेव को बेहद मार पड़ेगी लेकिन दरोगा झेंप मिटाने के लिए ठीक तरह से ले जाने का आदेश देकर वहाँ से चला गया। सुखदेव नफरत भरी निगाह से मुस्कुराता रहा।

आते ही मेरे नाम को लेकर उसने जो नाटक किया उससे पहले ही दिन से हम दोनों में काफी बेतकल्लुफी हो गयी। वह मेरे कमरे में चार-पाँच दिन रहा। एक संगठनकर्ता के नाते भगतसिंह की अपेक्षा सुखदेव मुझे कहीं अधिक जँचा। दल की और दल के साथियों की बहुत सी ऐसी छोटी-छोटी आवश्यकतायें थीं, जिनकी ओर भगतसिंह का कभी ध्यान भी नहीं जाता था, लेकिन सुखदेव उन पर घण्टों सोचता और विस्तार से उनका हिसाब रखता था। सही मानों में अगर भगतसिंह पंजाब पार्टी का राजनीतिक नेता था तो सुखदेव उसका संगठनकर्ता था। एक-एक ईंट रखकर इमारत खड़ी करने वाला।

जहाँ एक तरफ पहले दिन की मुलाकात में ही सुखदेव की हँसी और उसकी आँखों के गहरे तीखेपन का मुझ पर असर पड़ा वहाँ दूसरी तरफ उसकी बेडौल पोशाक देखकर हँसी भी आयी। उसने मैले ऊँचे अलीगढ़ी पायजामे पर उससे भी मैला खादी का ढीला-ढाला कुर्त्ता पहन रक्खा था। कुर्ते के सारे बटन खुले हुए थे और वह गले से खिसक कर दायें कन्धे को नंगा छोड़ता हुआ बखौरे पर उतर आया था। सिर पर लाला लोगों की गोल टोपी थी जिसके किनारे आधी दूर तक तेल और धूल की पर्त खाकर मोमजामा जैसे लग रहे थे। पैरों में बहुत कीमती काले रंग का बूट जूता था।

अपने शरीर, रहन-सहन और पहनावे के बारे में उसे दूसरों का हस्तक्षेप गवारा न था, इसलिए जैसे ही मैंने उसे उपरोक्त पोशाक के लिए टोका तो वह चिढ़ गया। "मैं किसी साले के यहाँ शादी करने नहीं आया हूँ। तुझे मेरी पोशाक अच्छी न लगती हो तो आँखें बन्द कर ले," उसने जवाब दिया। लेकिन दल के नाम पर जब उसे समझाया कि यहाँ लोग इस प्रकार की पोशाक नहीं पहनते तो वह मान गया और जब तक रहा साफ धोती और कमीज पहनता रहा, टोपी भी नहीं लगायी।

जैसा ऊपर कह आया हूँ, सुखदेव का दल के अन्दर का नाम 'विलेजर' था। यह नाम शायद उसके इसी गँवारों जैसे ऊलजलूल व्यवहार के कारण ही दिया गया था। स्वभाव से जिद्दी होने के कारण उपरोक्त या उससे मिलते-जुलते पहनावे को काफी दिनों तक उसने अपनी साधारण पोशाक बनाये रक्खा।

1928 में कानपुर से फरार होकर जब मैं पंजाब पहुँचा तो काफी दिनों तक अमृतसर में सुखदेव के साथ रहने का मुझे अवसर मिला। यहाँ भी उसका यही पहनावा चल रहा था। टोपी खिसक कर सिर के पिछले भाग पर जा टिकी थी और पैरों में कीमती जूते की जगह एक फटे हुए पुराने देसी जूते ने ले ली थी जिसे वह जूते के बजाय चप्पल के तौर पर ही इस्तेमाल करता था। सवेरे से शाम तक इसी पोशाक में वह अमृतसर के चक्कर लगाया करता।

एक दिन दोपहर को वह कहीं से घूम कर आया। मैं उस समय एक उपन्यास समाप्त कर रहा था। पुस्तक छीन कर एक तरफ फेंकते हुए उसने कहा, "क्या सारा दिन घर में घुसे बैठे रहते हो, यहाँ कौन तुम्हें पहचानता है? चलो कहीं घूम आवें।" गर्मियों के मौसम में दोपहर के समय घूमने का प्रस्ताव भी सुखदेव ही कर सकता था। लेकिन जब एक बार यह कीड़ा उसके दिमाग में घुस गया तो फिर उससे जान छुड़ाने का कोई सवाल ही नहीं था। लाख मिन्नतें कीं कि उपन्यास बड़ा रोचक है, कुछ ही सफे रह गये हैं, समाप्त कर लूँ फिर चलूँगा लेकिन उसने एक न सुनी। क्या करता! मैं जैसे बैठा था वैसे ही उठ कर उसके साथ चलने लगा। उसने जिद की कि पंजाबी पोशाक में निकलूँ।

सुखदेव जहाँ अपने शरीर के बारे में बिल्कुल उदासीन था वहाँ अपने साथियों को खिलाने और पहनाने में उसे बड़ी खुशी होती थी। वह मेरे लिये एक बहुत अच्छी नयी सलवार ले आया था। साथ ही पंजाबीनुमा लम्बी कमीज, कोट, कुल्ला, पगड़ी और एक बढ़िया जूता भी खरीद लाया था। इस बारे में सुखदेव भगतसिंह से बिल्कुल उल्टा था। भगतसिंह अपना शौक, अपना खाना-पीना, अपनी पोशाक के सामने दूसरे साथियों की आवश्यकताओं की बात बहुत कम सोचता था। इसके विपरीत सुखदेव अपने साथियों के शौक और उनकी आवश्यकताओं के सामने अपनी बात बहुत कम सोचता था।

सुखदेव के आग्रह पर मैंने उसकी लायी हुई पोशाक पहनी। उसने अपने हाथ से पगड़ी ठीक की। फिर दूर हटकर निरीक्षण किया : "हाँ, अब तुम पंजाबी लगते हो। चलो!"

"तुम भी कपड़े बदल हो," मैंने आग्रह किया।

"चल, चल। आया है बड़ा गार्जियन बन कर। मैं कपड़े अपड़े नहीं बदलता।"

"लेकिन मेरी इस पोशाक के साथ तुम्हारा इन कपड़ों में चलना कहाँ तक ठीक होगा?"

"लोग समझ लेंगे कि मैं तेरा नौकर हूँ, बस।" और उसने मेरी एक न सुनी।

"सुखदेव को बेले के फूल और उसके हार बेहद पसन्द थे। एक मन्दिर के सामने हार बिकते देखकर उसने दो हार खरीदे। एक अपने गले में डालकर दूसरा हार मेरी ओर बढ़ा दिया। मैंने हार लपेट कर हाथ में पकड़ लिया। वह जिद करने लगा कि मैं उसे गले में पहनूँ। यह जवाब पाकर कि मुझे हार पहन कर चलना अच्छा नहीं लगता, दो मिनट तक तो वह चुप रहा, फिर बोला, "तुझे फूलों की खुशबू अच्छी नहीं लगती तो जा तू और कुछ सूँघ।" यह कह कर उसने वह हार भी लेकर बायें हाथ की कलाई में लपेट लिया।

उसे भुट्टे भी बहुत पसन्द थे। प्रायः रास्ता चलते तीन-चार भुने हुए भट्टे वह अपनी बगल में दबा लेता और एक को दोनों हाथों से पकड़ कर दाँतों से दाने निकाल कर खाता हुआ चलता। रास्ते में अगर कोई जान-पहचान वाला मिल गया तो बेतकल्लुफी के साथ एक उसे भी पकड़ा दिया। इन्कार के माने होते गाली खाना। हार खरीद कर आगे बढ़ते तो भुट्टे बेचने वाला भी दिखायी दे गया। उसने चार भुट्टे खरीदे। दो अपनी बगल में दबाये, एक स्वयं खाने लगा और एक मेरी ओर बढ़ाकर जिद करने लगा कि मैं भी खाऊँ। मुझे अजीब उलझन सी होने लगी। एक तरफ मेरे कीमती कपड़े, दूसरी तरफ सुखदेव की अपनी वही रोजवाली पोशाक, उस पर दो गजरे और भुट्टे। "मैं भुट्टे नहीं खाऊँगा," मैंने कहा। बस फिर क्या था, वह लगा गालियाँ बकने। उसे चुप करने के लिए मुझे फिर झुकना पड़ा। मैंने भुट्टा ले लिया और हाथ से दाने निकाल कर खाने लगा। उसने आग्रह किया कि दाँत से नोच कर खाऊँ। उसका कहना था कि भुट्टे का मजा दाँत से नोचकर खाने में ही है। दो-एक बार की जिद के बाद जब मैंने सड़क चलते दाँत से नोच कर खाने से साफ इन्कार कर दिया तो इस बार उसने अपना आग्रह वापस ले लिया।

इसी प्रकार एक बार दिल्ली में चावड़ी बाजार की सड़क पर भगतसिंह, सुखदेव और जयदेव दिन के समय किसी काम से जा रहे थे। रात होने में अभी काफी देर थी और सारा समय सोकर भी नहीं गुजारा जा सकता था। अस्तु, समय काटने के लिए निकले। एक मकान के सामने एक वेश्या और उसके दलाल में छेड़खानी चल रही थी। सुखदेव की पोशाक से उसे भी अपनी किसी दूसरी बहन का दलाल समझ वेश्या ने जोर से पुकारा, "ऐ, देखो ये मर्दुआ कहता है मुझसे शादी कर लो।" जवाब देने में उसे एक क्षण की भी देरी न लगी। शोहदों के लहजे में उसने कहा, "ऐसा न करना, बीबी जी।

फिर हम लोगों की रोजी कैसे चलेगी?"

घर आकर जयदेव ने सुखदेव की हरकत पर सख़्त एतराज किया। "सुनने वाले हम लोगों के बारे में क्या सोचते होंगे," उसने कहा।

"यही कि मैं किसी वेश्या का दलाल हूँ और तुम दोनों मेरे शिकार," यह कहकर सुखदेव ने हँसना शुरू कर दिया।

जयदेव के बार-बार आपत्ति करने पर उसने तर्क दिया, "अगर इस अपरिचित शहर में लोग हमें क्रान्तिकारी दल का सदस्य न समझकर वेश्या का दलाल समझें तो यह हमारी सफलता है।" फिर छेड़ने के लहजे में बोला, "और उधर से गुजरने में अगर किसी ब्रह्मचारी के ब्रह्मचर्य को खतरा हो तो वह आँखों पर हाथ रख ले या पट्टी बाँध कर चला करे।" यह कहकर उसने फिर हँसना आरम्भ कर दिया। अपनी आवारा पोशाक की सार्थकता पर उसे बड़ा सन्तोष मिला।

हठी होने के साथ-साथ सुखदेव झक्की भी था। अगर एक बार उसे किसी बात की झक सवार हो गयी तो किसकी मजाल कोई उसे अपने निर्णय से डिगा सके। एक बार आगरे में उसे अपनी सहनशक्ति की परीक्षा लेने की झक आयी। एक बहाना भी मिल गया। विद्यार्थी जीवन में, जब क्रान्तिकारी दल से उसका सम्पर्क नहीं हुआ था, उसने अपने बायें हाथ पर 'ओम्' और अपना नाम गुदवा लिया था। फरारी की हालत में पहचान के लिए यह बहुत बड़ी निशानी थी। आगरे में बम बनाने के लिए नाइट्रिक एसिड खरीद कर रक्खा था। किसी को बताये बगैर उसने बहुत-सा नाइट्रिक एसिड 'ओम्' तथा अपने नाम पर लगा लिया। शाम तक जहाँ-जहाँ एसिड लगा था वहाँ गहरे जख़्म हो गये और सारा हाथ सूज गया। ज्वर भी आ गया। लेकिन इस सबके बावजूद न तो उसने अपनी तकलीफ का किसी से जिक्र किया, न उफ की और न उसकी चुहलबाजी में कोई कमी आयी।

हम लोगों को उसकी कारस्तानी का पता तब चला जब दूसरे दिन नहाने के लिए उसने अपना कुर्ता उतारा। उसकी हालत देखकर जब आजाद और भगतसिंह नाराज हुए तो उसने हँसते-हँसते कहा, "शिनाख्त की निशानी भी मिट जायेगी और एसिड में कितनी जलन है इसका अनुभव भी हो जायेगा।" इसके बाद वह चार-पाँच दिन आगरे में रहा, करीब-करीब सभी साथियों ने दवा, इलाज और मरहमपट्टी के लिए आग्रह किया, लेकिन उसने किसी की एक न सुनी। वह तो तकलीफ सहने की अपनी क्षमता की परीक्षा ले रहा था। वह बदस्तूर अपना सारा काम करता रहा और उसी हालत में लाहौर चला गया।

कुछ दिन बाद जब एसिड का घाव भर गया तो उसने देखा कि नाम का कुछ

निशान अब भी शेष है। उसने उसे भी मिटाने का निश्चय कर लिया। एक दिन शाम को वह दुर्गा भाभी के मकान पर पहुँचा। भगवती भाई उस समय कहीं बाहर गये थे और भाभी रसोईघर में खाना बना रही थीं। सुखदेव भगवती भाई के कमरे में जा कर बैठ गया। उस दिन काफी देर तक उसके खामोश रहने पर भाभी को उत्सुकता हुई कि वह कमरे में क्या कर रहा है। जा कर देखा तो दंग रह गयीं। उसने मेज पर एक मोमबत्ती जला रक्खी थी और बड़ी इत्मीनान से उसकी लौ पर हाथ दिये बैठा था। जिस स्थान पर उसका नाम लिखा था वहाँ की खाल जल चुकी थी लेकिन इस बार वह काम अधूरा नहीं छोड़ना चाहता था। भाभी ने लपक कर मोमबत्ती बुझा दी। जब उन्होंने उसकी इस करतूत पर उसे डाँटा तो वह मुस्कुरा भर दिया, बोला कुछ नहीं।

आगरे में एक बीमार साथी के लिए ब्राण्डी लाकर रक्खी गयी थी। उन्होंने दो ही चार चम्मच इस्तेमाल की होगी कि उन्हें आगरा छोड़ देना पड़ा। ब्राण्डी की बोतल देखकर सुखदेव को शराब के नशे का अनुभव प्राप्त करने की झक सवार हुई और उसने दूसरों की आँख बचा कर आधी बोतल साफ कर दी। इसके थोड़ी देर बाद ही उसे भगतसिंह के साथ दिल्ली जाना था। चलने के लिए उठा तो उसके पैर लड़खड़ा गये। पूछने पर उसने साफ-साफ बता दिया। जब भगतसिंह ने उस गाड़ी से न जाकर शाम की गाड़ी से जाने की बात कही तो सुखदेव बिगड़ उठा :

"मैं तो यह जानना चाहता हूँ कि आखिर इसके नशे में ऐसी कौन-सी बात है कि लोग इसके पीछे दीवाने रहते हैं और यह अनुभव मैं होश में रहकर ही कर सकता हूँ। बेहोशी का अनुभव कभी सही अनुभव नहीं कहा जा सकता।" यह कहकर वह सामान उठा कर चलने को तैयार हो गया। बाद में भगतसिंह ने बताया कि रास्ते में एक दो बार उसके पैर जरूर लड़खड़ाये लेकिन बातचीत और व्यवहार में उसने यह जाहिर नहीं होने दिया कि वह नशे में है।

सुखदेव की झोंक का एक बड़ा दिलचस्प उदाहरण यशपाल जी ने सिंहावलोकन में दिया है। सुखदेव ने 'जुजुत्सु' की किसी किताब में पढ़ा था कि झगड़े या मार-पीट के समय अपने से बहुत अधिक बलवान व्यक्ति से मुकाबला पड़ जाने पर आत्मरक्षा और प्रतिद्वन्द्वी को परास्त कर देने का उपाय उसकी नाक पर जोर से घूँसा मार देना है। ऐसे आघात से कोई भी व्यक्ति सुध-बुध खोकर बेकाम हो जायेगा। साधारणतः यह नुस्खा पढ़कर विश्वास कर लेना काफी होना चाहिये परन्तु सुखदेव ने इसे परखना आवश्यक समझा।

उन दिनों गांधी जी ने प्रत्येक मास की 18 तारीख उपवास के लिए निश्चित की हुई थी। सुखदेव यह उपवास रखता था। उपवास किये हुए वह अकेला ही किसी काम

से सड़क पर चला जा रहा था। 'जुजुस्तु' की किताब में पढ़ी हुई बात उसे याद आ गयी। वह किसी कद्दावर बलवान दिखायी देने वाले व्यक्ति को खोजने लगा। ऐसा एक आदमी दिखायी भी दे गया। उसके समीप पहुँच कर उसकी बेखबरी में सुखदेव ने उसकी नाक पर घूँसा जमा दिया और चोट का प्रभाव देखने के लिए समीप ही खड़ा रहा।

चोट खाने वाला आदमी सचमुच अपने चेहरे को दोनों हाथों में सँभाल कर सड़क पर बैठ गया और काफी देर तक बैठा रहा। इस बीच सुखदेव भाग कर फर्लांग दो फर्लांग दूर जा सकता था। परन्तु वह तो अपने परीक्षण का प्रभाव देखने पर तुला था, समीप ही खड़ा रहा। कुछ देर बाद उस व्यक्ति ने होश सँभाला और अपने ऊपर अकारण आघात करने वाले व्यक्ति को अपनी अवस्था पर गौर करते पाया। ऐसी अवस्था में चोट खाने वाले ने वही किया जिसकी किसी भी सामान्य व्यक्ति से आशा की जानी चाहिये। उसे अपनी ओर लपकते देख सुखदेव बचने के लिए भागा। एक तो सुखदेव उपवास के कारण सुबह से भूखा और कमजोर था जिस पर उसके इस परीक्षण का पात्र उससे अढाई गुना बलवान, सुखदेव काबू आ गया और उसे मार पड़ने लगी। वह असहाय हो मार खाने के लिए बैठ गया। आते-जाते आदमियों ने बीच-बचाव कर उसे छुड़ाया। पूछा गया कि आखिर तुमने पहले मारा क्यों? सुखदेव का उत्तर था-"मैंने मारा था, अब तुम मार लो।" अस्तु इस परीक्षा से सुखदेव को नाक पर घूँसे के फल का उचित अन्दाज तो हो गया।

कुछ साथियों का मत है कि सुखदेव एक कमजोर तबीयत का व्यक्ति था और उसमें अधिक समय तक एक निश्चय पर जमे रह सकने की क्षमता का अभाव था। मेरे ख़्याल से सुखदेव इससे उल्टा था। वह अपने इरादों का पक्का था और एक बार किसी काम को करने का निश्चय करने के बाद किसी में भी हिम्मत न थी कि उसे उस काम के करने से रोक सके। अपने फैसलों के आगे दूसरों के फैसलों को मानना तो उसने सीखा ही न था। हाँ, अमल में अगर किसी समय उसे ऐसा अहसास हो जाये कि उसका फैसला गलत था तो दूसरों की नाराजगी, बदनामी या लोक-लाज की परवाह किये बगैर वह उसी मुस्तैदी से पीछे हट सकता था। अपने इसी स्वभाव के अन्तर्गत जेल में उसने कई ऐसे कदम उठाये जिनसे हम लोगों को काफी परेशानी का सामना करना पड़ा।

पहली भूख-हड़ताल के आरम्भ होने के दस दिन बाद भी उसमें कितना जोश था इसका उल्लेख ऊपर किया जा चुका हैं लेकिन उसके सारे विरोध के बावजूद अधिकारियों ने जब उसे गिराकर रबर की नली नाक के रास्ते पेट में उतार ही दी तो अपनी हार

पर उसे खिसियाहट अनुभव हुई। उस रात देर तक वह अस्पताल की बैरक में टहलता रहा। दूसरे दिन से दूध पिलाने का क्रम दोनों समय चलने लगा। चार-पाँच दिन लगातार डॉक्टरों के हाथों हार खाने के बाद वह बड़ा खिन्न हो उठा। पेट में दूध निकाल देने के लिए उसने गले तक अँगुली डालकर उल्टी करने की कोशिश की। एक-दो दिन कुछ सफलता भी मिली लेकिन उसके बाद गला इस कसरत का आदी हो गया। उसने सुन रक्खा था कि मक्खी निगल जाने से उल्टी हो जाती है। अस्तु, ज्यों ही डॉक्टर दूध पिलाकर हटा उसने एक मक्खी पकड़ी और पानी के साथ उसे निगल गया। लेकिन उस पर इसका भी कोई असर नहीं पड़ा। इन्हीं सब प्रयोगों में करीब दस दिन और गुजर गये। डॉक्टरों ने दूध की मात्रा बढ़ा दी थी। फलस्वरूप उसका वजन भी बढ़ चला। अन्त में डॉक्टरों को परास्त करने के लिए उसने एड़ी के पास की नस काट कर रात में धीरे-धीरे शरीर का खून निकाल देने का निश्चय किया। हजामत का ब्लेड लेकर बैठा भी। फिर ख़्याल आया, लोग कहेंगे फाँसी के डर से सुखदेव ने आत्महत्या करने की कोशिश की। सुखदेव और डर! यह विचार आते ही उसने ब्लेड फेंक दिया। उस रात वह सोया नहीं। दूसरे दिन जब डॉक्टर दूध पिलाने आया तो उसने उसके हाथ से बर्तन लेकर स्वयं ही दूध पी लिया। सुखदेव ने साथियों से पूछे बगैर अनशन तोड़ दिया, यह समाचार हर जगह चर्चा का विषय बन गया। उसे लेकर तरह-तरह की टीका-टिप्पणी होने लगी। कुछ साथियों ने तो उसे देखकर मुँह तक घुमा लिया। लेकिन सुखदेव का निर्णय हो चुका था और अब उसे वापस लाना किसी के बस की बात न थी।

दो-तीन दिन बाद जब रविवार को सेण्ट्रल जेल से भगतसिंह आया तो उसने अलग ले जाकर सुखदेव को समझाने की कोशिश की। उसका उत्तर साफ था-"भूख-हड़ताल की सफलता है किसी के मरने में। अनशन से डॉक्टर मरने नहीं देंगे और गला काट कर मैं मरना नहीं चाहता।"

भगतसिंह ने प्रस्ताव रक्खा कि डॉक्टरों के दूध पिलाने के काम में बाधा डाले बगैर वह रबर की नली से दूध लेता रहे। सुखदेव ने मुस्कुरा कर कहा, "मैं अपने से धोखा नहीं कर सकूँगा।"

सन तीस के आरम्भ में हम लोगों को दूसरी बार अनशन का सहारा लेना पड़ा। जब सुखदेव ने उसमें हिस्सा लेने की इच्छा प्रकट की तो साथियों ने सोचा उसे अपने पिछले व्यवहार पर पश्चात्ताप है। इस बार अधिकारियों ने दूध पिलाने में जल्दी नहीं की। पन्द्रह दिनों तक तो उन्होंने किसी को हाथ तक नहीं लगाया। अचानक पन्द्रहवें दिन शाम को सुखदेव की हालत खराब हो गयी-मुँह में जाले पड़ गये, जबान ऐंठने लगी, बोलने की शक्ति भी जाती रही और हाथों-पैरों की अँगुलियाँ अकड़ गईं। डॉक्टर

को खबर दी गयी, चारों ओर भागदौड़ मच गयी, हम लोग काफी परेशान थे।

सुखदेव की मृत्यु से कोई तूफान न खड़ा हो जाये, इस डर से हम लोगों को अस्पताल से हटाकर कोठरियों में भेज दिया गया।

बात यह थी कि इस बार सुखदेव ने आरम्भ से ही पानी पीना भी छोड़ रक्खा था। इस राज को उसने हम लोगों को भी नहीं बताया था। डॉक्टरों को इसका ज्ञान हुआ उसकी हालत देखकर। उन्होंने उसे पानी पिलाने की कोशिश की तो उसमें न जाने कहाँ से स्फूर्ति आ गयी और वह गिरता-पड़ता उठकर भागा। यह उसका आखिरी विरोध था। थोड़ी दूर जाकर उसके पैर लड़खड़ाये और वह बेहोश होकर गिर गया। डॉक्टरों ने उसी हालत में नाक के रास्ते नली से उसे पानी पिलाया और पाँच मिनट के अन्दर वह उठकर बैठ गया।

सुखदेव ने जुआ खेला था और वह फिर हार गया। अगर दो-तीन घण्टे तक डॉक्टरों को उसकी हालत का पता और न चलता तो यतीन्द्रदास के बाद अनशन का शायद यह दूसरा शहीद होता। लेकिन जब एक बार डॉक्टरों ने पानी गले से नीचे उतार दिया तो उसने अपनी हार स्वीकार कर ली-भूख-हड़ताल में उसकी दिलचस्पी समाप्त हो चुकी थी। अब तो रोज की खिच-खिच का सवाल रह गया था।

उस रात हम सब लोग सुखदेव के लिए काफी चिन्तित रहे। सवेरे जैसे ही कोठरियाँ खुलीं हमने एक कैदी नम्बरदार को उसका हाल लाने के लिए भेजा। पता चला गत रात जब डॉक्टर उसे पानी पिलाने में सफल हो गये तो एक अच्छे खिलाड़ी की भाँति उसने हार स्वीकार कर ली और अनशन समाप्त कर दिया।

सुखदेव का इस प्रकार अनशन समाप्त कर देना गलत था और हम सभी लोगों को वह बात बहुत बुरी लगी। अब एक लम्बे संघर्ष के आसार उनके सामने थे। हमारे व्यवहार में सुखदेव के प्रति एक बहिष्कार की सी भावना आ जाने पर भी उसने कभी कोई शिकायत नहीं की और न ही किसी के सामने अपने काम की सफाई पेश की। यह भी उसके स्वभाव का एक अंग था।

दूसरों के सामने रोना, किसी के प्रति ममता का प्रदर्शन, सहानुभूति चाहना या सहानुभूति का पात्र बनना वह कमजोरी समझता था। इसका यह मतलब नहीं कि उसे किसी से लगाव नहीं था या वह कभी रोया ही नहीं। यों सुखदेव दल के सभी साथियों की आराम और तकलीफ के लिए काफी परेशान रहता था। लेकिन ऊपर से ऐसा रवैया 'कुछ परवाह नहीं' या 'मेरी बला से' का होता। अधिकांश साथी भी उसकी इस आदत से वाकिफ थे और इसीलिए उसके जिद्दी, झक्की होने के बावजूद कुछ को छोड़ कर बाकी सब का लगाव अन्त तक उससे बना रहा।

दल में आने के बाद से पार्टी की भलाई और आदर्श की पूर्ति इन दो के सामने, दूसरे भावों को उसने एक क्षण के लिए भी ऊपर स्थान नहीं दिया। आराम-तकलीफ, खाने-पहनने का शौक, प्यार-मुहब्बत, दोस्तों के लिए लगाव आदि मनुष्य की स्वाभाविक प्रवृत्तियाँ सुखदेव में भी थीं लेकिन उसके जीवन में इन सबका स्थान आदर्श के नीचे था।

व्यक्तिगत तौर पर उसे सबसे अधिक ममता थी भगतसिंह के प्रति। प्यार नाम की जो भी पूँजी उसके पास थी वह सारी की सारी उसने भगतसिंह को ही सौंपी थी। जब कभी आगरे या ग्वालियर में सुखदेव आ जाता, ये दोनों एक दूसरे से ऐसे लिपटते मानो कोई और हो ही नहीं। एक कोने में बैठकर बातें करने में वे रातें गुजार देते। राजनीतिक सिद्धान्तों से लेकर पंजाब की अलग-अलग पार्टियों के अलग-अलग नेताओं और कार्यकर्त्ताओं की गतिविधि आदि सब पर टीका-टिप्पणी होती और समय आने पर आदर्श के लिए अपने इसी सबसे प्यारे दोस्त को मौत के मुँह में भेजने में उसे संकोच नहीं हुआ।

दल की केन्द्रीय समिति की जिस बैठक में दिल्ली असेम्बली में बम फेंकने का निश्चय किया गया उसमें सुखदेव नहीं था। भगतसिंह का आग्रह था कि इस काम के लिए उसे अवश्य भेजा जाये, लेकिन बाकी सदस्यों ने उसकी यह बात नहीं मानी। उस समय साण्डर्स की हत्या के सिलसिले में पंजाब की पुलिस भगतसिंह की तलाश में थी। उसके पकड़े जाने के मानी थे फाँसी। समिति ने भगतसिंह की बात न मानकर दूसरे दो साथियों को भेजने का निश्चय किया। दो-तीन दिन बाद जब सुखदेव आया तो उसे हमारे निश्चय का पता चला तो उसने उसका सख़्त विरोध किया। उसका कहना था कि पकड़े जाने के बाद अदालत के मंच पर दल के सिद्धान्त, आदर्श, उद्देश्य और बम-विस्फोट के राजनीतिक महत्त्व को भली प्रकार भगतसिंह ही रख सकता है। इस सम्बन्ध में केन्द्रीय समिति की बैठक से पहले उसकी और भगतसिंह की बात भी हो चुकी थी और उसने भगतसिंह से आग्रह किया कि वह स्वयं इस काम को करे। जब केन्द्रीय समिति के दूसरे सदस्यों से वह अपनी बात न मनवा सका तो उसने भगतसिंह को अलग ले जाकर बात की।

उसके व्यवहार में बड़ी कठोरता थी। बातों-बातों में उसने भगतसिंह को काफी सख़्त बातें भी कह डालीं-"तुममें अहंकार आ गया है, तुम समझने लगे हो कि तुम्हारे ही सिर पर दल का सारा दारोमदार है, तुम मौत से डरने लगे हो, कायर हो", आदि। उसका तर्क था, "जब तुम मानते हो कि तुम्हारे सिवा कोई दल के उद्देश्य को अच्छी तरह नहीं रख सकेगा तो फिर तुमने केन्द्रीय समिति को यह फैसला क्यों लेने दिया

कि तुम्हारे स्थान पर और कोई बम फेंकने जायेगा?"

उसने भाई परमानन्द के बारे में लाहौर हाईकोर्ट के शब्दों का भी जिक्र किया कि दल का मस्तिष्क और सूत्रधार होते हुए भी व्यक्तिगत तौर पर यह व्यक्ति कायर है और संकट के कामों में दूसरों को आगे झोंक कर अपने प्राण बचाता रहा है। "तुम्हारे लिये भी एक दिन वैसा ही फैसला लिखा जायेगा।" उसने भगतसिंह की ओर घूरते हुए कहा।

भगतसिंह ने जितना ही सुखदेव के आरोपों का प्रतिरोध किया वह उतना ही कठोर होता गया। भगतसिंह के यह कहने पर कि तुम मेरा अपमान कर रहे हो उसने कठोर शब्दों में उत्तर दिया-"मैं अपने मित्र के प्रति अपना कर्त्तव्य पूरा कर रहा हूँ।" अन्त में भगतसिंह यह कहकर उठ पड़ा कि, "आगे से तुम मुझसे कभी बात न करना।"

भगतसिंह के आग्रह पर केन्द्रीय समिति की बैठक फिर से बुलायी गयी। सुखदेव केवल बैठा रहा। बोला एक शब्द नहीं। भगतसिंह की जिद के सामने समिति को अपना फैसला बदलना पड़ा। सुखदेव उसी शाम को किसी से बात किये बगैर लाहौर चला गया। दुर्गा भाभी के कथनानुसार दूसरे दिन जब वह लाहौर पहुँचा तो उस समय भी उसकी आँखें बहुत सूजी हुई थीं। शायद वह बहुत रोया था। उस दिन उसने किसी से बात नहीं की। इस सारे नाटक में दूसरे के सामने उसने न कोई कमजोरी दिखलायी और न एक आँसू बहाया लेकिन अन्दर से वह काफी हिल गया था। उसने ध्येय की पूर्ति में अपनी सबसे प्रिय वस्तु की बाजी लगा दी थी। सुखदेव को भगतसिंह से कितना

---

1. यह उद्धरण 10 अप्रैल, 1931 के 'वन्देमातरम' में प्रकाशित सुखदेव के एक लेख से लिया गया है। लेख का शीर्षक था 'सरदार भगतसिंह-अपने शहीद साथी सुखदेव की नज़रों में।' इस लेख को प्रकाशित करते हुए वन्देमातरम् के सम्पादक ने लिखा था कि असेम्बली में बम फेंकने के बाद और सरदार भगतसिंह और दत्त को गिरफ़्तार करने के बाद लाहौर पुलिस ने कश्मीर बिल्डिंग पर छापा मारा। मि. सुखदेव और उनके रूपकार को गिरफ़्तार कर लिया। चन्द हफ्तों बाद तमाम हसाद जेल भेज दिये गये। मि. सुखदेव ने इन दिनों जेल में अपने रफीक सरदार भगतसिंह के मुतालिक जबर्दस्त आर्टिकल लिखा था जो मसलहते वक़्त के ख़ातिर हमने इस वक़्त तक रोक रखा था। आज हम इसे नाज़रीन के मुतालिया के लिए पेश करते हैं।

-एटीडर 'वन्देमातरम्' उर्दू

2. बाहरी
3. लगाव
4. अलगाव
5. खुशी

लगाव था इसका अनुमान नीचे दिये गये उसके अपने ही शब्दों से लगाया जा सकता है। भगतसिंह की गिरफ़्तारी के बाद अपनी मनःस्थिति का वर्णन करते हुए उसने लिखा था :

"इस रोज के वाकया (इशारा हादसा असेम्बली बम केस की ओर था) ने मेरी रुहानी[1] जिन्दगी में इन्कलाब पैदा कर दिया। आलम मुझे सुनसान नजर आने लगा। बहरूनी[2] दुनिया के मजे मुझसे दूर भाग गये और मैं कहने लगा कि अब मेरा कोई नहीं रहा, जो मेरा था वह चला गया, जो रह गया वह काम है। उसमें इगानियत[3] और आकवत[4] नहीं है। मैं बातें करता था लेकिन दिल किसी और ख़्याल में मेहब था। मैं हँसता था लेकिन इस हँसी में मुसर्रत[5] जरा भी नहीं थी, मैं काम में लगा रहता था एक इन्सान की शक्ल में नहीं बल्कि एक मशीन के मानिन्द। ऐसा महसूस होता है कि मेरा जो कुछ था वह मुझसे छिन चुका है। अब मेरे पास कुछ नहीं रहा। मुझे इल्म था कि मेरी ख्वाहिश से ही वह गया। मैंने खुद उसे चले जाने को कहा था। मेरी अक्ल बार-बार मुझे यह समझाने की कोशिश करती थी लेकिन जब मैंने अपनी इन आँखों से उसे जाते हुए देखा था जब वह मुझसे जुदा हो रहा था। वह मेरा नहीं था। हम दोनों वतन के थे, दुनिया के थे, इसलिए मैंने उसे चले जाने के लिए कहा था और वह चला गया। मुझे अब मालूम हुआ कि वह मेरा था, मैं उसका हूँ। मैं उससे तर्क नहीं कर सकता, अपने से दूर नहीं कर सकता, लेकिन वह तो चला गया। बहुत फासला पर इतने फासले पर जहाँ मेरी रसाई नहीं हो सकती न अब वो ही वापस आ सकता है। इस फिकर ने मुझे दिलवदसिता[1] कर दिया और मेरा दिल उसकी तलाश में मेहब[2] हो गया। आँखों के सामने उसकी तस्वीर हमेशा फिरने लगी, जिस्म बेहिस-बेहरकत हो गया। उठते-बैठते, चलते-फिरते हर वक्त उसकी याद और उसका ध्यान रहता। हर चीज में, हर इन्सान में, हर जगह आँखों के सामने वह नजर आने लगा। कई बार ऐसा महसूस हुआ कि वह मुझे बुला रहा है और मैं चौंक उठता लेकिन उसकी शक्ल नजर न आती। जिधर निगाह उठती उसका ख़ूबसूरत चेहरा, मस्त आँखें, फानूस[3] ख़्याल की मानिन्द घूमती दिखायी देतीं। मेरी मोहब्बत-मैंने सोचा कि यह बेवकूफी है, लेकिन नहीं, एक नशा था, एक दीवानगी थी, मोहब्बत थी, जिसे मैंने उस वक्त समझा जब मैं पुलिस की हवालात

---

4. निराश
5. विचारों में डूब जाना
6. जगमगाते हुए
7. शून्य

में गिरफ़्तार था। मेरी गिरफ़्तारी के कुछ रोज बाद एक डी.एस.पी. मेरे पास पहुँचा। थोड़ी देर बातें करने के बाद उसने मुझे बताया कि वह दिल्ली से आया है। दिल्ली से! ये अल्फाज सुनते ही मेरे दिल के तार बजने लगे। दिल्ली से! उसके पास से! मैंने दरियाफ्त किया, कब आये, उससे मिले थे, उसके क्या हाल हैं? खुश है? तन्दुरुस्त है? इतना कहते-कहते मेरा दिल भर आया। मेरे ख़्वाबदीदा जज्बात ने बेदार होकर जोकि चन्द घड़ी पहले खामोश था, महेशरस्तान[4] बना दिया। मैं फूट-फूट कर रोने लगा। वह खुश है, बहुत अच्छा है। इन्हीं अल्फाज की रट मैं दिल में लगाने लगा। अपनी हालत का ख़्याल छोड़, लोहे के दरवाजे पर सिर रखकर हिचकियाँ लेकर रोने लगा। उसकी मस्त आँखें मुझसे मोहब्बत भरी निगाहों से ताकने लगीं। मेरा रोना बन्द हो गया। मैं भी दीवानावार उसकी तरफ टिकटिकी लगाकर देखने लगा। उसके बाद उस डी.एस.पी. ने मुझे दुबारा इस बारे में कुछ नहीं कहा और न ही मैंने कुछ पूछा। इस ख़्याल से कि अवाम में उसकी चर्चा हो जाये, मुझे शर्म महसूस होने लगी। लेकिन शर्म अब कसूरवार की शर्म नहीं थी। बुजदिल की शर्म नहीं थी। मेरी फितरती कमजोरी के एक नावाकिफ शख्स पर जाहिर हो जाने पर वह शर्म थी। वह नावाकिफ शख़्स जो मुझे अपने जिस्म के मानिन्द मालूम होता था। उसी पुलिसवाले के सामने मैं रो दिया। किसी का जिक्र करके वह क्या सोचता होगा। आदमी होकर, इन्कलाब पसन्द होकर पुलिसवालों की मौजूदगी में मेरे लिये यह गैरमुनासिब था। इस वक्त मुझे अपने जज्बात पर काबू हासिल करना चाहिये था। मैंने बहुत बुरा किया। इसके बाद मैंने पुलिसवालों से ज्यादा बातचीत करना तर्क कर दिया। मैं हर वक्त लेटा रहता था और उसकी याद में महब रहता था। उसका ख़्याल रह-रहकर दिल में चुभता। उसकी मस्त आँखें हर वक्त मेरी निगाहों के सामने रक्स करती रहतीं। कई बार मैं घुटनों में मुँह दबाकर बेसाख़्ता रोने लगता। रोते हुए सोचता कि मुझे क्या हो गया, मैं तो उस तरह कभी रो नहीं दिया था।"

भगतसिंह के मुकाबले सुखदेव कम पढ़ता-लिखता था लेकिन उसकी स्मरण-शक्ति काफी तेज थी। आमतौर पर दर्शन या सिद्धान्त की जिन पुस्तकों को दूसरे साथी हफ़्तों में समाप्त कर पाते सुखदेव उन्हें दो दिन में ही पढ़ लेता। नोट्स उसने कभी नहीं बनाये, फिर भी सरसरी निगाह से पढ़ी पुस्तकों के विस्तृत उद्धरण महीनों बाद भी उससे पूछे जा सकते थे। जेल के साथियों में भगतसिंह के बाद समाजवाद पर सबसे अधिक अगर किसी साथी ने पढ़ा और मनन किया था तो वह सुखदेव था।

सुखदेव के क्रान्तिकारी जीवन का सबसे बड़ा कलंक है गिरफ़्तारी के बाद पुलिस के सामने उसका बयान दे देना। यहाँ भी उसकी भावनाओं को ठीक तरह से समझने

की कोशिश न करके साथियों ने उसके ऊपरी व्यवहार को ही अधिक महत्त्व दिया। और कुछ भी हो एक बात साधिकार कही जा सकती है कि मौत का डर अन्त तक एक क्षण के लिए भी उसके पास नहीं फटका और न ही साहस में वह किसी से पीछे रहा।

उसका बयान देना गलत था, इसमें दो मत नहीं हो सकते और उससे और कुछ नहीं तो दल की प्रतिष्ठा को काफी आघात तो पहुँचा ही। लेकिन यह बयान उसने अपनी बचत के ख़्याल से या दल को नुकसान पहुँचाने के ख़्याल से नहीं दिया। उसने उन्हीं मकानों और स्थानों का पता बतलाया जिनके बारे में उसे पता था कि वे छोड़े जा चुके हैं। सहारनपुर के जिस मकान में मैं, डॉ. गयाप्रसाद और जयदेव रह रहे थे उसका पता दो ही व्यक्ति जानते थे, सुखदेव और फणीन्द्र। सुखदेव चाहता तो हमारा पता देकर पुलिस को अपनी सच्चाई का इत्मीनान दिला सकता था। लेकिन उसने ऐसा नहीं किया। हम सहारनपुर के मकान में उस समय तक रहते रहे जब तक फणीन्द्र नहीं पकड़ा गया। इसी प्रकार उसने किसी व्यक्ति का असली नाम और पता भी पुलिस को नहीं दिया। बयान के पीछे भावना थी-हाँ, हमने यह सब किया। अब तुम जो चाहो कर लो। उसके बयान ने स्वयं उसे ही सबसे अधिक नुकसान पहुँचाया।

केस के दौरान सफाई आदि के सवाल पर भी वह सब से अधिक उदासीन रहा। वह केस की पैरवी में उसी हद तक भाग लेने का पक्षपाती था जिस हद तक अदालत के मंच को क्रान्तिकारी आदर्शों के प्रचार के साधन के रूप में इस्तेमाल किया जा सके। शत्रु की अदालत से न्याय की आशा रखना वह नादानी समझता था। शत्रु पक्ष के किसी कर्मचारी से, चाहे वह अदालत का हो, चाहे पुलिस का, चाहे जेल का, न तो उसने सौजन्यता की आशा की और न स्वयं ही व्यवहार में उनके प्रति सौजन्यता बरती। उसका असली रूप उस समय देखने में आता था जब कभी पुलिस या जेल वालों से मारपीट होती। हँस-हँसकर मारने और मार खाने में उसे मजा आता था।

सुखदेव को क्रान्तिकारियों के उद्देश्य की सफलता पर कितना अडिग विश्वास था इसका प्रमाण फाँसी से कुछ ही पहले गांधी जी के नाम लिखा उसका पत्र है। क्रान्तिकारियों से आन्दोलन स्थगित कर देने की अपील का उत्तर देते हुए उसने लिखा-"क्रान्तिकारियों का ध्येय इस देश में सोशलिस्ट प्रजातन्त्र प्रणाली स्थापित करना है। इस ध्येय में संशोधन के लिए जरा भी गुंजाइश नहीं है। ...मेरा ख़्याल है... आपकी भी यही धारणा न होगी कि क्रान्तिकारी तर्कहीन होते हैं और उन्हें केवल विनाशकारी कार्यों में ही आनन्द आता है। हम आपको बतला देना चाहते हैं कि यथार्थ में बात इसके बिल्कुल विपरीत है। वे प्रत्येक कदम आगे बढ़ाने से पहले अपने चारों ओर की

परिस्थितियों पर विचार कर लेते हैं। उन्हें अपनी जिम्मेदारी का ज्ञान हर समय बना रहता है। वे अपने क्रान्तिकारी विधान में रचनात्मक अंश की उपयोगिता को मुख्य स्थान देते हैं, यद्यपि मौजूदा परिस्थितियों में उन्हें केवल विनाशात्मक अंश की ओर ही ध्यान देना पड़ा है।

"...वह दिन दूर नहीं है जबकि उनके (क्रान्तिकारियों के) नेतृत्व में और उनके झण्डे के नीचे जन-समुदाय उनके समाजवादी प्रजातन्त्र के उच्च ध्येय की ओर बढ़ता हुआ दिखायी पड़ेगा।"

इसी पत्र में एक अन्य स्थान पर अपनी फाँसी की सजा के बारे में उसने लिखा-"लाहौर षड्यन्त्र के तीन राजबन्दी, जिन्हें फाँसी देने का हुक्म हुआ है और जिन्होंने संयोगवश देश में बहुत बड़ी ख्याति प्राप्त कर ली है, क्रान्तिकारी दल के सब कुछ नहीं हैं। वास्तव में इनकी सजाओं को बदल देने से देश का उतना कल्याण न होगा, जितना इन्हें फाँसी पर चढ़ा देने से होगा।"

ऐसा था सुखदेव-फूल से भी कोमल और पत्थर से भी कठोर। डर जिसके पास कभी नहीं फटका और शत्रु के साथ समझौते की बात जिसने एक क्षण के लिए भी नहीं सोची। लोगों ने उसकी कठोरता ही देखी और उसे न समझ पाकर उस के साथ अन्याय भी किया। लेकिन उसने कभी इसकी शिकायत नहीं की। अपनी कोमल भावनाओं को, प्यार और ममता को निजी चीज समझ कर अन्त तक वह उन्हें अपने अन्दर ही छिपाये रहा।

शहीद सुखदेव के क्रान्तिकारी जीवन का संक्षिप्त परिचय

शहीद सुखदेव, राजगुरु और भगतसिंह भारतीय राष्ट्रीय नायकों में से वह चमकते सितारे हैं, जिनका कठिन श्रम, आजादी का जज्बा और बेमिसाल कुर्बानी प्रत्येक भारतीय के मन को झकझोर देती है। बेशक भारत के प्रत्येक कोने में गाँधी की अहिंसावादी विचारधारा का प्रचार किया जाता है, परन्तु क्रान्तिकारी नौजवानों की निडर लड़ाई को भी पूर्ण मान्यता प्राप्त हुई है। बेशक कई कारणों से इन क्रान्तिकारी युवकों की तीक्ष्ण 'वैज्ञानिक विचारधारा' वर्तमान भारत में भी लोगों तक नहीं पहुँच सकी और इन्हें केवल बमों और कत्लों तक ही सीमित रखा है परन्तु फिर भी वे हमारे राष्ट्रीय इतिहास में महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं। उन्होंने भारत और सम्पूर्ण संसार से क्रान्तिकारी अनुभव प्राप्त कर और वैज्ञानिक क्रान्तिकारी विचारधारा के धरातल पर 'हिन्दुस्तानी समाजवादी प्रजातांत्रिक सेना' का गठन कर, भारतीयों को अंग्रेजी साम्राज्य से आजाद करवाकर, समाजवादी पथ पर नये भारत के सृजन का उद्देश्य रखा। शहीद सुखदेव इस पार्टी के पंजाब प्रान्त के मुख्य संगठनकर्त्ता थे और उन्होंने अपनी पार्टी के उद्देश्यों के लिए हँस-हँस कर फाँसी के रस्से को चूमा। आज पंजाब के शहर लुधियाना के रेलवे स्टेशन के पास, ऊँचे पुल के ऊपर, देश के लिए जान न्योछावर कर गये क्रान्तिकारी नौजवानों (युवकों) सुखदेव, राजगुरु और भगतसिंह की मूर्तियाँ बनायी गयी हैं। परन्तु इन मूर्तियों के इर्द-गिर्द घूम रहे असंख्य भारतीयों को यह भी पता नहीं कि इस स्थान से केवल दो किलोमीटर दूर शहीद सुखदेव का ऐतिहासिक जन्म-स्थान, समय की सरकारों की बेरुखी का शिकार होने के कारण खस्ताहाल है। चौड़े बाजार के भीतर, खुशीराम हलवाई वाले चौक की बायीं ओर थापरों का 'मुहल्ला नौघरा' आज भी आबाद है। इस मुहल्ले में प्रवेश करते ही, बायीं ओर वाले घर के पिछले कमरे के भीतर, 15 मई 1907 को पिता श्री रामलाल थापर के घर, माता रली देवी ने उस शूरवीर पुत्र को जन्म दिया, जिसने अंग्रेज साम्राज्य के मजबूत स्तम्भों को हिलाकर, भारतीयों की मुक्ति के लिए राह साफ की। इस पुत्र का नाम 'सुखदेव' रखा गया जिसने भारतीय लोगों की तकदीर

बदलने का संकल्प कर, नौघरे से फाँसी तक का संक्षेप सा जीवन-पथ, शान से तय किया।

पिता श्री रामलाल थापर व्यवसाय के सिलसिले में अकेले लायलपुर रहते थे, परन्तु सुखदेव के जन्म के बाद वह परिवार को अपने साथ ही लायलपुर ले गये। सुखदेव ने अभी तुतलाना शुरू ही किया था कि उनके पिता जी 1910 में चल बसे। ताया लाला चिन्तराम ने सुखदेव को बचपन से लेकर फाँसी पर झूल जाने तक पिता का असीम प्यार दिया, बेशक वह भी स्वतंत्रता संग्राम के शूरवीरों की अग्रिम पंक्ति में कार्यरत थे। ताया जी की छत्र-छाया में ही बालक सुखदेव के मन में देश की आजादी की भावना पनपने लगी थी।

सुखदेव अपनी प्रारम्भिक शिक्षा के लिए लायलपुर के सनातन धर्म हाई स्कूल में पढ़ता रहा। 13 अप्रैल 1919 को जालियाँवाले बाग के काण्ड के बाद पंजाब में 'मार्शल लॉ' लगाकर फौज और पुलिस तैनात कर दी गयी। भारतीय लोगों और बच्चों को मानसिक रूप से गुलाम बनाये रखने के लिए स्कूलों में अंग्रेज अफसरों द्वारा सलामी लेने का सिलसिला शुरू किया गया। सुखदेव के स्कूल में भी सरकारी आदेशों के अनुसार, सभी विद्यार्थियों को हर सुबह अंग्रेज अफसरों को सलामी देने के लिए कहा गया। परन्तु सुखदेव ने जो अभी केवल बारह वर्षों का था, ऐसा करने से साफ इनकार कर दिया, जिस कारण उसे अध्यापकों और पुलिस अफसर की मार खानी पड़ी। सुखदेव देश प्रेम और राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा करता हुआ मार खाता रहा परन्तु उसे झुकना मंजूर न था। आखिर जितने दिन स्कूल में सलामी का सिलसिला चला उतने दिन वह स्कूल न गया। सुखदेव जहाँ अपने आदर्शों के लिए दृढ़ प्रतिज्ञ था, वहीं सामाजिक भेद-भाव के प्रति संवेदनशील था। उस समय छूआछूत का चलन होने के कारण उसके स्कूल में भी दलित छात्रों को दाखिला नहीं दिया जाता था। इस बात का जब उसे पता चला तो उसका बाल मन बहुत दुखी हुआ और 15-16 वर्ष का सुखदेव पास के गाँव 'हरचरणसिंहपुरा' में दलित बच्चों को ज्ञान की रोशनी बाँटने जाने लगा, यह सिलसिला उसके लाहौर जाने तक चलता रहा।

स्वतंत्रता संग्राम के साथी होने के कारण लाला चिन्तराम और किशनसिंह, का एक-दूसरे के घर आना जाना था। क्योंकि वह भी उन दिनों लायलपुर जिले के गाँव बंगा चक्क नं. 105 जी. बी. में रह रहे थे। जब भी स. किशनसिंह, लाला जी के घर आते तो उनके साथ छोटा-प्यारा-सा पुत्र भगतसिंह भी होता था। बड़े अपनी बातों में लीन हो जाते और हमउम्र सुखदेव और भगतसिंह कुछ न कुछ खेलते रहते। वहाँ से शुरु हुए उन दोनों के पैरों के निशान फाँसी के तख्ते तक साथ ही रहे।

1922 ई. में सनातन धर्म हाई स्कूल से दसवीं पास करने के बाद सुखदेव को आगे की पढ़ाई के लिए लाहौर जाना पड़ा। उसने हठ कर अपनी आगे की पढ़ाई के

लिए नेशनल कॉलेज लाहौर ही चुना जो लाला लाजपतराय द्वारा स्थापित किया गया था ओर देश-भक्तों की कार्यवाहियों का केन्द्र बना हुआ था। सुखदेव से एक साल बाद भगतसिंह भी इसी कॉलेज में दाखिल हो गया। इस कॉलेज के पुस्तकालय में बहुत सा क्रान्तिकारी साहित्य रखा हुआ था जिसमें अध्ययन के साथ-साथ आजादी के बारे में भी विचार-विमर्श होता रहता था। ऐसे वातावरण में सुखदेव के कमरे में भी राजनीति, समाजवाद और इन्कलाबी इतिहास से सम्बन्धित बहुत सी पुस्तकें होतीं। फ्रांस, रूस और अन्य देशों के क्रान्तिकारी साहित्य का सुखदेव, भगतसिंह और अन्य साथी गहन अध्ययन करते रहते। दोनों एक किताब पढ़कर, वजनदार तर्कों से वाद-विवाद करते। उनका मनपसन्द विषय समाजवाद था। उनके इतिहास के प्राध्यापक 'जयचन्द्र विद्यालंकार' के माध्यम से उनका परिचय बंगाल के क्रान्तिकारियों से हुआ।

1926 में सुखदेव, भगतसिंह और भगवतीचरण वोहरा ने अपने और साथियों को साथ लेकर लाहौर में 'नौजवान भारत सभा' के नाम का संगठन कायम किया। जिसका उद्देश्य विज्ञापनों, भाषणों और सभाओं द्वारा क्रान्तिकारी विचारों को जन समूह तक पहुँचाना और फैलाना था। सुखदेव इस सभा के मुख्य कार्यकर्त्ताओं में से थे। नौजवान भारत सभा का घोषणा-पत्र, उनकी वैज्ञानिक परिपक्वता का प्रत्यक्ष प्रमाण था, जिसमें उन्होंने इन्कलाव के अर्थों, योजना और सार्वजनिक चेतना फैलाने के तरीकों को बड़े स्पष्ट शब्दों में रखा।

'नौजवान भारत सभा' की ओर से पहली बार 'करतार सिंह सराभा' की शहादत को बड़ी धूम-धाम से ब्रैडले हॉल में मनाया गया जबकि यह उस समय बड़ा महत्त्वपूर्ण और मुश्किलों भरा काम था।

8-9 सितम्बर 1928 कों सुखदेव, भगतसिंह और साथियों ने बड़ी मेहनत से दिल्ली के कोटला फिरोजशाह किले के खण्डहरों में क्रान्तिकारियों की एक गुप्त मीटिंग बुलायी। इसमें केन्द्रीय कमेटी का गठन किया गया और पार्टी का नाम 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी' रखा गया। सुखदेव को पंजाब राज्य में पार्टी का मुख्य संगठनकर्त्ता नियुक्त किया गया। सुखदेव अपने दल में अनुशासन को सबसे अधिक महत्त्व देते और नये सदस्यों की भर्ती गम्भीरता से जाँच परख करने के बाद ही करते।

1928 में 'साइमन कमीशन' का विरोध करते हुए लाला लाजपतराय पुलिस की मार की वजह से शहीद हो गये। देश में निराशा और बेबसी की लहर दौड़ गयी। इस राष्ट्रीय अपमान का बदला लेने के लिए 17 दिसम्बर 1928 को क्रान्तिकारियों ने इसके जिम्मेवार (दोषी) अंग्रेज अफसर सॉण्डर्स को मार गिराया। इस कार्रवाई से लोगों में आजादी की लड़ाई के लिए उत्साह और क्रान्तिकारियों के लिए सम्मान बढ़ गया परन्तु गुप्त कार्रवाइयों की वजह से अभी भी क्रान्तिकारियों का संकल्प और विचारधारा लोगों तक नहीं पहुँच रही थी। अंग्रेज सरकार ने भगतसिंह, राजगुरु, चन्द्रशेखर आजाद और

सुखदेव की गिरफ्तारी के लिए वारण्ट निकाल दिये। बेशक सुखदेव का इस कत्ल से सीधा सम्बन्ध नहीं था, परन्तु पार्टी का मुख्य संगठनकर्त्ता होने के कारण उसे ही मुख्य अभियुक्त बनाया गया।

1929 में अंग्रेजों ने 'औद्योगिक व्यापार कानून' और 'लोक सुरक्षा कानून' जैसे काले दमनकारी कानून बनाकर भारतीय श्रमिकों, और मजदूर संगठनों को दबाने का प्रयत्न किया। इन काले कानूनों के विरुद्ध संगठनों को दबाने का प्रयत्न किया। इन काले कानूनों के विरुद्ध आवाज उठाने के लिए और क्रान्तिकारी विचारधारा लोगों तक पहुँचाने के लिए पार्टी ने असेम्बली में बम धमाका कर गिरफ्तार हो जाने और बयानों के माध्यम से क्रान्तिकारी प्रोग्राम लोगों तक पहुँचाने का फैसला किया। इस कार्य के लिए पार्टी ने भगतसिंह के नाम पर विचार करने से इनकार कर दिया क्योंकि वह सॉण्डर्स कत्ल केस में पहले ही भगोड़ा घोषित किया हुआ था परन्तु सुखदेव चाहता था कि इस काम के लिए भगतसिंह ही जाये क्योंकि वह क्रान्तिकारी प्रोग्राम की प्रभावशाली ढंग से व्याख्या कर सकता था। सुखदेव के तर्कों के आधार पर पार्टी ने फैसला लिया और भगतसिंह तथा बी. के. दत्त को यह कार्यभार सौंप दिया गया। सुखदेव को यह अच्छी तरह पता था कि वह अपने प्यारे साथी भगतसिंह को मौत के मुँह में भेज रहा है परन्तु उसने आदर्शों की प्राप्ति के लिए यह कुर्बानी देने से संकोच न किया, बेशक रो-रो कर अपनी आँखें सुजा लीं।

8 अप्रैल 1929 को इम्पीरियल असेम्बली दिल्ली में भगतसिंह और बी. के दत्त ने बम विस्फोट करने के बाद गिरफ्तारी देते हुए 'इन्कलाब जिन्दाबाद' का नारा लगा कर, अंग्रेज सरकार की जड़ें हिला दीं। असेम्बली में लाल रंग के पर्चे फेंके गये जिन पर लिखा हुआ था, "बन्द कानों को सुनाने के लिए धमाके की जरूरत होती है।"

इसके बाद पुलिस ने 15 अप्रैल 1929 की सुबह, लाहौर की 'कश्मीर बिल्डिंग' पर छापा मारकर सुखदेव, किशोरी लाल और जयगोपाल को गिरफ्तार कर लिया। पुलिस को देखते ही सुखदेव ने पार्टी के गुप्त कागज मुँह में डाल कर निगल लिये। बेशक सूखा कागज गले में चिपकने के कारण उसकी हालत बिगड़ गयी। सुखदेव ने कागज निकालने की निसबत पानी की माँग की, जिसे पीकर उसकी हालत बिलकुल ठीक हो गयी।

12 जून 1929 को असेम्बली बम काण्ड का फैसला अंग्रेज हुकूमत ने सुना दिया और भगतसिंह तथा बी.के. दत्त को उम्रकैद की सजा हो गयी। दोनों को पहले दिल्ली से मियांवाली (पाकिस्तान) और फिर केन्द्रीय जेल लाहौर भेज दिया गया, जहाँ सुखदेव और अन्य कई साथी पहले से ही बन्द थे। 10 जुलाई 1929 को जेल के अन्दर ही 'लाहौर षड्यंत्र केस' की कार्यवाही शुरू हुई जिसमें 24 व्यक्ति सम्मिलित थे। इस केस का मुख्य अभियुक्त सुखदेव को ही बनाया गया क्योंकि पार्टी का मुख्य संगठनकर्त्ता

होने के कारण सभी इन्कलाबी कार्रवाइयों के पीछे सुखदेव का दिमाग ही माना गया। इसीलिए यह केस 'सरकार बनाम सुखदेव' के नाम से चला।

जेलों में राजनीतिक कैदियों की बुरी दशाओं के विरुद्ध क्रान्तिकारियों ने सुधारों के लिए लम्बी भूख हड़तालें चलायीं। जून 1929 में भूख हड़ताल शुरू हुई और सुखदेव इसके पक्ष में न होते हुए भी बाकी साथियों के सहयोग के लिए इसमें सम्मिलित हुआ। 13 नवम्बर 1929 को भूख हड़ताल के कारण 'जतीन्दनाथ सान्याल' की शहादत के बाद कुछ शर्तें मान ली गयीं, जिससे किताबें पढ़ने, नोटिस बनाने और लिखने का अधिकार राजनीतिक कैदियों को मिल गया। इसके बाद उन्होंने जेल को पुस्तकालय और अध्ययन के लिए कर्मभूमि बना लिया। भारत में इन्कलाब की मुश्किलों को सुलझाते और इन्कलाबी मार्ग-दर्शन के लिए उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को अर्पित कर दिया। उन्होंने न्यायालय में बयान देने, साथियों को पत्र लिखने और लेखन कार्य में प्रत्येक भारतीय के लिए आजाद, शोषणरहित समाज बनाने और इन्कलाब का उद्देश्य समझाने के लिए पूर्ण कोशिश की। उन्होंने 2 फरवरी 1931 में 'क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा' की रूपरेखा जैसे महत्त्वपूर्ण दस्तावेज जेल में से ही तैयार कर बाहर वाले इन्कलाबियों को भेजे। सभी दस्तावेजों के द्वारा सुखदेव और साथियों ने उस समय की राजनीति का विश्लेषण करते हुए गांधीवाद और कांग्रेस के आडम्बरों को बेनकाब किया और इसे केवल सत्ता के तबादले की राजनीति बताया और ख्याली हवाई किले 'राम-राज्य' की अवैज्ञानिक सोच को नंगा किया। उन्होंने भारतीय समाज में आमूलचूल परिवर्तन कर मनुष्य के द्वारा मनुष्य की लूट और शोषण को समाप्त कर समाजवादी प्रजातंत्र की नींव पर आजाद भारत के निर्माण का सन्देश दिया।

7 अक्टूबर 1930 को 'लाहौर षड्यंत्र केस' का निर्णय सुनाया गया। इसमें भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फाँसी और अन्य साथियों को 'काले पानी' में उम्र कैद घोषित हुई। यह निर्णय सुनते ही सम्पूर्ण भारत में हड़तालें, प्रदर्शन और जलसे-जुलूस आदि होने लगे। कलकत्ता में एक विरोध प्रदर्शन के दौरान पुलिस की गोली से 141 लोग मारे गये, 386 घायल और 341 लोग गिरफ्तार हुए। बम्बई, मद्रास में भी कई जगह प्रदर्शन हुए। कराची रेलवे स्टेशन पर प्रदर्शनों के दौरान 'गांधी मुर्दाबाद' के नारे भी लगाये गये। मार्च 1931 में सुभाष चन्द्र बोस ने दिल्ली में एक बड़े सम्मेलन को सम्बोधित करते हुए क्रान्तिकारियों की सजाएँ कम करने की माँग की। बहुत से देशभक्तों ने पुनर्विचार की प्रार्थना करनी चाही परन्तु क्रान्तिकारियों ने ऐसा करने से साफ इनकार कर दिया, बल्कि फाँसी लगने से कुछ दिन पहले सुखदेव, भगतसिंह और राजगुरु ने पंजाब के गवर्नर को एक साझा पत्र लिखकर, युद्धबन्दियों की तरह 'फाँसी के स्थान पर गोली से उड़ा देने' की माँग की और अपने समाजवादी प्रजातंत्र के उद्देश्य के लिए जारी युद्ध के और भी अधिक जोश, अधिक निडरता, बहादुरी और दृढ़ इच्छा

शक्ति से चलते रहने की घोषणा की।

23 मार्च 1931 को भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु को फाँसी दे दी गयी। शारीरिक रूप से भारत के करोड़ों लोगों से उन्हें अलग कर दिया गया; परन्तु उनकी विचारधारा, उनका सन्देश आज भी शोषण और दमन का शिकार हो रही भारतीय जनता को, मनुष्य के हाथों मनुष्य की लूट को खत्म कर, समानता पर आधारित नया समाज बनाने के लिए प्रेरित कर रहा है।

- डॉ. हरदीप सिंह

सुखदेव के पत्र

सुखदेव का तायाजी के नाम पत्र[1]

बोर्स्टल, लाहौर

मान्य ताया जी,

दो पत्र पहले लिख चुका हूँ। कोई उत्तर नहीं मिला।

मैं सुन रहा हूँ मेरे कारण आपको बहुत कुछ मानसिक कष्ट उठाना पड़ रहा है इसके पूर्व भी इस ख़्याल से आपको पत्र द्वारा कहने की चेष्टा की है। अब फिर वही कह रहा हूँ।

मैं जानता हूँ कि आपको मेरे स्वभाव [मूलपत्र में 'स्वाभाव' लिखा है।-सं.] के कारण बहुत चिन्तित रहना पड़ता है और मैं यह भी चाहता हूँ कि आपकी यह चिन्ता किसी प्रकार दूर हो जाये। खासकर इन दिनों में जब कि आपके लिए दूसरे कष्ट काफी इकट्ठे हो रहे हैं। परन्तु एक बात मैं आपसे साफ कहना चाहता हूँ। मुझसे कोई बात सिर्फ इसीलिए कि उससे दूसरे खुश होंगे-नहीं हो सकती। दाढ़ी ही की बात लीजिये। भला इससे आपको इतना दुखी होने की क्या आवश्यकता थी। जैसे दाढ़ी-मूँछ कटाना एक फैशन है वैसे ही दाढ़ी रखना भी तो एक फैशन ही है। अब क्या किसी व्यक्ति को इस बारे में भी माता-पिता द्वारा इतना बाध्य होना पड़ेगा और उसे सर, दाढ़ी और मूँछ के बाल अपने माता-पिता की इच्छा पर ही रखाने या कटाने चाहिये। तो क्या वह लोग जो दाढ़ी इत्यादि धर्म अथवा माँ-बाप की खातिर या रूढ़ि को कायम रखने की खातिर रखाते हैं ऐसा करने में (justified) हुए न। मैं नहीं समझता कि आप-जैसे स्वतंत्र विचार रखने वाला पुरुष क्यों अपने पुत्र से ऐसी आशा करता है कि वह मामूली-मामूली बात करने में इस बात का विचार रखे कि उसके वैसा करने से उसका पिता तो बुरा नहीं मानेगा। और वह आदमी आजाद विचारों वाला ही कैसे हो सकता है जो दूसरे व्यक्ति को उसके अपनी इच्छानुसार करने पर बुरा समझे जबकि वह बात कोई ऐसी नहीं है जिसे बुरी दृष्टि से (Morally) देखा जाना चाहिये।

हाँ, एक बात और है, शायद आपका यह विचार होता होगा कि इससे मैं बदसूरत

---

1. बोर्स्टल जेल, लाहौर से ताया श्री चिन्तराम थापर के नाम लिखा पत्र।

मालूम होता हूँ और मैं जान-बूझकर अपनी हालत ज्यादा गन्दी रखना चाहता हूँ, जिसे आप अपने पुत्र के लिए अच्छा नहीं समझते। यदि ऐसा है तो मैं आपको बताना चाहता हूँ कि आपका ऐसा विचार करना भूल है। अपने शरीर की जितनी फिकर मुझे रहती है और देश तथा धर्म की खातिर अपने शरीर को खराब करने के बरखिलाफ जितना मैं हूँ और शायद ही कोई हो। ऐसी अवस्था में मैं नहीं समझता कि आपकी नाराजगी का क्या कारण है।

साथ ही यह बात भी मैं आपके आगे रख देना चाहता हूँ कि मैं इस बात को बहुत बुरा समझता हूँ कि मैं यह कुछ भी करने में सदा इस बात का ध्यान रखूँ कि दूसरे क्या विचार करेंगे और न ही मैं यह अच्छा समझता हूँ कि और कोई मेरे व्यक्तिगत जीवन की बातों में मुझे अपनी इच्छाओं से बाध्य करे। मैं चाहे कोई भी हो-किसी की खातिर अपना व्यक्तित्व खोना नहीं चाहता और फिर ऐसी-ऐसी मामूली बातों की खातिर मैं स्वयं इन बातों से तंग हो जाता हूँ।

दूसरा कारण आपके दुखी रहने का है मेरा आजकल का Attitude ठीक है। माता-पिता के लिए गौरव की बात यही है कि उनका लड़का उनके लिए नेकनामी पैदा करे न कि कलंक। माता-पिता की सदा यह इच्छा रहती है कि उनका लड़का बड़ा नाम कमाये और जीवन के संग्रामों में किसी से भी पीछे न रहे। मैं जानता हूँ आपकी भी ऐसी ही मानसिक अवस्था है और जब आप देखते हैं कि मैं किसी बात में भाग नहीं लेता और हमेशा चुप रहता हूँ तो आपको बहुत दुख होता है। सचमुच, मैं आपसे सच्चे दिल से कहता हूँ, आपको इस बारे में दुखी देखकर मैं स्वयं बहुत दुखी होता हूँ। और क्या कहूँ, मैंने इस कारण से कितने अपनों को नाराज किया है और कितनों की नजर में बुरा बना हूँ। इतना होने पर भी इस बारे में मैं कुछ नहीं कहना चाहता और न सफाई देना चाहता हूँ। पर आपसे यह अवश्य कहूँगा कि आप कभी इन विचारों को लेकर दुखी न हों और मैं क्या करता हूँ और मुझे क्या करना चाहिये, इन बातों पर कभी विचार ही न करना चाहिये।

क्योंकि आपको यकीन करना चाहिये कि मैं आपका पुत्र हूँ। बस यही मेरी सफाई है। इस पर यकीन कीजिये।

क्या मैं आशा कर सकता हूँ कि आप मेरी ओर से निश्चिन्त हो जायेंगे।

आपका पुत्र,

सुखदेव

सुखदेव का अधूरा पत्र

राष्ट्रीय अभिलेखागार, भारत सरकार, नयी दिल्ली के सौजन्य से प्राप्त सुखदेव की यह अपूर्ण, अप्रेषित चिट्ठी सुखदेव के बोर्स्टल जेल से, सेण्ट्रल जेल लाहौर में स्थानान्तरण के समय प्राप्त हुई थी। मूल चिट्ठी पाकिस्तान सरकार के रिकार्ड में है लेकिन इसकी फोटोस्टेट प्रतिलिपि राष्ट्रीय अभिलेखागार में उपलब्ध है।–सं.

7 अक्तूबर, 1930

बिरादरमन,

देर से कुछ भावनाएँ हृदय में उठ रही थीं जिनको कुछ कारणोंवश अब तक दबाये हुए था। किन्तु अब अधिक नहीं दबा सकता। दबा सकता ही नहीं वरन उनको दबाना उचित भी नहीं समझता। कह नहीं सकता मेरे इस प्रकार भाव प्रकट करने को आप अच्छा समझें या बुरा। इनको कुछ महत्त्व दें या नहीं। ये आपके अनुकूल हों या नहीं। आप इनसे सहमत हों या नहीं। लेकिन मैं तो वही कर रहा हूँ जो मुझे उचित मालूम दे रहा है। आप इन्हें ग्रहण करना चाहें करें, यह आपकी इच्छा है। और यदि आप इसका उत्तर देना चाहें तो बड़ी अच्छी बात हो। इससे यह लाभ होगा कि मेरे विचार भी कुछ बसमंत हो जायेंगे और मुझे इस बात की तसल्ली भी हो जायेगी कि जेल की चारदीवारी ने मुझे मेरे ठीक-ठीक judge कर सकने की शक्ति से वंचित नहीं कर दिया और practical life के field से अलग हो जाने पर मैं idle और Vain Schemes के सोचने का आदी नहीं हो गया हूँ।

जब से हम लोग जेल में आये हैं बाहिर का वातावरण बहुत गरम हो रहा है। जहाँ तक actions का सम्बन्ध है, पत्रों द्वारा पता चलता है कि करीब हर एक province में, खासकर पंजाब और बंगाल में तो हद ही हो गयी है। इस पर bomb तो एक साधारण सी बात हो गयी है। बम द्वारा इतने actions हमारे इतिहास में शायद ही कभी हुए होंगे। इन्हीं actions के बारे में ही मैं यहाँ पर आपसे कुछ कहना चाहता हूँ। इस बारे में actions के सम्बन्ध में हमारी अपनी policy क्या थी, आपके सम्मुख रखूँगा। इसके पश्चात actions के सम्बन्ध में अपने विचार कहूँगा।

हम लोग कुल दो actions कर पाये। एक साण्डर्स मर्डर, दूसरा असेम्बली बम।

इसके अतिरिक्त हमने दो-तीन और actions करने का प्रयत्न किया था यद्यपि उनमें सफलता प्राप्त नहीं हुई। इनके सम्बन्ध में मैं इतना कह सकता हूँ कि हमारे actions तीन प्रकार के थे-1. Propaganda 2. Money 3. Special. इन तीनों में से हमारा मुख्य ध्यान propaganda ds actions की ओर था। बाकी दोनों गौण कहे जा सकते हैं। इससे मेरा अभिप्राय उनकी importance को कम करने का नहीं है तो भी हमारे लिए हमारी existence का उद्देश्य propaganda ds actions करना ही था। बाकी दोनों प्रकार के actions हमारा उद्देश्य नहीं थे, वरन उद्देश्य की पूर्ति के लिए आवश्यक। इन तीनों को clear करने के लिए 1. Assembly action, 2. Punjab National Bank Dacoity और 3. जोगेश चटर्जी को छुड़ाने की कोशिश आप (शायद 'आज'-सं.) आपके सम्मुख रखता हूँ।

पिछले दो प्रकार के actions को छोड़कर मैं propaganda actions को इस स्थान पर discuss करना चाहता हूँ। propaganda शब्द से शायद इन actions को ठीक-ठीक नहीं समझा जा सकता। दरअसल मतलब यह है कि हमारे यह actions हमारी जनता के भावों के अनुकूल होते थे। उदाहरण के लिए Saunders' murder को लो। लाला (ला. लाजपत राय) पर लाठियाँ पड़ने से हमने देखा कि देश में इनके कारण बहुत हलचल है। इस पर Govt. के रवैये ने तेल का काम किया। लोग बहुत नाराज हो गये। जनता का ध्यान तमअवसनजपवदंतपमे की ओर खींचने के लिए हमारे लिए यह बड़ा अच्छा अवसर था। पहले हमने सोचा था कि एक आदमी पिस्तौल लेकर जाये औरै बवजज को मारकर वहीं पर अपने आपको पेश कर दे। फिर Statement द्वारा यह कह दे कि National insult का बदला जब तक revolutionaries जिन्दा हैं, इसी प्रकार लिया जा सकता है। किन्तु आसपास man-power कम होने के कारण तीन आदमियों को भेजना ज्यादा उचित समझा गया। इसमें भी बचकर निकल जाने की आशा का विचार मुख्य नहीं था। इसकी तो आशा भी नहीं थी। हमारा विचार यह था कि यदि उनतकमत के बाद पुलिस पीछा करे तो खूब मुकाबला किया जाये। जो इस मुकाबले में बच जाये और पकड़ा जाये तो Statement दे दे। इसी विचार से भागकर D.A.V. College boarding की छत पर चढ़ गये थे। Action के समय यह प्रबन्ध था कि भगतसिंह जो Scott को पहचानता था, पहली गोली चलाये और राजगुरु थोड़ी दूर पर उसकी हिफाजत करे। यदि भगतसिंह पर कोई हमला करे तब राजगुरु उसको रोके। इसके बाद यह दोनों वहाँ से भागें और चूँकि भागते हुए मुड़कर पीछा करने वालों पर निशाना नहीं लिया जा सकता इसलिए पण्डित जी को इन दोनों की रक्षा के निमित्त पीछे खड़ा किया था। इसके साथ ही यह विचार हमारे सामने था कि अपने बचने के बजाय उसको मारने का ज्यादा ध्यान रखना है। हम यह भी नहीं चाहते थे कि जिस पर गोली चलायी जाये वह हस्पताल जाकर मरे। इसीलिए राजगुरु द्वारा गोली मार देने

के बाद भी भगतसिंह ने तब तक गोली चलानी बन्द न की जब तक उसे तसल्ली नहीं हो गयी कि वह मर गया है।

मारकर भाग जाना ही हमारा उद्देश्य नहीं था। हम तो चाहते थे कि देश जान जाये कि यह political murder है और इस action के करने वाले revolutionaries हैं न कि मालंगी के साथी, इसलिए हमने उसके बाद posters लगाये और कुछ posters अखबारवालों को छापने के लिए भेजे। अफसोस, हमारे नेताओं और अखबारवालों ने हमें इस सम्बन्ध में कुछ सहायता न की और Govt. को धोखे में रखने के विचार से देशवासियों को धोखा दिया। हम तो केवल इतना ही चाहते थे कि वह इसके सम्बन्ध में यह गोल-मोल करके लिख दें कि यह political murder है और Govt. की policy का ही परिणाम है। ऐसे actions के लिए वह responsible है। लेकिन उन्होंने जानते-बूझते और मेरे बार-बार कहने के बावजूद भी ऐसा कहने की हिम्मत नहीं की। अच्छा हुआ हम पकड़े गये और देश के सम्मुख सब प्रगट हो गया। मैं तो भाई, अपने पकड़े जाने को सौभाग्य समझता हूँ। सिर्फ इसीलिए इस action की nature को clear कर देने के पश्चात अब मैं इस policy को (Note : इसी समय पता लगा है कि आज Judgement होगी, चलना है कि नहीं यह पूछने के लिए खां साहिब और बख्शी जी आये थे। हम सबने इन्कार कर दिया है) रखना चाहता हूँ। हमारा विचार था कि हमारे actions जनता की desires और Govt. द्वारा grievances के उत्तर में होने चाहिये ताकि हम लोग जनता को अपने साथ ले सकें और जनता हमारे प्रति सहानुभूति और सहायता दिखाने के लिए तैयार हो जाये। इसके साथ-साथ हमारा यह विचार था कि revolutionary ideals और tactics को public में फैलाया जाय और यह उसके मुख से ज्यादा अच्छी लगती है जो इनकी खातिर gallows पर खड़ा हो। तीसरा उद्देश्य यह था कि Govt. से direct टक्कर लेने से हमारी organisation एक निश्चित programme अपने लिए बना सकेगी।

बाकी दो प्रकार के actions के सम्बन्ध में कुछ ज्यादा नहीं कहना चाहता हूँ। Money actions के लिए इतना आवश्यक होना चाहिये कि बंगालवालों की तरह dacoities में ज्यादा energy और attention देना ठीक नहीं है। साथ ही छोटी-छोटी dacoities कतई लाभदायक सिद्ध नहीं हुई हैं। इसलिए हम सबकुछ देकर भी एक जुआ खेलने को तैयार हो गये थे ताकि अगर बच गये तो अच्छी तरह से निश्चिन्त होकर अपना काम करते जायेंगे और पैसा की समस्या को हम एक बार risk लेकर हल करेंगे। साण्डर्स के murder के बाद तो हमें पैसा के लिए ज्यादा चिन्ता भी नहीं करनी पड़ी। साधारण dacoities में जितना धन हमें नहीं मिलता उतना हम चुपचाप इकट्ठा कर लिया करते थे। आज तो उससे कहीं ज्यादा आसानी है। Special actions अनिवार्य होते हैं लेकिन उसी दशा में जब अत्यन्त आवश्यक हों। हाँ, इनकी संख्या बहुत कम होनी चाहिये।

अब मैं उन actions के सम्बन्ध में कुछ कहना चाहता हूँ जो हमारे बाद घटित हुए। वायसराय की ट्रेन को उड़ाने के प्रयत्न के अतिरिक्त बम द्वारा कई actions हुए हैं। इनमें एक विशेष प्रकार के actions हुए हैं। अर्थात बम रास्ते में रख आयें या जो actions पंजाब के चार-पाँच शहरों में एक साथ हुए हैं। मुझे समझ में नहीं आयी कि यह actions किस विचार से किये गये हैं। जहाँ तक मैं अनुभव करता हूँ जनता में ऐसे actions से विशेष जागृति तो आती नहीं है। यदि terrorise करने का विचार था तो मैं पूछना चाहता हूँ कि आप लिखें कि इन actions ने इस उद्देश्य की कहाँ तक पूर्ति की है। इस सम्बन्ध में चिटगाँववाले actions की यहाँ पर प्रशंसा नहीं करना चाहता।

आवाज दबाना दुखदायी है!

सुखदेव के भाई मथुरादास की पुस्तक 'अमर शहीद सुखदेव' में प्रकाशित लेखकीय टिप्पणी के अनुसार सुखदेव ने यह पत्र सम्भवतः चन्द्रशेखर आजाद के नाम लिखा था, जो उन तक पहुँच नहीं पाया। -सं.

प्यारे साथी,

अभी-अभी पता चला है कि हमारा वह statement जो हमने 3 तारीख को दिया है अखबारवालों ने नहीं छापा। कारण यह कहा जाता है कि उसमें लीडरों को criticise किया गया है और उनके इस समझौते को बुरा कहा गया है। उफ, कैसी शरम की बात है! भाई, सच पूछो तो हमें सरकार फाँसी नहीं लगा रही। हमारा गला तो हमारे So-called leaders ही दबा रहे हैं जो हमारी आवाज निकलने नहीं देते। सरकार द्वारा गला दबाना हमारे लिए बुरा सिद्ध नहीं हो सकता। उसको हम सहन कर सकते हैं लेकिन यह बात हमारे से बर्दाश्त नहीं हो सकती कि हमारा गला हमारे ये स्वार्थी high class leaders दबायें। इसके विरुद्ध हमें लड़ना पड़ेगा। अपनी struggle को हमें उनसे अलग होकर स्वतंत्र रूप से चलाना होगा और सरकार का विरोध करते-करते इन उच्च जाति-नेताओं की पोल भी खोलनी पड़ेगी।

परन्तु दोस्तो, यह कार्य ज्यादा देरी तक neglect नहीं किया जा सकता। इस पर हमें विचार करना चाहिए और उसके लिए शीघ्र ही प्रबन्ध करना चाहिए। और कब तक ऐसा व्यवहार सहते रहोगे। हम क्रान्तिकारियों के प्रति उनके इस प्रकार neutral relation और हमारी गिरावट के दो मुख्य कारण हैं। पहला यह कि हमारी कोई स्थायी organisation नहीं है, जो उनके मुकाबले में और उनसे अलग अपनी lines पर काम कर रही हो। दूसरा यह कि जो भी थोड़ा-बहुत scattered element है उसके हाथ में Press नहीं है जिसके द्वारा वह अपनी आवाज जनता तक पहुँचा सके और जिसके बल पर वह बढ़े, डटकर सरकार तथा इन उच्च जाति-सन्तों का भलीभाँति विरोध कर सके।

अनेक कारणोंवश हम लोगों को आज तक केवल गुप्त समितियाँ बनाकर ही काम करते रहना पड़ा है। परन्तु यारो, अब समय आ गया है कि हम इस policy

का त्याग करें। साधारण जनता हमें और हमारे आदर्शों को मानने लग गयी है। उसकी सहानुभूति हमारे साथ है। ठीक है, अपने कार्य को successfully चलाने और अपनी organisation को कायम रखने हेतु बहुत कुछ गुप्त रखना पड़ेगा। हमें अपने काम को गांधी की lines पर नहीं चलाना है तो भी अब केवल इस जत्थेबंदी और गोली-बारूद द्वारा ही काम करना उचित नहीं। अब हमें आगामी struggle के लिए एक force बनने की जरूरत है।

उसके लिए, जैसा मैंने पहले भी लिखा है, खुफिया सोसायटी के ढंग पर पंजाब में एक Central Red Revolutionary Party कायम करने की आवश्यकता है, जिसका मुख्य काम भिन्न-भिन्न local स्थानों पर Revolutionary work और tactics का प्रचार और अच्छे क्रान्तिवादी worker तथा व्यवस्था होनी चाहिए। इसके साथ-साथ उस कांग्रेस की नकेल अपने हाथ में रखनी चाहिए। अपने ideas को legally or illegally दोनों प्रेसों द्वारा बराबर फैलाने की कोशिश करनी चाहिए।

ये सब शायद तुम्हें शेखचिल्ली की बातें जान पड़ती होंगी। लेकिन प्यारे, यह तो करना ही होगा और शीघ्र करना होगा। मैं नहीं कह सकता इस कांग्रेस में इसी वक्त से कोई ऐसा wing तैयार हो जायेगा लेकिन इस कांग्रेस की तैयारी चाहे कितनी भी मामूली हो उसकी beginning कर देनी चाहिए।

(Important) हमें मरने का दुख नहीं है। अपनी आवाज का दबाया जाना हमारे लिए बहुत कष्टदायक है। मैं चाहता हूँ कि हमारी वह statement तुम सरदार जी या हमारे वकील से प्राप्त कर एक छोटे-से appealing note के साथ उर्दू, गुरमुखी और अंग्रेजी में लिखवाकर छपने का प्रबन्ध करो।

-सुखदेव

क्रान्तिकारी दोस्तों के नाम

सुखदेव का पत्र

प्यारे साथियो!

दो साल का समय हो चुका है जबकि पहले-पहल Long Live Revolution का आरम्भ हुआ था। यह छोटी-सी आवाज आज एक भारी और भयानक रूप धारण कर चुकी है। हमारे देश का बच्चा-बच्चा इन्कलाब-जिन्दाबाद चिल्ला रहा है।

किन्तु क्या यही काफी है? क्या अब हमारे लिए कोई कार्य बाकी नहीं रहा? नहीं। कार्य का आरम्भ तो अभी होना चाहिये। नहीं तो यह इन्कलाब-जिन्दाबाद भी गांधी के 'स्वराज्य' की भाँति एक बेमानी चीज हो जायेगा, जिसे थोड़े समय बाद जनता घृणा और नफरत की दृष्टि से देखेगी। काफी देर तक हमने पब्लिक के sentiments को उभारा है। अब समय आ गया है कि हम public को इसका अर्थ समझाएँ। हम उनके आगे रखें कि Revolution क्या है। उसका masses के साथ क्या सम्बन्ध है। उसकी क्या आवश्यकता है। और वह क्योंकर Successful की जा सकती है।

याद रखो इन प्रश्नों को छुपाकर रखना हितकर नहीं होगा। मैं देख रहा हूँ-लोगों के दिलों में यह प्रश्न उठ रहे हैं। यदि इन प्रश्नों का उत्तर न दिया गया, यदि गांधी की तरह इनको vague रखा गया तो सब गुड़गोबर हो जायेगा। आज तक की सब मेहनत व्यर्थ हो जायेगी। परन्तु इसके साथ ही एक introductory काम और भी है। यदि तुम्हारी यह धारणा है कि Long Live Revolution कह लेने से तुम Revolutionary हो गये हो तो यह तुम्हारी भूल है। तुम लोगों में कोई ही होगा जो वास्तव में Revolutionary कहलाने के योग्य होगा। लेकिन यह कोई शरम की बात नहीं। अपने इस अभाव को हमें मानना चाहिये और इसे मानकर इसकी पूर्ति करनी चाहिये। अपनी और सभी साथियों की revolutionary education के प्रबन्ध करने चाहिये। उसके लिए कार्य आरम्भ करने चाहिये।

याद रखो, अपनी सफलता इस बात पर निर्भर है कि हमारे workers अपने revo-

lution ideals, tactics और struggle को खूब समझते हैं। आज के arm chair politicians और sentimental lectures द्वारा क्रान्ति का कार्य नहीं चलाया जाना चाहिये। बल्कि ऐसे व्यक्तियों को अपनी Organisation में ही नहीं लेना चाहिए। क्रान्ति करने के हेतु वे ही व्यक्ति लाभदायक सिद्ध हो सकते हैं जो Self sacrificing devotion के हों, जो revolutionary education प्राप्त किये हों और जीवन में क्रान्ति को profession समझे हों। जो व्यक्ति Revolutionary work को अपना profession नहीं बना सकता वह एक Sympathiser के सिवा कुछ नहीं है।

मैं आशा करता हूँ कि समय की आवश्यकता को अनुभव कर आप मेरी इन बातों पर ध्यान देंगे और जितनी जल्दी हो सके public demand को पूरा करने का यत्न करेंगे।

[मूल पत्र यहीं समाप्त होता है और अन्तिम अक्षर अस्पष्ट हैं-सं.]

गांधी जी के नाम सुखदेव की खुली चिट्ठी

गांधीजी के नाम सुखदेव की यह 'खुली चिट्ठी' मार्च, 1931 में लिखी गई थी जो गांधीजी के उत्तर सहित हिन्दी 'नवजीवन' 30 अप्रैल, 1931 के अंक में प्रकाशित हुई थी।-सं.

परम कृपालु महात्मा जी,

आजकल की ताजा खबरों से मालूम होता है कि समझौते की बातचीत की सफलता के बाद आपने क्रान्तिकारी कार्यकर्ताओं को फिलहाल अपना आन्दोलन बन्द कर देने और आपको अपने अहिंसावाद को आजमा देखने का आखिरी मौका देने के लिए कई प्रकट प्रार्थनाएँ की हैं। वस्तुतः किसी आन्दोलन को बन्द करना केवल आदर्श या भावना से होने वाला काम नहीं है। भिन्न-भिन्न अवसरों की आवश्यकताओं का विचार ही अगुआओं को उनकी युद्धनीति बदलने के लिए विवश करता है।

माना कि सुलह की बातचीत के दरम्यान, आपने इस ओर एक क्षण के लिए भी न तो दुर्लक्ष्य किया, न इसे छिपा ही रखा कि यह समझौता अन्तिम समझौता न होगा। मैं मानता हूँ कि सब बुद्धिमान लोग बिल्कुल आसानी के साथ यह समझ गये होंगे कि आपके द्वारा प्राप्त तमाम सुधारों का अमल होने लगने पर भी कोई यह न मानेगा कि हम मंजिले-मकसूद पर पहुँच गये हैं। सम्पूर्ण स्वतंत्रता जब तक न मिले, तब तक बिना विराम के लड़ते रहने के लिए महासभा लाहौर के प्रस्ताव से बँधी हुई है। उस प्रस्ताव को देखते हुए मौजूदा सुलह और समझौता सिर्फ कामचलाऊ युद्ध-विराम है, जिसका अर्थ यही होता है कि आने वाली लड़ाई के लिए अधिक बड़े पैमाने पर अधिक अच्छी सेना तैयार करने के लिए यह थोड़ा विश्राम है। इस विचार के साथ ही समझौते और युद्ध-विराम की शक्यता की कल्पना की जा सकती है और उसका औचित्य सिद्ध हो सकता है।

किसी भी प्रकार का युद्ध-विराम करने का उचित अवसर और उसकी शर्तें ठहराने का काम तो उस आन्दोलन के अगुआओं का है। लाहौरवाले प्रस्ताव के रहते हुए भी आपने फिलहाल सक्रिय आन्दोलन बन्द रखना उचित समझा है, तो भी वह प्रस्ताव तो

कायम ही है। इसी तरह 'हिन्दुस्तानी सोशियलिस्ट रिपब्लिकन पार्टी' के नाम से ही साफ पता चलता है कि क्रान्तिवादियों का आदर्श समाज-सत्तावादी प्रजातंत्र की स्थापना करना है। यह प्रजातंत्र मध्य का विश्राम नहीं है। उनका ध्येय प्राप्त न हो और आदर्श सिद्ध न हो, तब तक वे लड़ाई जारी रखने के लिए बँधे हुए हैं। परन्तु बदलती हुई परिस्थितियों और वातावरण के अनुसार वे अपनी युद्ध-नीति बदलने को तैयार अवश्य होंगे। क्रान्तिकारी युद्ध जुदा-जुदा मौकों पर जुदा-जुदा रूप धारण करता है। कभी वह प्रकट होता है, कभी गुप्त, कभी केवल आन्दोलन-रूप होता है, और कभी जीवन-मरण का भयानक संग्राम बन जाता है। ऐसी दशा में क्रान्तिवादियों के सामने अपना आन्दोलन बन्द करने के लिए विशेष कारण होने चाहिये। परन्तु आपने ऐसा कोई निश्चित विचार प्रकट नहीं किया। निरी भावपूर्ण अपीलों का क्रान्तिवादी युद्ध में कोई विशेष महत्त्व नहीं होता, हो नहीं सकता।

आपके समझौते के बाद आपने अपना आन्दोलन बन्द किया है, और फलस्वरूप आपके सब कै दी रिहा हुए हैं। पर क्रान्तिकारी कैदियों का क्या? 1915 ई. से जेलों में पड़े हुए गदर-पक्ष के बीसों कै दी सजा की मियाद पूरी हो जाने पर भी अब तक जेलों में सड़ रहे हैं। मार्शल लॉ के बीसों कै दी आज भी जिन्दा कब्रों में दफनाये पड़े हैं। यही हाल बब्बर अकाली कैदियों का है। देवगढ़, काकोरी, मछुआ-बाजार और लाहौर षड्यंत्र के कै दी अब तक जेल की चहारदीवारी में बन्द पड़े हुए बहुतेरे कैदियों में से कुछ हैं। लाहौर, दिल्ली, चटगाँव, बम्बई, कलकत्ता और अन्य जगहों में कोई आधी दर्जन से ज्यादा षड्यंत्र के मामले चल रहे हैं। बहुसंख्यक क्रान्तिवादी भागते फिरते हैं, और उनमें कई तो स्त्रियाँ हैं। सचमुच आधी दर्जन से अधिक कै दी फाँसी पर लटकने की राह देख रहे हैं। इन सबका क्या? लाहौर षड्यंत्र केस के सजायाफ्ता तीन कै दी, जो सौभाग्य से मशहूर हो गये हैं और जिन्होंने जनता की बहुत अधिक सहानुभूति प्राप्त की है, वे कुछ क्रान्तिवादी दल का एक बड़ा हिस्सा नहीं हैं। उनका भविष्य ही उस दल के सामने एकमात्र प्रश्न नहीं है। सच पूछा जाये तो उनकी सजा घटाने की अपेक्षा उनके फाँसी पर चढ़ जाने से ही अधिक लाभ होने की आशा है।

यह सब होते हुए भी आप उन्हें अपना आन्दोलन बन्द करने की सलाह देते हैं। वे ऐसा क्यों करें? आपने कोई निश्चित वस्तु की ओर निर्देश नहीं किया है। ऐसी दशा में आपकी प्रार्थनाओं का यही मतलब होता है कि आप इस आन्दोलन को कुचल देने में नौकरशाही की मदद कर रहे हैं, और आपकी विनती का अर्थ उनके दल को द्रोह, पलायन और विश्वासघात का उपदेश करना है। यदि ऐसी बात नहीं है, तो आपके लिए उत्तम तो यह था कि आप कुछ अग्रगण्य क्रान्तिकारियों के पास जाकर उनसे सारे मामले के बारे में बातचीत कर लेते। अपना आन्दोलन बन्द करने के बारे में पहले आपको उनकी बुद्धि की प्रतीति करा लेने का प्रयत्न करना चाहिये था। मैं नहीं मानता कि आप

भी इस प्रचलित पुरानी कल्पना में विश्वास रखते हैं कि क्रान्तिकारी बुद्धिहीन हैं, विनाश और संहार में आनन्द मानने वाले हैं। मैं आपको कहता हूँ कि वस्तुस्थिति ठीक इसकी उलटी है, वे सदैव कोई भी काम करने से पहले उसका खूब सूक्ष्म विचार कर लेते हैं, और इस प्रकार वे जो जिम्मेदारी अपने माथे लेते हैं, उसका उन्हें पूरा-पूरा ख़्याल होता है। और, क्रान्ति के कार्य में दूसरे किसी भी अंग की अपेक्षा वे रचनात्मक अंग को अत्यन्त महत्त्व का मानते हैं, हालाँकि मौजूदा हालत में अपने कार्यक्रम के संहारक अंग पर डटे रहने के सिवा और कोई चारा उनके लिए नहीं है।

उनके प्रति सरकार की मौजूदा नीति यह है कि लोगों की ओर से उन्हें अपने आन्दोलन के लिए जो सहानुभूति और सहायता मिली है, उससे वंचित करके उन्हें कुचल डाला जाये। अकेले पड़ जाने पर उनका शिकार आसानी से किया जा सकता है। ऐसी दशा में उनके दल में बुद्धि-भेद और शिथिलता पैदा करने वाली कोई भी भावपूर्ण अपील एकदम बुद्धिमानी से रहित और क्रान्तिकारियों को कुचल डालने में सरकार की सीधी मदद करने वाली होगी।

इसलिए हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि या तो आप कुछ क्रान्तिकारी नेताओं से बातचीत कीजिए-उनमें से कई जेलों में हैं-और उनके साथ सुलह कीजिए या ये सब प्रार्थनाएँ बन्द रखिये। कृपा कर हित की दृष्टि से इन दो में से कोई एक रास्ता चुन लीजिए और सच्चे दिल से उस पर चलिये। अगर आप उनकी मदद न कर सकें, तो मेहरबानी करके उन पर रहम करें। उन्हें अलग रहने दें। वे अपनी हिफाजत आप अधिक अच्छी तरह कर सकते हैं। वे जानते हैं कि भावी राजनैतिक युद्ध में सर्वोपरि स्थान क्रान्तिकारी पक्ष को ही मिलने वाला है। लोकसमूह उनके आस-पास इकट्ठा हो रहे हैं, और वह दिन दूर नहीं है, जब ये जनसमूह को अपने झण्डे तले, समाजसत्ता प्रजातंत्र के उम्दा और भव्य आदर्श की ओर ले जाते होंगे।

अथवा अगर आप सचमुच ही उनकी सहायता करना चाहते हों, तो उनका दृष्टिकोण समझ लेने के लिए उनके साथ बातचीत करके इस सवाल की पूरी तफसीलवार चर्चा कर लीजिये।

आशा है, आप कृपा करके उक्त प्रार्थना पर विचार करेंगे और अपने विचार सर्वसाधारण के सामने प्रकट करेंगे।

आपका,
अनेकों में से एक

युद्ध अभी जारी है...

फाँसी पर लटकाये जाने से 3 दिन पूर्व-20 मार्च, 1931 को-भगतसिंह, सुखदेव और राजगुरु ने पंजाब के गवर्नर को यह पत्र भेजकर माँग की थी कि उन्हें युद्धबन्दी माना जाये तथा फाँसी पर लटकाये जाने के बजाय गोली से उड़ा दिया जाये।-सं.

हमें फाँसी देने के बजाय गोली से उड़ा दिया जाये।

20 मार्च, 1931

प्रति, गवर्नर पंजाब, शिमला

महोदय,

उचित सम्मान के साथ हम नीचे लिखी बातें आपकी सेवा में रख रहे हैं-

भारत की ब्रिटिश सरकार के सर्वोच्च अधिकारी वायसराय ने एक विशेष अध्यादेश जारी करके लाहौर षड्यंत्र अभियोग की सुनवायी के लिए एक विशेष न्यायाधिकरण (ट्रिब्यूनल) स्थापित किया था, जिसने 7 अक्तूबर, 1930 को हमें फाँसी का दण्ड सुनाया। हमारे विरुद्ध सबसे बड़ा आरोप यह लगाया गया है कि हमने सम्राट जार्ज पंचम के विरुद्ध युद्ध किया है।

न्यायालय के इस निर्णय से दो बातें स्पष्ट हो जाती हैं-

पहली यह कि अंग्रेज जाति और भारतीय जनता के मध्य एक युद्ध चल रहा है। दूसरे यह कि हमने निश्चित रूप में इस युद्ध में भाग लिया है, अतः हम युद्धबन्दी हैं।

यद्यपि इनकी व्याख्या में बहुत सीमा तक अतिशयोक्ति से काम लिया गया है, तथापि हम यह कहे बिना नहीं रह सकते कि ऐसा करके हमें सम्मानित किया गया है। पहली बात के सम्बन्ध में हम तनिक विस्तार से प्रकाश डालना चाहते हैं। हम नहीं समझते कि प्रत्यक्ष रूप में ऐसी कोई लड़ाई छिड़ी हुई है। हम नहीं जानते कि युद्ध छिड़ने से न्यायालय का आशय क्या है? परन्तु हम इस व्याख्या को स्वीकार करते हैं और साथ ही इसे इसके ठीक सन्दर्भ में समझाना चाहते हैं।

युद्ध की स्थिति

हम यह कहना चाहते हैं कि युद्ध छिड़ा हुआ है और यह लड़ाई तब तक चलती रहेगी जब तक कि शक्तिशाली व्यक्तियों ने भारतीय जनता और श्रमिकों की आय के साधनों पर अपना एकाधिकार कर रखा है-चाहे ऐसे व्यक्ति अंग्रेज पूँजीपति और अंग्रेज या सर्वथा भारतीय ही हों, उन्होंने आपस में मिलकर एक लूट जारी कर रखी है। चाहे शुद्ध भारतीय पूँजीपतियों के द्वारा ही निर्धनों का खून चूसा जा रहा हो तो भी इस स्थिति में कोई अन्तर नहीं पड़ता। यदि आपकी सरकार कुछ नेताओं या भारतीय समाज के मुखियों पर प्रभाव जमाने में सफल हो जायें, कुछ सुविधाएँ मिल जायें, अथवा समझौते हो जायें, इससे भी स्थिति नहीं बदल सकती, तथा जनता पर इसका प्रभाव बहुत कम पड़ता है। हमें इस बात की भी चिन्ता नहीं कि युवकों को एक बार फिर धोखा दिया गया है और इस बात का भी भय नहीं है कि हमारे राजनैतिक नेता पथ-भ्रष्ट हो गये हैं और वे समझौते की बातचीत में इन निरपराध, बेघर और निराश्रित बलिदानियों को भूल गये हैं, जिन्हें दुर्भाग्य से क्रान्तिकारी पार्टी का सदस्य समझा जाता है। हमारे राजनीतिक नेता उन्हें अपना शत्रु समझते हैं, क्योंकि उनके विचार में वे हिंसा में विश्वास रखते हैं। हमारी वीराँगनाओं ने अपना सबकुछ बलिदान कर दिया है। उन्होंने अपने पतियों को बलिवेदी पर भेंट किया, भाई भेंट किये, और जो कुछ भी उनके पास था-सब न्यौछावर कर दिया। उन्होंने अपने आपको भी न्यौछावर कर दिया। परन्तु आपकी सरकार उन्हें विद्रोही समझती है। आपके एजेण्ट भले ही झूठी कहानियाँ बनाकर उन्हें बदनाम कर दें और पार्टी की प्रसिद्धि को हानि पहुँचाने का प्रयास करें, परन्तु यह युद्ध चलता रहेगा।

युद्ध के विभिन्न स्वरूप

हो सकता है कि यह लड़ाई भिन्न-भिन्न दशाओं में भिन्न-भिन्न स्वरूप ग्रहण करे। किसी समय यह लड़ाई प्रकट रूप ले ले, कभी गुप्त दशा में चलती रहे, कभी भयानक रूप धारण कर ले, कभी किसान के स्तर पर युद्ध जारी रहे और कभी यह घटना इतनी भयानक हो जाये कि जीवन और मृत्यु की बाजी लग जाये। चाहे कोई भी परिस्थिति हो, इसका प्रभाव आप पर पड़ेगा। यह आपकी इच्छा है कि आप जिस परिस्थिति को चाहें चुन लें, परन्तु यह लड़ाई जारी रहेगी। इसमें छोटी-छोटी बातों पर ध्यान नहीं दिया जायेगा। बहुत सम्भव है कि यह युद्ध भयंकर स्वरूप ग्रहण कर ले। पर निश्चय ही यह उस समय तक समाप्त नहीं होगा जब तक कि समाज का वर्तमान ढाँचा समाप्त नहीं हो जाता, प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन या क्रान्ति समाप्त नहीं हो जाती और मानवी सृष्टि में एक नवीन युग का सूत्रपात नहीं हो जाता।

अन्तिम युद्ध

निकट भविष्य में अन्तिम युद्ध लड़ा जायेगा और यह युद्ध निर्णायक होगा। साम्राज्यवाद व पूँजीवाद कुछ दिनों के मेहमान हैं। यही वह लड़ाई है जिसमें हमने प्रत्यक्ष रूप में भाग लिया है और हम अपने पर गर्व करते हैं कि इस युद्ध को न तो हमने प्रारम्भ ही किया है और न यह हमारे जीवन के साथ समाप्त ही होगा। हमारी सेवाएँ इतिहास के उस अध्याय में लिखी जायेंगी जिसको यतीन्द्रनाथ दास और भगवतीचरण के बलिदानों ने विशेष रूप में प्रकाशमान कर दिया है। इनके बलिदान महान हैं। जहाँ तक हमारे भाग्य का सम्बन्ध है, हम जोरदार शब्दों में आपसे यह कहना चाहते हैं कि आपने हमें फाँसी पर लटकाने का निर्णय कर लिया है। आप ऐसा करेंगे ही, आपके हाथों में शक्ति है और आपको अधिकार भी प्राप्त है। परन्तु इस प्रकार आप जिसकी लाठी उसकी भैंसवाला सिद्धान्त ही अपना रहे हैं-और आप उस पर कटिबद्ध हैं। हमारे अभियोग की सुनवाई इस बात को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त है कि हमने कभी कोई प्रार्थना नहीं की और अब भी हम आपसे किसी प्रकार की दया की प्रार्थना नहीं करते। हम आपसे केवल यह प्रार्थना करना चाहते हैं कि आपकी सरकार के ही एक न्यायालय के निर्णय के अनुसार हमारे विरुद्ध युद्ध जारी रखने का अभियोग है। इस स्थिति में हम युद्धबन्दी हैं, अतः इस आधार पर हम आपसे माँग करते हैं कि हमारे प्रति युद्धबन्दियों जैसा ही व्यवहार किया जाये और हमें फाँसी देने के बदले गोली से उड़ा दिया जाये।

अब यह सिद्ध करना आपका काम है कि आपको उस निर्णय में विश्वास है जो आपकी सरकार के एक न्यायालय ने किया है। आप अपने कार्य द्वारा इस बात का प्रमाण दीजिये। हम विनयपूर्वक आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप अपने सेना-विभाग को आदेश दे दें कि हमें गोली से उड़ाने के लिए एक सैनिक टोली भेज दी जाये।

भवदीय,

भगतसिंह, राजगुरु, सुखदेव

सरकारों की बेरुखी का शिकार, मुहल्ला नौधरा (लुधियाना) में शहीद सुखदेव का जन्मस्थान

शहीद सुखदेव के जन्मस्थान पर शहीद सुखदेव यादगारी कमेटी द्वारा बनाया गया स्मारक

राहुल
फ़ाउण्डेशन

ISBN 978-81-87728-81-8
मूल्य : रु. 40.00

बेहतर ज़िन्दगी का रास्ता
बेहतर किताबों से होकर जाता है!

जनचेतना

सम्पूर्ण सूचीपत्र
2021

हम हैं सपनों के हरकारे
हम हैं विचारों के डाकिये

आम लोगों के लिए
ज़रूरी हैं वे किताबें
जो उनकी ज़िन्दगी की घुटन
और मुक्ति के स्वप्नों तक
पहुँचाती हैं विचार
जैसे कि बारूद की ढेरी तक
आग की चिंगारी।
घर-घर तक चिंगारी छिटकाने वाला
तेज़ हवा का झोंका बन जाना होगा
ज़िन्दगी और आने वाले दिनों का सच
बतलाने वाली किताबों को
जन-जन तक पहुँचाना होगा।

तीन दशक से भी पहले प्रगतिशील, जनपक्षधर साहित्य को जन-जन तक पहुँचाने की मुहिम की एक छोटी-सी शुरुआत हुई, बड़े मंसूबे के साथ। एक छोटी-सी दुकान और फुटपाथों पर, मुहल्लों में और दफ़्तरों के सामने छोटी-छोटी प्रदर्शनियाँ लगाने वाले तथा साइकिलों पर, ठेलों पर, झोलों में भरकर घर-घर किताबें पहुँचाने वाले समर्पित अवैतनिक वालण्टियरों की टीम – शुरुआत बस यहीं से हुई। आज यह वैचारिक अभियान उत्तर भारत के दर्जनों शहरों और गाँवों तक फैल चुका है। अपने प्रदर्शनी वाहनों के माध्यम से भी जनचेतना कई राज्यों के सुदूर कोनों तक हिन्दी, पंजाबी, मराठी और अंग्रेज़ी साहित्य एवं कला-सामग्री के साथ सपने और विचार लेकर जा रही है, जीवन-संघर्ष-सृजन-प्रगति का नारा लेकर जा रही है।

यह अपने ढंग का एक अनूठा प्रयास है। एक भी वैतनिक स्टाफ़ के बिना, समर्पित वालण्टियरों और विभिन्न सहयोगी जनसंगठनों के कार्यकर्ताओं के बूते पर यह प्रोजेक्ट आगे बढ़ रहा है।

आइए, आप सभी इस मुहिम में हमारे सहयात्री बनिए।

सम्पूर्ण सूचीपत्र

परिकल्पना प्रकाशन

उपन्यास

नयी

1. **पहला अध्यापक**/चिंगीज़ आइत्मातोव 50.00
2. **तरुणाई का तराना**/याङ मो ...
3. **तीन टके का उपन्यास**/बेर्टोल्ट ब्रेष्ट ...
4. **माँ**/मक्सिम गोर्की 275.00
5. **वे तीन**/मक्सिम गोर्की 75.00
6. **मेरा बचपन**/मक्सिम गोर्की ...
7. **जीवन की राहों पर**/मक्सिम गोर्की ...
8. **मेरे विश्वविद्यालय**/मक्सिम गोर्की ...
9. **फ़ोमा गोर्देयेव**/मक्सिम गोर्की 55.00
10. **अभागा**/मक्सिम गोर्की 40.00
11. **बेकरी का मालिक**/मक्सिम गोर्की 25.00
12. **असली इन्सान**/बोरिस पोलेवोई 260.00
13. **तरुण गार्ड**/अलेक्सान्द्र फ़देयेव (दो खण्डों में) 160.00
14. **गोदान**/प्रेमचन्द ...
15. **निर्मला**/प्रेमचन्द ...
16. **पथ के दावेदार**/शरत्चन्द्र ...
17. **चरित्रहीन**/शरत्चन्द्र ...
18. **गृहदाह**/शरत्चन्द्र ...
19. **शेषप्रश्न**/शरत्चन्द्र ...
20. **इन्द्रधनुष**/वान्दा वैसील्युस्का ...
21. **इकतालीसवाँ**/बोरीस लव्रेन्योव ...
22. **दास्तान चलती है** (एक नौजवान की डायरी से)/अनातोली कुज़्नेत्सोव 70.00
23. **वे सदा युवा रहेंगे**/ग्रीगोरी बकलानोव 60.00
24. **मुर्दों को क्या लाज-शर्म**/ग्रीगोरी बकलानोव 40.00
25. **बख़्तरबन्द रेल 14-69**/व्सेवोलोद इवानोव 30.00
26. **अश्वसेना**/इसाक बाबेल 40.00
27. **लाल झण्डे के नीचे**/लाओ श 50.00
28. **रिक्शावाला**/लाओ श 65.00
29. **चिरस्मरणीय** (प्रसिद्ध कन्नड़ उपन्यास)/निरंजन 55.00

30. **एक तयशुदा मौत** (एनजीओ की पृष्ठभूमि पर)/मोहित राय 70.00

31. **Mother**/*Maxim Gorky* 250.00

32. **The Song of Youth**/*Yang Mo* ...

कहानियाँ

1. **श्रेष्ठ सोवियत कहानियाँ** (3 खण्डों का सेट) 450.00

2. **वह शख़्स जिसने हैडलेबर्ग को भ्रष्ट कर दिया** (मार्क ट्वेन की दो कहानियाँ) 60.00

मक्सिम गोर्की

नयी 3. **इटली की कहानियाँ** 150.00

4. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1) 150.00

5. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2) 200.00

6. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 3) 150.00

7. **हिम्मत न हारना मेरे बच्चो** 15.00

8. **कामो : एक जाँबाज़ इन्क़लाबी मज़दूर की कहानी** 10.00

अन्तोन चेख़व

9. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 1) 150.00

10. **चुनी हुई कहानियाँ** (खण्ड 2) 150.00

11. **दो अमर कहानियाँ**/लू शुन ...

12. **श्रेष्ठ कहानियाँ**/प्रेमचन्द 80.00

13. **पाँच कहानियाँ**/पुश्किन ...

14. **तीन कहानियाँ**/गोगोल 30.00

15. **तूफ़ान**/अलेक्सान्द्र सेराफ़ीमोविच 60.00

16. **वसन्त**/सेर्गेई अन्तोनोव 60.00

17. **वसन्तागम**/रओ शि 50.00

18. **सूरज का ख़ज़ाना**/मिख़ाईल प्रीश्विन 40.00

19. **स्नेगोवेत्स का होटल**/मत्वेई तेवेल्योव 35.00

20. **वसन्त के रेशम के कीड़े**/माओ तुन 50.00

21. **क्रान्ति झंझा की अनुगूँजें** (अक्टूबर क्रान्ति की कहानियाँ) 75.00

22. **चुनी हुई कहानियाँ**/श्याओ हुङ 50.00

23. **समय के पंख**/ कोन्स्तान्तीन पाउस्तोव्सकी ...

24. **श्रेष्ठ रूसी कहानियाँ** (संकलन) ...

25. **अनजान फूल**/आन्द्रेई प्लातोनोव 40.00

26. **कुत्ते का दिल**/मिख़ाईल बुल्गाकोव 70.00

27. **दोन की कहानियाँ**/ मिख़ाईल शोलोख़ोव 35.00

28. **अब इन्साफ़ होने वाला है** (भारत और पाकिस्तान की प्रगतिशील उर्दू कहानियों का प्रतिनिधि संकलन) (ग्यारह नयी कहानियों सहित परिवर्द्धित संस्करण)/ स. **शकील सिद्दीक़ी** ...

29. **लाल कुरता**/हरिशंकर श्रीवास्तव ...

30. **चम्पा और अन्य कहानियाँ**/ मदन मोहन 35.00

कविताएँ

नयी 1. **कौन देखता है कौन दिखता**/लाल्टू 150.00
नयी 2. **अनिश्चय के गहरे धुएँ में**/
निर्मला गर्ग 100.00
3. **जब मैं जड़ों के बीच रहता हूँ**/
पाब्लो नेरूदा 60.00
4. **आँखें दुनिया की तरफ़ देखती हैं**/
लैंग्सटन ह्यूज़ 60.00
5. **इकहत्तर कविताएँ और तीस छोटी कहानियाँ - बेर्टोल्ट ब्रेष्ट** (मूल जर्मन से अनुवाद : मोहन थपलियाल) 130.00
(ब्रेष्ट के दुर्लभ चित्रों और स्केचों से सज्जित)
6. **उम्मीद-ए-सहर की बात सुनो**
(फ़ैज़ अहमद फ़ैज़ के संस्मरण और चुनिन्दा शायरी, सम्पादक: शकील सिद्दीक़ी) ...
7. **माओ त्से-तुङ की कविताएँ**
(राजनीतिक पृष्ठभूमि सहित विस्तृत टिप्पणियाँ एवं अनुवाद : सत्यव्रत) 20.00
8. **मध्यवर्ग का शोकगीत**/
हान्स माग्नुस एन्त्सेन्सबर्गर 30.00
9. **जेल डायरी**/हो ची मिन्ह 40.00
10. **ओस की बूँदें और लाल गुलाब**/
होसे मारिया सिसों 25.00
11. **इन्तिफ़ादा :** फ़िलस्तीनी कविताएँ/
स. रामकृष्ण पाण्डेय 100.00
12. **लोहू और इस्पात से फूटता गुलाब :**
फ़िलस्तीनी कविताएँ (द्विभाषी संकलन)
A Rose Breaking Out of Steel and Blood
(Palestinian Poems) ...
13. **लहू है कि तब भी गाता है**/पाश 125.00
14. **समर तो शेष है...**
(इप्टा के दौर से आज तक के प्रतिनिधि क्रान्तिकारी समूहगीतों का संकलन) 65.00
15. **पाठान्तर**/विष्णु खरे 50.00
16. **लालटेन जलाना** (चुनी हुई कविताएँ)/
विष्णु खरे 60.00
17. **वाचाल दायरों से दूर**/मलय 125.00
18. **दिन भौंहें चढ़ाता है**/मलय 120.00
19. **देखते न देखते**/मलय 65.00
20. **असम्भव की आँच**/मलय 100.00
21. **इच्छा की दूब**/मलय 90.00
22. **देश एक राग है**/भगवत रावत ...
23. **ईश्वर को मोक्ष**/नीलाभ 60.00
24. **बहनें और अन्य कविताएँ**/असद ज़ैदी 50.00
25. **कविता का जीवन**/असद ज़ैदी 75.00
26. **सामान की तलाश**/असद ज़ैदी 50.00
27. **कोहेकाफ़ पर संगीत-साधना**/
शशिप्रकाश 50.00
28. **पतझड़ का स्थापत्य**/शशिप्रकाश 75.00
29. **सात भाइयों के बीच चम्पा**/
कात्यायनी 120.00
30. **इस पौरुषपूर्ण समय में**/कात्यायनी 120.00
31. **जादू नहीं कविता**/कात्यायनी 150.00
32. **फ़ुटपाथ पर कुर्सी**/कात्यायनी 80.00
33. **राख-अँधेरे की बारिश में**/कात्यायनी 15.00
34. **नगर में बर्बर**/कविता कृष्णपल्लवी 100.00
(अँधेरे समय की कुछ कविताएँ और कुछ क़िस्से)

35. **यह मुखौटा किसका है**/विमल कुमार 50.00
36. **यह जो वक़्त है**/कपिलेश भोज 60.00
37. **बहुत नर्म चादर थी जल से बुनी**/ नरेश चन्द्रकर 60.00
38. **इस ढलान पर**/प्रमोद कुमार 90.00
39. **तो**/शैलेय 75.00
40. **पानी है तो फूटेगो**/ राजेश सकलानी 100.00
41. **सवालों का कारख़ाना**/सरिता तिवारी (नेपाली कविताएँ) 100.00

नाटक

1. **करवट**/मक्सिम गोर्की 40.00
2. **दुश्मन**/मक्सिम गोर्की 35.00
3. **तलछट**/मक्सिम गोर्की ...
4. **तीन बहनें** (दो नाटक)/ अन्तोन चेख़व 45.00
5. **चेरी की बग़िया** (दो नाटक)/अ. चेख़व 45.00
6. **बलिदान जो व्यर्थ न गया**/ व्सेवोलोद विश्नेव्स्की 30.00
7. **क्रेमलिन की घण्टियाँ**/ निकोलाई पोगोदिन 30.00

संस्मरण

1. **लेव तोल्स्तोय : शब्द-चित्र**/मक्सिम गोर्की 20.00

स्त्री – विमर्श

1. **दुर्ग द्वार पर दस्तक** (स्त्री प्रश्न पर लेख)/कात्यायनी 130.00

ज्वलन्त प्रश्न

1. **कुछ जीवन्त कुछ ज्वलन्त**/कात्यायनी 90.00
2. **षड्यंत्ररत मृतात्माओं के बीच** (साम्प्रदायिकता पर लेख)/कात्यायनी 25.00
3. **इस रात्रि श्यामला बेला में** (लेख और टिप्पणियाँ)/सत्यव्रत 30.00

व्यंग्य

1. **कहें मनबहकी खरी-खरी**/मनबहकी लाल 25.00

नौजवानों के लिए विशेष

1. **जय जीवन!** (लेख, भाषण और पत्र)/निकोलाई ओस्त्रोव्स्की 50.00

वैचारिकी

1. **माओवादी अर्थशास्त्र और समाजवाद का भविष्य**/रेमण्ड लोट्टा 25.00

साहित्य – विमर्श

1. **उपन्यास और जनसमुदाय**/रैल्फ़ फ़ॉक्स 75.00
2. **लेखनकला और रचनाकौशल**/गोर्की, फ़ेदिन, मयाकोव्स्की, अ. तोल्सतोय ...
3. **दर्शन, साहित्य और आलोचना**/बेलिंस्की, हर्ज़न, चेर्नीशेव्स्की, दोब्रोल्युबोव 65.00
4. **सृजन-प्रक्रिया और शिल्प के बारे में**/मक्सिम गोर्की 40.00
5. **मार्क्सवाद और भाषाविज्ञान की समस्याएँ**/स्तालिन 20.00

नयी पीढ़ी के निर्माण के लिए

1. **एक पुस्तक माता-पिता के लिए**/अन्तोन मकारेंको ...
2. **मेरा हृदय बच्चों के लिए**/वसीली सुख़ोम्लीन्स्की ...

सृजन परिप्रेक्ष्य पुस्तिका शृंखला

1. **एक नये सर्वहारा पुनर्जागरण और प्रबोधन के वैचारिक-सांस्कृतिक कार्यभार**
   कात्यायनी, सत्यम 25.00

आह्वान पुस्तिका शृंखला

1. **प्रेम, परम्परा और विद्रोह**/कात्यायनी 50.00

——::——

राहुल फाउण्डेशन

नौजवानों के लिए विशेष

1. **नौजवानों से दो बातें**/ पीटर क्रोपोटकिन 15.00
2. **क्रान्तिकारी कार्यक्रम का मसविदा**/ भगतसिंह 15.00
3. **मैं नास्तिक क्यों हूँ और 'ड्रीमलैण्ड' की भूमिका**/भगतसिंह 15.00
4. **बम का दर्शन और अदालत में बयान**/भगतसिंह 15.00
5. **जाति-धर्म के झगड़े छोड़ो, सही लड़ाई से नाता जोड़ो**/भगतसिंह 15.00
6. **भगतसिंह ने कहा...**(चुने हुए उद्धरण)/भगतसिंह 15.00

क्रान्तिकारियों के दस्तावेज़

1. **भगतसिंह और उनके साथियों के सम्पूर्ण उपलब्ध दस्तावेज़** स. सत्यम 350.00
2. **शहीदेआज़म की जेल नोटबुक** भगतसिंह 100.00
3. **विचारों की सान पर**/भगतसिंह 50.00

क्रान्तिकारियों के विचारों और जीवन पर

1. **बहरों को सुनाने के लिए** एस. इरफ़ान हबीब 160.00 (भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और कार्यक्रम)
2. **क्रान्तिकारी आन्दोलन का वैचारिक विकास**/शिव वर्मा 25.00
3. **भगतसिंह और उनके साथियों की विचारधारा और राजनीति**/बिपन चन्द्र 25.00
4. **यश की धरोहर**/भगवानदास माहौर, शिव वर्मा, सदाशिवराव मलकापुरकर 50.00
5. **संस्मृतियाँ**/शिव वर्मा 100.00
6. **शहीद सुखदेव : नौघरा से फाँसी तक**/ स. डॉ. हरदीप सिंह 40.00

महत्त्वपूर्ण और विचारोत्तेजक संकलन

1. **उम्मीद एक ज़िन्दा शब्द है** ('दायित्वबोध' के महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय लेखों का संकलन) 75.00
2. **एनजीओ : एक ख़तरनाक साम्राज्यवादी कुचक्र** 80.00
3. **डब्ल्यूएसएफ़ : साम्राज्यवाद का नया ट्रोजन हॉर्स** 50.00

ज्वलन्त प्रश्न

1. **'जाति' प्रश्न के समाधान के लिए बुद्ध काफ़ी नहीं, अम्बेडकर भी काफ़ी नहीं, मार्क्स ज़रूरी हैं** / रंगनायकम्मा ...
2. **जाति और वर्ग : एक मार्क्सवादी दृष्टिकोण** / रंगनायकम्मा 100.00

दायित्वबोध पुस्तिका शृंखला

1. **अनश्वर हैं सर्वहारा संघर्षों की अग्निशिखाएँ**/दीपायन बोस 30.00
2. **समाजवाद की समस्याएँ, पूँजीवादी पुनर्स्थापना और महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति**/शशिप्रकाश 30.00
3. **क्यों माओवाद?**/शशिप्रकाश 20.00
4. **बुर्जुआ वर्ग के ऊपर सर्वतोमुखी अधिनायकत्व लागू करने के बारे में**/चाङ चुन-चियाओ 5.00
5. **भारतीय कृषि में पूँजीवादी विकास**/सुखविन्दर 35.00

आह्वान पुस्तिका शृंखला

1. **छात्र-नौजवान नयी शुरुआत कहाँ से करें?** 20.00
2. **आरक्षण : पक्ष, विपक्ष और तीसरा पक्ष** 20.00
3. **आतंकवाद के बारे में : विभ्रम और यथार्थ** 20.00
4. **क्रान्तिकारी छात्र-युवा आन्दोलन** 25.00
5. **भ्रष्टाचार और उसके समाधान का सवाल सोचने के लिए कुछ मुद्दे** 50.00
6. **मार्क्सवाद-लेनिनवाद और राष्ट्रीय प्रश्न** (एक बहस)/शिवानी, अभिनव 150.00

बिगुल पुस्तिका शृंखला

1. **कम्युनिस्ट पार्टी का संगठन और उसका ढाँचा**/लेनिन 20.00
2. **मकड़ा और मक्खी**/विल्हेल्म लीब्नेख़्त 5.00
3. **ट्रेडयूनियन काम के जनवादी तरीक़े**/सेर्गेई रोस्तोवस्की ...
4. **मई दिवस का इतिहास**/अलेक्ज़ैण्डर ट्रैक्टनबर्ग 10.00
5. **पेरिस कम्यून की अमर कहानी** 20.00
6. **अक्टूबर क्रान्ति की मशाल** 15.00
7. **जंगलनामा : एक राजनीतिक समीक्षा**/डॉ. दर्शन खेड़ी 10.00
8. **लाभकारी मूल्य, लागत मूल्य, मध्यम किसान और छोटे पैमाने के माल उत्पादन के बारे में मार्क्सवादी दृष्टिकोण : एक बहस** ...
9. **संशोधनवाद के बारे में** 10.00
10. **शिकागो के शहीद मज़दूर नेताओं की कहानी**/हावर्ड फ़ास्ट 20.00
11. **मज़दूर आन्दोलन में नयी शुरुआत के लिए** 20.00
12. **मज़दूर नायक, क्रान्तिकारी योद्धा** 15.00
13. **चोर, भ्रष्ट और विलासी नेताशाही** ...
14. **बोलते आँकड़े, चीख़ती सच्चाइयाँ** ...
15. **राजधानी के मेहनतकश : एक अध्ययन**/अभिनव 30.00
16. **फ़ासीवाद क्या है और इससे कैसे लड़ें?**/अभिनव 120.00
17. **नेपाली क्रान्ति : इतिहास, वर्तमान परिस्थिति और आगे के रास्ते से जुड़ी कुछ बातें, कुछ विचार**/आलोक रंजन 55.00
18. **कैसा है यह लोकतंत्र और यह संविधान किनकी सेवा करता है** आलोक रंजन/आनन्द सिंह 150.00
19. **तीन कृषि विधेयक और मज़दूर वर्ग का नज़रिया**/अभिनव 40.00

मज़दूरों का इन्क़लाबी मासिक अख़बार

एक प्रति : 5 रुपये

(डाक व्यय सहित)

सम्पादकीय कार्यालय

69 ए-1, बाबा का पुरवा, पेपर मिल रोड
निशातगंज, लखनऊ-226006
फ़ोन : 0522-4108495
ईमेल : bigulakhbar@gmail.com

मार्क्सवाद

1. **धर्म के बारे में**/मार्क्स, एंगेल्स ...
2. **कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र** मार्क्स-एंगेल्स 50.00
3. **साहित्य और कला**/मार्क्स-एंगेल्स 150.00
4. **फ़्रांस में वर्ग-संघर्ष**/कार्ल मार्क्स 40.00
5. **फ़्रांस में गृहयुद्ध**/कार्ल मार्क्स 20.00
6. **लूई बोनापार्त की अठारहवीं ब्रूमेर**/कार्ल मार्क्स 35.00
7. **उज़रती श्रम और पूँजी**/कार्ल मार्क्स 15.00
8. **मज़दूरी, दाम और मुनाफ़ा**/ कार्ल मार्क्स 20.00
9. **गोथा कार्यक्रम की आलोचना**/ कार्ल मार्क्स 40.00
10. **लुडविग फ़ायरबाख़ और क्लासिकीय जर्मन दर्शन का अन्त**/ फ़्रेडरिक एंगेल्स 20.00
11. **जर्मनी में क्रान्ति तथा प्रतिक्रान्ति**/ फ़्रेडरिक एंगेल्स 30.00
12. **समाजवाद : काल्पनिक तथा वैज्ञानिक**/फ़्रेडरिक एंगेल्स ...
13. **पार्टी कार्य के बारे में**/लेनिन 15.00
14. **एक क़दम आगे, दो क़दम पीछे**/लेनिन ...
15. **जनवादी क्रान्ति में सामाजिक-जनवाद के दो रणकौशल**/लेनिन 25.00
16. **समाजवाद और युद्ध**/लेनिन 20.00
17. **साम्राज्यवाद : पूँजीवाद की चरम अवस्था**/लेनिन 30.00
18. **राज्य और क्रान्ति**/लेनिन ...
19. **सर्वहारा क्रान्ति और ग़द्दार काउत्स्की**/लेनिन ...
20. **दूसरे इण्टरनेशनल का पतन**/लेनिन 15.00
21. **गाँव के ग़रीबों से**/लेनिन 50.00
22. **मार्क्सवाद का विकृत रूप तथा साम्राज्यवादी अर्थवाद**/लेनिन 20.00
23. **कार्ल मार्क्स और उनकी शिक्षा**/लेनिन ...
24. **क्या करें?**/लेनिन ...
25. **"वामपन्थी" कम्युनिज़्म - एक बचकाना मर्ज़**/लेनिन ...
26. **पार्टी साहित्य और पार्टी संगठन**/लेनिन 15.00
27. **जनता के बीच पार्टी का काम**/लेनिन 70.00
28. **धर्म के बारे में**/लेनिन ...
29. **तोल्स्तोय के बारे में**/लेनिन 10.00
30. **मार्क्सवाद की मूल समस्याएँ** जी. प्लेख़ानोव 30.00
31. **जुझारू भौतिकवाद**/प्लेख़ानोव 35.00
32. **लेनिनवाद के मूल सिद्धान्त**/स्तालिन 50.00
33. **सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (बोल्शेविक) का इतिहास** 90.00

34. **माओ त्से-तुङ की रचनाएँ : प्रतिनिधि चयन** (एक खण्ड में) ...

35. **कम्युनिस्ट जीवनशैली और कार्यशैली के बारे में**/माओ त्से-तुङ ...

36. **सोवियत अर्थशास्त्र की आलोचना**/ माओ त्से-तुङ ...

37. **दर्शन विषयक पाँच निबन्ध**/ माओ त्से-तुङ 70.00

38. **कला-साहित्य विषयक एक भाषण और पाँच दस्तावेज़**/माओ त्से-तुङ 15.00

39. **माओ त्से-तुङ की रचनाओं के उद्धरण** 50.00

अन्य मार्क्सवादी साहित्य

नयी

1. **दर्शन कोई रहस्य नहीं** 50.00
(जब किसानों ने अपने अध्ययन को व्यवहार में उतारा)

2. **राजनीतिक अर्थशास्त्र, मार्क्सवादी अध्ययन पाठ्यक्रम** 300.00

3. **खुश्चेव झूठा था**/ग्रोवर फ़र 300.00

4. **राजनीतिक अर्थशास्त्र के मूलभूत सिद्धान्त** (दो खण्डों में) (दि शंघाई टेक्स्टबुक ऑफ़ पोलिटिकल इकोनॉमी) 160.00

5. **पेरिस कम्यून की शिक्षाएँ** (सचित्र) एलेक्ज़ेण्डर ट्रैक्टनबर्ग 10.00

6. **कम्युनिस्ट पार्टी का घोषणापत्र**/ डी. रियाज़ानोव ...
(विस्तृत व्याख्यात्मक टिप्पणियों सहित)

7. **द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद**/ डेविड गेस्ट ...

8. **इतिहास ने जब करवट बदली**/ विलियम हिण्टन 25.00

9. **द्वन्द्वात्मक भौतिकवाद**/ वी. अदोरात्स्की 50.00

10. **अक्टूबर क्रान्ति और लेनिन** अल्बर्ट रीस विलियम्स 90.00
(महत्त्वपूर्ण नयी सामग्री और अनेक नये दुर्लभ चित्रों से सज्जित परिवर्द्धित संस्करण)

11. **सोवियत संघ में पूँजीवाद की पुनर्स्थापना**/मार्टिन निकोलस 50.00

राहुल साहित्य

1. **तुम्हारी क्षय**/राहुल सांकृत्यायन 40.00

2. **दिमाग़ी ग़ुलामी**/राहुल सांकृत्यायन 40.00

3. **वैज्ञानिक भौतिकवाद**/ राहुल सांकृत्यायन 65.00

4. **राहुल निबन्धावली**/ राहुल सांकृत्यायन 50.00

5. **स्तालिन : एक जीवनी**/ राहुल सांकृत्यायन 150.00

परम्परा का स्मरण

1. **चुनी हुई रचनाएँ**/ गणेशशंकर विद्यार्थी 100.00
2. **सलाखों के पीछे से**/ गणेशशंकर विद्यार्थी ...
3. **ईश्वर का बहिष्कार**/ राधामोहन गोकुलजी 40.00
4. **लौकिक मार्ग**/राधामोहन गोकुलजी 20.00
5. **धर्म का ढकोसला**/ राधामोहन गोकुलजी 40.00
6. **स्त्रियों की स्वाधीनता** राधामोहन गोकुलजी 30.00

जीवनी और संस्मरण

1. **कार्ल मार्क्स : जीवन और शिक्षाएँ**/ ज़ेल्डा कोट्स 25.00
2. **फ़्रेडरिक एंगेल्स : जीवन और शिक्षाएँ**/ज़ेल्डा कोट्स 80.00
3. **कार्ल मार्क्स : संस्मरण और लेख** 35.00
4. **अदम्य बोल्शेविक नताशा** (एक स्त्री मज़दूर संगठनकर्ता की संक्षिप्त जीवनी)/ एल. काताशेवा 30.00
5. **लेनिन कथा**/मरीया प्रिलेज़ायेवा 70.00
6. **लेनिन विषयक कहानियाँ** 75.00
7. **लेनिन के जीवन के चन्द पन्ने**/ लीदिया फ़ोतियेवा ...
8. **स्तालिन : एक जीवनी**/ राहुल सांकृत्यायन 150.00

विविध

1. **फाँसी के तख़्ते से**/जूलियस फ़्यूचिक ...
2. **पाप और विज्ञान**/डायसन कार्टर 100.00
3. **सापेक्षिकता सिद्धान्त क्या है?**/लेव लन्दाऊ, यूरी रूमेर ...

——::——

Rahul Foundation

MARXIST CLASSICS

KARL MARX

1. **A Contribution to the Critique of Political Economy** …
2. **The Civil War in France** …
3. **The Eighteenth Brumaire of Louis Bonaparte** 80.00
4. **Critique of the Gotha Programme** 50.00
5. **Preface and Introduction to A Contribution to the Critique of Political Economy** 25.00
6. **The Poverty of Philosophy** 80.00
7. **Wages, Price and Profit** 50.00
8. **Class Struggles in France** 50.00

FREDERICK ENGELS

9. **The Peasant War in Germany** 70.00
10. **Ludwig Feuerbach and the End of Classical German Philosophy** 65.00
11. **On Capital** 80.00
12. **The Origin of the Family, Private Property and the State** 100.00
13. **Socialism: Utopian and Scientific** 60.00
14. **On Marx** 30.00
15. **Principles of Communism** 5.00

MARX and ENGELS

16. **Historical Writings** (Set of 2 Vols.) 700.00
17. **Manifesto of the Communist Party** 50.00
18. **Selected Letters** 75.00

V. I. LENIN

19. **Theory of Agrarian Question** 160.00
20. **The Collapse of the Second International** 25.00
21. **Imperialism, the Highest Stage of Capitalism** 80.00
22. **Materialism and Empirio-Criticism** 150.00
23. **Two Tactics of Social-Democracy in the Democratic Revolution** 55.00
24. **Capitalism and Agriculture** 50.00
25. **A Characterisation of Economic Romanticism** …
26. **On Marx and Engels** 35.00
27. **"Left-Wing" Communism, An Infantile Disorder** 75.00
28. **Party Work in the Masses** 55.00
29. **The Proletarian Revolution and the Renegade Kautsky** 75.00

30. **One Step Forward, Two Steps Back** …
31. **The State and Revolution** 80.00

MARX, ENGELS and LENIN

32. **On the Dictatorship of Proletariat,** ***Questions and Answers*** 50.00
33. **On the Dictatorship of the Proletariat:** ***Selected Expositions*** 10.00

PLEKHANOV

34. **Fundamental Problems of Marxism** …

J. STALIN

35. **Marxism and Problems of Linguistics** 25.00
36. **Anarchism or Socialism?** 60.00
37. **Economic Problems of Socialism in the USSR** …
38. **On Organisation** 15.00
39. **The Foundations of Leninism** 70.00
40. **The Essential Stalin** … *Major Theoretical Writings 1905–52* (Edited and with an Introduction by Bruce Franklin)

LENIN and STALIN

41. **On the Party** 30.00

MAO TSE-TUNG

42. **Five Essays on Philosophy** 80.00
43. **A Critique of Soviet Economics** 70.00
44. **On Literature and Art** 80.00
45. **Selected Readings from the Works of Mao Tse-tung** …
46. **Quotations from the Writings of Mao Tse-tung** …

OTHER MARXISM

1. **Political Economy,** ***Marxist Study Courses*** (Prepared by the British Communist Party in the 1930s) 375.00
2. **Fundamentals of Political Economy** (The Shanghai Textbook) 150.00
3. **Reader in Marxist Philosophy**/ *Howard Selsam & Harry Martel* …
4. **Socialism and Ethics**/ *Howard Selsam* …
5. **What Is Philosophy?** (A Marxist Introduction)/*Howard Selsam* 100.00
6. **Reader's Guide to Marxist Classics**/*Maurice Cornforth* 70.00

George Thomson

7. **From Marx to Mao Tse-tung** 120.00
8. **Capitalism and After** 100.00
9. **The Human Essence** 80.00
10. **Mao Tse-tung's Immortal Contributions**/*Bob Avakian* …
11. **A Basic Understanding of the Communist Party** (Written during the GPCR in China) 150.00

12. **The Lessons of the Paris Commune**/*Alexander Trachtenberg (Illustrated)* 15.00

13. **Subversive Interventions** (An Anthology) *Abhinav Sinha* 500.00

BIOGRAPHIES & REMINISCENCES

1. **Reminiscences of Marx and Engels** (Collection) …
2. **Karl Marx And Frederick Engels:** An Introduction to their Lives and Work/David Riazanov 150.00
3. **Joseph Stalin: A Political Biography** *by The Marx-Engels-Lenin Institute* 80.00

PROBLEMS OF SOCIALISM

1. **How Capitalism was Restored in the Soviet Union, And What This Means for the World Struggle Red Papers 7** 175.00
2. **Preface of Class Struggles in the USSR**/*Charles Bettelheim* 30.00
3. **Nepalese Revolution: History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** Alok Ranjan 75.00
4. **Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** *Shashi Prakash* 40.00

ON THE CULTURAL REVOLUTION

1. **Hundred Day War:** The Cultural Revolution At Tsinghua University *William Hinton* …
2. **The Cultural Revolution at Peking University**/*Victor Nee* with *Don Layman* 30.00
3. **Mao Tse-tung's Last Great Battle** *Raymond Lotta* 25.00
4. **Turning Point in China** *William Hinton* 50.00
5. **Cultural Revolution and Industrial Organization in China** *Charles Bettelheim* 55.00
6. **They Made Revolution Within the Revolution** / *Iris Hunter* 50.00

ON SOCIALIST CONSTRUCTION

1. **Away With All Pests:** An English Surgeon in People's China: 1954–1969 *Joshua S. Horn* 125.00
2. **Serve The People:** Observations on Medicine in the People's Republic of China / *Victor W. Sidel* and *Ruth Sidel* …
3. **Philosophy is No Mystery** (Peasants Put Their Study to Work) …

ON THE CASTE QUESTION

1. **On the Caste Question: Towards a Marxist Understanding** *Abhinav Sinha* 200.00
2. **Caste and Class: A Marxist Viewpoint /** Ranganayakamma 60.00

DAYITVABODH REPRINT SERIES

1. **Immortal are the Flames of Proletarian Struggles /** *Deepayan Bose* 30.00
2. **Problems of Socialism, Capitalist Restoration and the Great Proletarian Cultural Revolution** / *Shashi Prakash* 40.00
3. **Why Maoism? /** *Shashi Prakash* 25.00

AHWAN REPRINT SERIES

1. **Where Should Students and Youth Make a New Beginning?** 20.00
2. **Reservation: Support, Opposition and Our Position** 20.00
3. **On Terrorism : Illusion and Reality /** *Alok Ranjan* 20.00

"The books that help you most are those which make you think the most. The hardest way of learning is that of easy reading; but a great book that comes from a great thinker is a ship of thought, deep freighted with truth and beauty."

– Pablo Neruda

BIGUL REPRINT SERIES

1.	**Still Ablaze is the Torch of October Revolution**	30.00
2.	**Nepalese Revolution History, Present Situation and Some Points, Some Thoughts on the Road Ahead** / Alok Ranjan	75.00

WOMEN QUESTION

1.	**The Emancipation of Women** / *V. I. Lenin*	100.00
2.	**Breaking All Tradition's Chains: Revolutionary Communism and Women's Liberation** / *Mary Lou Greenberg*	50.00

MISCELLANEOUS

1.	**Probabilities of the Quantum World** / *Daniel Danin*	…
2.	**An Appeal to the Young** / *Peter Kropotkin*	20.00

The Anvil

A Journal of Marxist Theory

Editor: Shashi Prakash

Editorial Office

69 A-1, Baba ka Purwa
Paper Mill Road, Nishatgunj, Lucknow 226 006, India
Phone: 9560130890, Email: editor.anvil@gmail.com

Website: http://anvilmag.in

FB: facebook.com/anvilmag

अरविन्द स्मृति न्यास के प्रकाशन

1. **इक्कीसवीं सदी में भारत का मज़दूर आन्दोलन: निरन्तरता और परिवर्तन, दिशा और सम्भावनाएँ, समस्याएँ और चुनौतियाँ** (द्वितीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 40.00
2. **भारत में जनवादी अधिकार आन्दोलन: दिशा, समस्याएँ और चुनौतियाँ** (तृतीय अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 80.00
3. **जाति प्रश्न और मार्क्सवाद** (चतुर्थ अरविन्द स्मृति संगोष्ठी के आलेख) 150.00

PUBLICATIONS FROM ARVIND MEMORIAL TRUST

1. **Working Class Movement in the Twenty-First Century: Continuity and Change, Orientation and Possibilities, Problems and Challenges** (Papers presented in the Second Arvind Memorial Seminar) 40.00
2. **Democratic Rights Movement in India: Orientation, Problems and Challenges** (Papers presented in the Third Arvind Memorial Seminar) 80.00
3. **Caste Question and Marxism** (Papers presented in the Fourth Arvind Memorial Seminar) 200.00

जनचेतना इन पुस्तकों की भी मुख्य वितरक है

1. **बच्चों के लिए अर्थशास्त्र (मार्क्स की 'पूँजी' पर आधाारित पाठ)**/रंगनायकम्मा 120.00
2. **घरेलू काम और बाहरी काम**/रंगनायकम्मा 40.00
3. **For the Solution of the 'Caste' Question, Buddha is not enough, Ambedkar is not enough either, Marx is a must**/Ranganayakamma 100.00
4. **Economics for Children [Lessons based on Marx's 'Capital']**/Ranganayakamma 150.00
5. **Household Work and Outside Work** 60.00

अनुराग ट्रस्ट

1. **बच्चों के लेनिन** 35.00
2. **Stories About Lenin** 35.00
3. **सच से बड़ा सच**/रवीन्द्रनाथ ठाकुर 25.00
4. **औज़ारों की कहानियाँ** 20.00
5. **गुड़ की डली** /कात्यायनी 20.00
6. **फूल कुण्डलाकार क्यों होते हैं**/सनी 20.00
7. **धरती और आकाश**/अ. वोल्कोव ...
8. **कज़ाकी**/प्रेमचन्द 35.00
9. **नीला प्याला**/अरकादी गैदार 40.00
10. **गड़रिये की कहानियाँ**/ क़यूम तंगरीकुलीयेव 35.00
11. **चींटी और अन्तरिक्ष यात्री**/ अ. मित्यायेव 35.00
12. **अन्धविश्वासी शेकी टेल**/ सेर्गेई मिखाल्कोव 20.00
13. **चलता-फिरता हैट**/ एन. नोसोव, होल्कर पुक्क 20.00
14. **चालाक लोमड़ी** (लोककथा) 20.00
15. **दियांका-टॉमचिक** 20.00
16. **गधा और ऊदबिलाव**/मक्सिम गोर्की, सेर्गेई मिखाल्कोव 20.00
17. **गुफ़ा मानवों की कहानियाँ**/ मैरी मार्स 20.00
18. **हम सूरज को देख सकते हैं**/ मिकोला गिल, दायर स्लावकोविच 20.00
19. **मुसीबत का साथी**/सेर्गेई मिखाल्कोव 20.00
20. **नन्हे आर्थर का सूरज**/ हद्याक ग्युलनज़रयान, गेलीना लेबेदेवा 20.00
21. **आकाश में मौज-मस्ती**/ चिनुआ अचेबे 20.00
22. **ज़िन्दगी से प्यार** (दो रोमांचक कहानियाँ)/जैक लण्डन 40.00
23. **एक छोटे लड़के और एक छोटी लड़की की कहानी**/मक्सिम गोर्की 20.00
24. **बहादुर**/अमरकान्त 15.00
25. **बुन्नू की परीक्षा** (सचित्र रंगीन)/ शस्या हर्ष ...
26. **दान्को का जलता हुआ हृदय**/ मक्सिम गोर्की 10.00
27. **नन्हा राजकुमार**/ आतुआन द सैंतेक्यूपेरी 40.00
28. **दादा आर्खिप और ल्योंका**/ मक्सिम गोर्की 30.00
29. **सेमागा कैसे पकड़ा गया**/ मक्सिम गोर्की 15.00
30. **बाज़ का गीत**/मक्सिम गोर्की 15.00
31. **वांका**/अन्तोन चेख़व 15.00
32. **तोता**/रवीन्द्रनाथ टैगोर 15.00
33. **पोस्टमास्टर**/रवीन्द्रनाथ टैगोर ...
34. **काबुलीवाला**/रवीन्द्रनाथ टैगोर 20.00

35. **अपना-अपना भाग्य**/जैनेन्द्र 15.00
36. **दिमाग़ कैसे काम करता है**/किशोर 25.00
37. **रामलीला**/प्रेमचन्द 15.00
38. **दो बैलों की कथा**/प्रेमचन्द 25.00
39. **ईदगाह**/प्रेमचन्द ...
40. **लॉटरी**/प्रेमचन्द 20.00
41. **गुल्ली-डण्डा**/प्रेमचन्द ...
42. **बड़े भाई साहब**/प्रेमचन्द 20.00
43. **मोटेराम शास्त्री**/प्रेमचन्द ...
44. **हार की जीत**/सुदर्शन ...
45. **इवान**/व्लादीमिर बोगोमोलोव 40.00
46. **चमकता लाल सितारा**/ली शिन-थ्येन 55.00
47. **उल्टा दरख़्त**/कृशनचन्दर 35.00
48. **हरामी**/मिखाईल शोलोख़ोव 25.00
49. **दोन किहोते** /सर्वान्तेस (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी) ...
50. **आश्चर्यलोक में एलिस** /लुइस कैरोल (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी 30.00
51. **झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई**/वृन्दावनलाल वर्मा (नाट्य रूपान्तर - नीलेश रघुवंशी) 35.00
52. **नन्हे गुदड़ीलाल के साहसिक कारनामे**/सुन यओच्युन ...
53. **लाखी**/अन्तोन चेख़व 25.00
54. **बेझिन चरागाह**/इवान तुर्गनेव 12.00
55. **हिरनौटा**/द्मीत्री मामिन सिबिर्याक 25.00
56. **घर की ललक**/निकोलाई तेलेशोव 10.00
57. **बस एक याद**/लेओनीद अन्द्रेयेव 20.00
58. **मदारी**/अलेक्सान्द्र कुप्रिन 35.00
59. **पराये घोंसले में**/फ़्योदोर दोस्तोयेव्स्की 20.00
60. **कोहकाफ़ का बन्दी**/तोल्सतोय 30.00
61. **मनमानी के मज़े**/सेर्गेई मिखाल्कोव 30.00
62. **सदानन्द की छोटी दुनिया**/ सत्यजीत राय 15.00
63. **छत पर फँस गया बिल्ला**/ विताउते जिलिन्सकाइते 35.00
64. **गोलू के कारनामे**/रामबाबू 25.00
65. **दो साहसिक कहानियाँ**/ होल्गर पुक्क 15.00
66. **आम ज़िन्दगी की मज़ेदार कहानियाँ**/होल्गर पुक्क 20.00
67. **कंगूरे वाले मकान का रहस्यमय मामला**/होल्गर पुक्क 20.00
68. **रोज़मर्रे की कहानियाँ**/होल्गर पुक्क 20.00
69. **अजीबोग़रीब क़िस्से**/होल्गर पुक्क ...
70. **नये ज़माने की परीकथाएँ**/ होल्गर पुक्क 25.00
71. **किस्सा यह कि एक देहाती ने दो अफ़सरों का कैसे पेट भरा**/ मिखाइल सल्तिकोव-श्चेद्रिन 15.00
72. **पश्चदृष्टि-भविष्यदृष्टि** (लेख संकलन) / कमला पाण्डेय 30.00
73. **यादों के घेरे में अतीत** (संस्मरण) / कमला पाण्डेय 100.00
74. **हमारे आसपास का अँधेरा** (कहानियाँ) / कमला पाण्डेय 60.00
75. **कालमन्थन** (उपन्यास) / कमला पाण्डेय 60.00

दो महत्वपूर्ण पत्रिकाएँ

दिशा सन्धान

मार्क्सवादी सैद्धान्तिक शोध और विमर्श का मंच

सम्पादक: कात्यायनी / सत्यम

एक प्रति : 100 रुपये, आजीवन: 5000 रुपये

वार्षिक (4 अंक) : 400 रुपये (100 रु. रजि. बुकपोस्ट व्यय अतिरिक्त)

नान्दीपाठ

मीडिया, संस्कृति और समाज पर केन्द्रित

सम्पादक: कात्यायनी / सत्यम

एक प्रति : 40 रुपये आजीवन: 3000 रुपये

वार्षिक (4 अंक) : 160 रुपये (100 रु. रजि. बुक पोस्ट व्यय अतिरिक्त)

सम्पादकीय कार्यालय :

69 ए-1, बाबा का पुरवा, पेपर मिल रोड, निशातगंज, लखनऊ-226006

फ़ोन: 9936650658, 8853093555

वेबसाइट : http://dishasandhaan.in ईमेल: dishasandhaan@gmail.com

वेबसाइट : http://naandipath.in ईमेल: naandipath@gmail.com

मुक्तिकामी छात्रों-युवाओं का

आह्वान

सम्पादकीय कार्यालय

बी-100, मुकुन्द विहार, करावल नगर, दिल्ली-110094

ईमेल : ahwan@ahwanmag.com, ahwan.editor@gmail.com

वेबसाइट : ahwanmag.com

फ़ेसबुक : facebook.com/muktikamiahwan

एक प्रति : 20 रुपये • वार्षिक : 160 रुपये (डाकव्यय सहित)

हमारे पास आपको मिलेंगे

- विश्व क्लासिक्स
- स्तरीय प्रगतिशील साहित्य
- भगतसिंह और उनके साथियों का सम्पूर्ण उपलब्ध साहित्य
- मक्सिम गोर्की की पुस्तकों का सबसे बड़ा संग्रह
- भारतीय इतिहास के अत्यन्त महत्त्वपूर्ण क्रान्तिकारी दस्तावेज़
- मार्क्सवादी साहित्य
- जीवन और समाज की समझ तथा विचारोत्तेजना देने वाला साहित्य
- दिमाग़ की खिड़कियाँ खोलने और कल्पना की उड़ानों को पंख देने वाला बाल-साहित्य
- प्रगतिशील क्रान्तिकारी पत्र-पत्रिकाएँ
- सुन्दर, सुरुचिपूर्ण, प्रेरक पोस्टर और कार्ड
- क्रान्तिकारी गीतों के कैसेट
- साहित्यिक व क्रान्तिकारी उद्धरणों-चित्रों वाली टीशर्ट, कैलेण्डर, बुकमार्क, डायरी आदि...

ऐसा साहित्य जो सपने देखने और भविष्य-निर्माण के लिए प्रेरित करता है!
(हिन्दी, अंग्रेज़ी, पंजाबी और मराठी में)

किताबें नहीं,
हम आने वाले कल के सपने लेकर आये हैं
किताबें नहीं,
हम असली इन्सान की तरह
जीने का संकल्प लेकर आये हैं

परिकल्पना प्रकाशन, राहुल फाउण्डेशन, अनुराग ट्रस्ट, अरविन्द स्मृति न्यास और **ऐरण प्रकाशन** की पुस्तकों की 'जनचेतना' मुख्य वितरक है। ये प्रकाशन पाँच स्रोतों - सरकार, राजनीतिक पार्टियों, कॉरपोरेट घरानों, बहुराष्ट्रीय निगमों और देशी-विदेशी फ़ण्डिंग एजेंसियों से किसी भी प्रकार का अनुदान या वित्तीय सहायता लिये बिना जनता से जुटाये गये संसाधनों के आधार पर आज के दौर के लिए ज़रूरी व महत्त्वपूर्ण साहित्य बेहद सस्ती दरों पर उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध हैं।

हमसे पुस्तकें मँगाने के लिए इन बातों का ध्यान रखें

- प्रत्येक पत्र तथा आदेश-पत्र पर अपना पूरा नाम-पता (पिनकोड सहित) और फ़ोन नम्बर साफ़-साफ़ लिखें।
- मनीऑर्डर के पीछे सन्देश वाले स्थान पर अपना पूरा नाम-पता (पिनकोड सहित) साफ़-साफ़ ज़रूर लिखें।
- चेक/ड्राफ़्ट 'जनचेतना पुस्तक प्रतिष्ठान समिति' (JANCHETNA PUSTAK PRATISHTHAN SAMITI) के नाम से लखनऊ में देय भेजें। बैंक खाते की जानकारी :
  खाता सं. 0762002109003796
  पंजाब नेशनल बैंक, निशातगंज, लखनऊ
  IFSC: PUNB0076200
- पुस्तकों पर डाक-व्यय तथा रेल या ट्रांसपोर्ट का भाड़ा अलग से देय होगा।
- पुस्तक विक्रेताओं तथा वितरकों द्वारा पुस्तकें मँगाने की शर्तों के लिए हमसे पत्र, ईमेल अथवा फ़ोन से सम्पर्क करें।

जनचेतना पुस्तक प्रतिष्ठान समिति द्वारा संचालित